

# THE GLORY OF THE CROSS

By Rev S.M.Zwemer

## शाने सलीब

मुसन्निफ़

रेवरेंट-एस-एम-ज़्वेयमर



पंजाब रिलीजियस बुक सोसाइटी

अनारकली लाहौर

1951 ईस्वी



# Samuel Marinus Zwemer

April 12, 1867 – April 2, 1952

The Apostle to Islam

**THE  
GLORY OF THE CROSS**

(BY REV S.M. ZWEMER)

**शाने सलीब**

मुसन्निफ़

रेवरेंट-एस-एम-ज़्वेयमर

**पंजाब रिलीजियस बुक सोसाइटी**

अनारकली लाहौर

1951 ईस्वी

## फ़हरिस्त मज़ामीन

**बाब अव्वल** सबसे पहले मसीह मस्लूब हुआ

**बाब दोम** हमने दगाबाज़ी की घड़ी हुई कहानीयों की पैरवी नहीं की।

**बाब सोम** और उन्होंने उस की आँखें बंद कीं

**बाब चहारुम** उन्होंने येसु को बाँधा उन्होंने उस के मुँह पर थूका.....

**बाब पंजुम** उन्होंने.....उसके कपड़े कुरआ डाल कर बांट लिए.....

**बाब शुशम** ऐ मेरे खुदा ऐ मेरे खुदा तूने मुझे क्यों छोड़ दिया है?

**बाब हफ़तुम** देखो खुदा का बर्ता

**बाब हशतुम** उन्होंने.....जलाल के खुदावंद को सलीब दी

**बाब नहम** उसने अपने हाथ उन्हें दिखाए

**बाब दहम** उसके जी उठने की कुदरत

चूँकि खुदा एक है लिहाज़ा इंजील भी एक है। अगर खुदा ने वाकई मसीह के वसीला से कोई ऐसा काम किया है। जिस पर दुनिया की नजात मुनहसिर है और अगर उसने उसे ज़ाहिर भी कर दिया है तो फिर मसीहियों पर फ़र्ज़ है कि हर एक ऐसी शैय को दूर करें जो उसे बिगाड़ती। उस की तर्दीद करती और उस को नज़रअंदाज करती है। वो जो उस खुश-ख़बरी में बिगाड़ पैदा करता है खुदा और इन्सान का बदतरीन दुश्मन है । ग़लतियों 1:8 के सख्त व तुन्द अल्फ़ाज़ पर पौलुस की शुद खोई और उस की तंग-खयाली का नतीजा ना थे। बल्कि उनका सबब खुदा की वो ग़ैरत है जो मसीह के खून से नजात याफ़ताह रूह में नजातदिहंदा के लिए वैसी ही ग़ैरत की आग मुशतइल कर देती है। उस क्रिस्म की ग़ैर रवादारी दीन-ए-हक्का का एक ज़रूरी अंसर है और उन मआनी में ग़ैर रवादारी की फ़हम की मुसन्ना है।

# बाब अक्वल

## "सबसे पहले मसीह मस्लूब हुआ"

---

मुकद्दस पौलुस कुरन्थियो की कलीसिया के पहले खत में यूं रकम तराज़ है:-

**"मैंने सबसे पहले तुमको वही बात पहुंचा दी जो मुझे पहुंची थी कि मसीह किताब-ए-मुकद्दस के बमूजब हमारे गुनाहों के लिए मुआ।**

गौर व तवज्जोह से मुताला करने वाला करीने से मालूम करेगा (जैसे डाक्टर माफ़ट ने अपने तर्जुमें में बखूबी ज़ाहिर कर दिया है) ये हकीकत पौलुस रसूल के पैग़ाम का लब्बे-लुबाब उसकी तालीम का मर्कज़ और उस की खुशख़बरी का खास मौजू थी।

उस के तर्जुमा में **"खुशख़बरी"** का लफ़ज़ चार मर्तबा इस्तिमाल किया गया है ताकि उस बशारत के मआनी को रोशन करे। पौलुस रसूल फ़रमाता है कि उस ने ये खुशख़बरी फ़क़त क़दीमी कलीसिया के शुरका से ना सुनी थी। बल्कि उसका इल्हाम उस पर बराह-ए-रास्त हुआ। (ग़लतीर्यो 1: 15 ता 19)

पस कलीसिया और खुद मुकद्दस पौलुस का ये एतिक़ाद था कि मसीह का हमारे गुनाहों के लिए अपनी जान देना मसीही दीन की असल बुनियाद है। पौलुस रसूल ने मसीह की मौत के बाद सात साल के अरसा के अंदर ही अंदर उस हकीकत का एहसास क्या होगा। और उस की मुनादी की होगी। बल्कि बाअज़ बयानात के मुताबिक़ तो शायद उस से भी पेशतर।

जिस यूनानी लफ़ज़ का तर्जुमा **"सबसे पहले"** किया गया है उस का मतलब **"इब्तिदा में"** या तमाम सच्चाई का **"शुरू"** भी किया जा सकता है। यही अल्फ़ाज़ सीपटवाजनट में भी मुस्तअमल हैं। जहां याक़ूब ने दो लौंडियों और उन के बेटों को **"सबसे आगे"** रखा (पैदाइश 23:2) और

उस मुक़ाम पर भी जहां दाऊद ने उस शख्स के लिए भारी इनाम का वाअदा किया जो यबोसीयों को "सबसे पहले" मारे (2 सामुएल 5:8)

मुक़द्दस पौलुस के नज़दीक मसीह की सलीबी मौत सबसे अहम तरीन वाक़ेया उसके ईमान का सबसे अफ़ज़ल वगरानक़दर अकीदा और उसका बुनियादी उसूल है और सच्चाई की हैकल के महिराब का दर्मयानी पत्थर और कोने के सिरे का पत्थर है।

इस अम की तस्दीक़ इससे भी होती है कि कुतुब-ए-मुक़द्दसा पैग़ाम रसुल और जुमला कलीसियाओं में हर दो साक़रीमन्टों के अदा करने के क़वाइद व क़वानीन और पुराने और नए गीतों की किताब में इस हकीक़त को सबसे अफ़ज़ल व आला-तरीन जगह हासिल है।

इस हकीक़त के इस कदर सबूत मौजूद हैं कि हैरत होती है। सलीब मसीहीयत का फ़क़त आलमगीर निशान ही नहीं बल्कि लारेब और पुरुज़ोर कलाम है जो दोधारी तल्वार से ज़्यादा तेज़ है। क्योंकि फ़क़त सलीब यही है जो लोगों को गुनाह से काइल कर सकती है। सलीब के पास आकर हम मसीह के चेहरे के जल्वे में अपने पोशीदा गुनाहों को देख सकते हैं जिसकी आँख आग के शोला की मानिंद रोशन हैं।

ज़रा आप गौर तवज्जा से सुनिए कि बिशप लीनसी लाट एंड्र्यूज़ (Lancelot Andrews) अपनी शख्सि इबादत के वक़्त सलीब के पास आकर किस रिक्क़त और दिल सोज़ी के साथ अपने दिली जज़्बात का इज़हार करता है:-

"ऐ तू कि जिसने अपने जलाली सर को मेरी ख़ातिर ज़ख़मी किया जाना गवारा किया। जो गुनाह मेरे सिर के हवास के ज़रीया से सरज़द हुए हैं। उन्हें अपने उस मुबारक सर की ख़ातिर माफ़ फ़र्मा।"

"ऐ तू कि जिसने अपने पाक हाथों को मेरी ख़ातिर ज़ख़मी किया जाना क़बूल किया। जो गुनाह मेरे इन हाथों से नापाक अश्या को छूने से सरज़द हुए हैं उन्हें अपने पाक हाथों की ख़ातिर बख़्श दे।"

"ऐ तू कि जिसने अपने कीमती और मुक़द्दस पहलू में भाला खाना मेरी ख़ातिर मंज़ूर किया। मेरे तमाम गुनाह जो नफ़सानी ख़ाहिशात और ख़यालात के ज़रीया से सरज़द हुए हैं इसे अपने ज़ख़मी पहलू की ख़ातिर माफ़ फ़र्मा।"

"ऐ तू कि जिसने अपने मुबारक पांव का मेरी खातिर तोड़ा जाना गवारा किया जो गुनाह मेरे पांव के बंदी की जानिब तेज़ रफ्तारी से जाने के बाईस सरज़द हुए हैं उन्हें अपने इन पाक पांव की खातिर माफ़ फ़र्मा।"

"ऐ तू कि जिसने अपने तमाम बदन का मेरी खातिर घायल किया जाना क़बूल किया। जो गुनाह मेरे आज्ञा से सरज़द हुए हैं उन्हें अपने उस जिस्म अतहर की खातिर माफ़ फ़र्मा।"

"ऐ मेरे खुदा ! मेरी रूह निहायत ही ज़ख़मी और बे हाल है। तू मेरे ज़ख़मों की ज़्यादती और उन के तूल व अर्ज़ और उन की गहराई पर नज़र कर और अपने ज़ख़मों की खातिर मेरे ज़ख़मों का इंदिमाल कर।"

मसीह की सलीब खुदा का वो ज़बरदस्त नूर है जो खुदा की मुहब्बत और इन्सान के गुनाह को खुदा की कुदरत और इन्सान की आजिज़ी को खुदा की पाकीज़गी और इन्सान की नजासत को ज़ाहिर करता है।

जिस तरह अहद-ए-अतीक में मज़बह और कुर्बानी "सबसे पहले" हैं। इसी तरह सलीब और कफ़ारा अहद-ए-जदीद में "सबसे पहले" हैं। जिस तरह दायरा के हर एक नुक़ता से मर्कज़ की जानिब एक खत-ए-मुस्तक़ीम खींचा जा सकता है। बईना अहद-ए-अतीक व जदीद के अक्काइद व तालीम नजात और तमाम ऐसी अश्या जो उन से मुताल्लिक हैं मसलन एक नया दिल एक नई जमात और एक नया आस्मान के वसीअ दायरे से एक खत-ए-मुस्तक़ीम मर्कज़ की जानिब खींचा जा सकता है। यानी उस बर्रे की जानिब जो बनाए आलम से पहले ज़बह किया गया।

ज़रा ग़ौर कीजिए कि अहद-ए-जदीद में मसीह की सलीबी मौत के बयान को कैसी अहमीयत हासिल है। ये बयान तीन मुख़्तसर खुतूत के सिवा इंजील जलील की तमाम कतुब में मर्कूम है। यानी सिर्फ़ फ़लीमोन और यूहन्ना के दूसरे और तीसरे खुतूत में इसका ज़िक्र नहीं।

इजमाली अनाजील मसीह की तालीम और उस की ज़िंदगी के इस पहलू पर बमुकाबला दीगर पहलूओं के कहीं ज़्यादा ज़ोर देती हैं। मुक़द्दस मती (उन मुक़ामात के इलावा जहां मसीह की मौत की पेशीनगोई की गई है) उस अफ़सोसनाक और अंदोहनाक बयान को दो तुल तवील अबवाब में तहरीर करता है जिनकी आयात शुमार में एक सौ इक्तालीस 141 हैं।



मुकद्दस मरकुस इसको 119 आयात में बयान करता है। यानी 16 सोलह अबवाब की किताब में से दो बड़े अबवाब में।

मुकद्दस लूका ने भी मसीह की गिरफ्तारी और उसकी सलीबी मौत के बयान के लिए दो बड़े अबवाब वक्फ कर दिए हैं।

मुकद्दस यूहन्ना की किताब का नस्फ से ज़्यादा हिस्सा मसीह के दुख उठाने और सलीब पर खींचे जाने के हाल से पर है।

आमाल की किताब में मुनादी और बशारत का मर्कज़ मसीह की मौत और उसका ज़िंदा होना है "यही खुशखबरी" है उसने अपने दुख सहने के बाद अपने आपको ज़ाहिर किया (आमाल1:3)

पिन्तिकोस्त के दिन मुकद्दस पतरस के वाअज़ का लब्बे-लुबाब ये था कि :-

"जब वो खुदा के मुकर्ररा इंतज़ाम और इल्मे साबिक के मुवाफिक पकड़वाया गया तो तुमने बेशरा लोगों के हाथ से उसे सलीब दिलवाकर मार डाला।"

"खुदा ने उसी येसु को जिसे तुमने सलीब दी खुदावंद भी किया और मसीह भी" (आमाल 2:36)

फिर हैकल में भी पतरस वही पैगाम देता है। "तुमने दरख्वास्त की कि एक खूनी तुम्हारी खातिर छोड़ा जाये मगर ज़िंदगी के मालिक को क़त्ल किया।"

पतरस का दावा ये था कि "खुदा ने सब नबियों की ज़बानी पेशतर खबर दी थी कि उसका मसीह दुख उठाएगा" लेकिन "खुदा ने अपने खादिम को उठाकर पहले तुम्हारे पास भेजा। ताकि तुम में से हर एक को उस की बदियों से फेर कर बरकत दे" (आमाल 3:18, 26) दूसरे दिन फिर उसने उसी मज़मून पर वाअज़ किया यानी "येसु नासरी जिसे तुमने सलीब दी" (आमाल 4:10)

कलीसयाए साबिक की पहली रस्मी दुआ में "तेरे सादिक बंदे येसु" की मौत और उस के दुख उठाने का हवाला है (आमाल 4:27) ऐसे पैगाम का नतीजा ऐसे सरीह अल्फ़ाज़ में बयान किया जाता है जिनसे उस के मतलब और मआनी के मुताल्लिक कोई शक व शुब्हा बाक़ी नहीं रहता।

यानी "तुमने तमाम यरूशलेम में अपनी तालीम फैलादी और उस शख्स का खून हमारी गर्दन पर रखना चाहते हो" (आमाल 5:28) रसूलों ने इस के जवाब में यूं फ़रमाया "जिसे तुमने सलीब पर

लटका कर मार डाला था। उसी को ख़ुदा ने मालिक और मुनज्जी ठहरा कर अपने दहने हाथ से सर-बुलंद किया.....।"

इस्तफ़नस की तक़रीर का ख़ुलासा मसीह की सलीबी मौत का बयान था जिसका नतीजा उस की शहादत हुई (आमाल 7:51 ता 54) फिलिप्पुस ने अपनी ज़बान खोल कर हब्शी खोजा को यशायाह नबी के 53 बाब में से येसु की मौत की ख़ुशख़बरी दी (आमाल 8:35) कुर्लिनियुस को भी इसी का पैग़ाम पहुंचाया गया। "जिसे उन्होंने सलीब पर लटका कर मार डाला। उस को ख़ुदा ने तीसरे दिन जिलाया और ज़ाहिर भी कर दिया।" (आमाल 10:40) मुक़द्दस पौलुस ने आन्ताकिया में वाअज़ करते हुए ख़ुदावंद मसीह की ख़बर मुंदरजा जेल अल्फ़ाज़ में दी :-

"उन्होंने पिलातुस से उस के क़त्ल की दरख़्वास्त की और जो कुछ उस के हक़ में लिखा था जब उस को तमाम कर चुके तो उसे सलीब पर से उतार कर क़ब्र में रखा लेकिन ख़ुदा ने उसे मुर्दों में से जिलाया" (आमाल 13:28 ता 29)

थिस्सलुनी में पौलुस मुतवातिर तीन सबतों तक किताब-ए-मुक़द्दस के हवाले देकर उन के साथ बेहस करता रहा । और दलीलें पेश करता रहा कि "मसीह को दुख उठाना और मुर्दों में से जी उठना ज़रूर था" (आमाल 17:3)

अथने में पौलुस ने मसीह की मौत और उस के जी उठने की मुनादी की । (आमाल 17:31) करंथियुस में पौलुस ने ये इरादा कर लिया था कि उनके दरमियान येसु मसीह बल्कि मसीह मस्लूब के सिवा और कुछ ना जानूंगा"...वह "ख़ुशख़बरी" मेरे एतबार से मस्लूब हुई और और मैं दुनिया के एतबार से" मसीह वो "अज़ीज़" है जिसके ज़रीये से "हमको उसके ख़ून के वसीले से मख़लिसी यानी कुसूरों की माफ़ी...हासिल है।"

येह ज़मानों का भेद और ख़ुदा की चंद-दर-चन्द और गौना गौन हिक्मत है। जो रियासतों और हुकूमतों और इख़्तयारात पर कलीसिया के ज़रीया से ज़ाहिर हुई। पौलुस रसूल हमें रो-रो कर बताता है कि वो जो "मसीह की सलीब के दुश्मन हैं" वो अपनी शर्म की बातों पर फ़ख़र करते हैं और उनका अंजाम हलाकत है।

सब बातों में मसीह का अढ़वल दर्जा होना चाहिए। क्योंकि "वो अपने उस ख़ून के सबब से जो सलीब पर बहा।" हमारे गुनाहों की माफ़ी और हमारी नजात है। (कुलुस्सियों 1:18)

सलीब दुनिया और उस की तारीख का मर्कज़ है। वो वक़्त ज़रूर आएगा जब ख़ुदा उस के ख़ून के सबब से जो सलीब पर बहा सब चीज़ों का अपने साथ मेल करेगा ख़्वाह वो ज़मीन की हों ख़्वाह आस्मान की (कुलुस्सियों 1:2)

इब्रानियों के ख़ुतूत में मसीह (जो खुद काहिन, कुर्बानी और कुर्बानगाह है) की मौत का ऐसा वाज़िह और रोशन बयान पाया जाता है कि हवाले पेश करने की कोई ज़रूरत नहीं। वो एक ऐसा आला सरदार काहिन है जो ज़मानों के आखिर में "एक-बार ज़ाहिर हुआ ताकि अपने आपको कुर्बान करने से गुनाह को मिटा दे।"

मसीह का ख़ून अहद का ख़ून है। मसीह हमारे इमान का बानी और उस का कामिल करने वाला है। क्योंकि उस ने सलीब पर दुख उठाया। उस का छिड़काओ का ख़ून हाबिल के ख़ून की निस्बत ज़्यादा बेहतर बातें कहता है। वो एक अज़ली अहद का ख़ून है जो उस बुजुर्ग चरवाहे ने अपनी भेड़ों के लिए बहाया।

मुकद्दस पतरस के ख़ुतूत में उस की इब्तिदा तालीम की सदा गूँजती हुई सुनाई देती है और वो मसीह के दुख उठाने के हवालों से भरपूर है :-

**“वो आप हमारे गुनाहों को अपने बदन पर लिए हुए सलीब पर चढ़ गया...और उस के मार खाने से तुमने शिफ़ा पाई” (1पतरस 2:24)**

आखिर में जब हम मुकद्दस यूहन्ना के ख़ुतूत और मुकाशफ़ात तक पहुंचते हैं तो हमको मालूम होता है कि वहां भी सलीब को सबसे आला और अफ़ज़ल दर्जा हासिल है। उसके ज़रीये से मसीह येसु **“हमारे गुनाहों का कफ़़ारा है और ना सिर्फ़ हमारे गुनाहों का बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का भी”** उसने हमारे वास्ते अपनी जान दी और हम पर भी भाईयों के वास्ते जान देनी फ़र्ज़ है।” जिसने अपने ख़ून के वसीले से हम को गुनाहों से ख़लासी बख़्शी.....उसका जलाल और सल्तनत अबदालाबाद रहे।” देखो वो बादलों के साथ आने वाला है और हर एक आँख उसे देखेगी और जिन्होंने उसे छेदा था वो भी देखेंगे।

इन दोनों साकरीमन्टों में जो मशरिकी और मगरिबी हर दो कलीसियाओं में मक़बूल हैं इस अम्र के मुताल्लिक साफ़-ओ-सरीह इशारात मौजूद हैं कि मसीह की मौत हमारे गुनाहों के लिए लाज़िमी थी ये ना सिर्फ़ उन क़वानीन और उस तालीम से ज़ाहिर होता है जो इंजील शरीफ़ में उन

के मुताल्लिक दर्ज है बल्कि उन मुख्तलिफ आदाब नमाज़ से भी अयाँ है जो उन से इलाका रखते हैं यहां भी हम ये कह सकते हैं कि "सबसे पहले" वो मसीह की मौत और कफ़ारा की तालीम देते हैं।

बपतिस्मा और इस्तिबाग़ मसीही कलीसिया में शामिल होने की एक रस्म है। अहद-ए-जदीद में ग़ैर इस्तिबाग़ याफ़ताह मसीहीयों का ज़िक्र कहीं नहीं पाया जाता और उन अक्वलीन मसीहीयों को बखूबी मालूम था कि मुक़द्दस पौलुस की क्या मुराद थी। जब उसने फ़रमाया :-

**"जितनों ने.....बपतिस्मा लिया तो उस की मौत में शामिल होने का बपतिस्मा लिया ।**

वो उस से ख़ूब वाक़िफ़ थे कि गुनाहों की माफ़ी और इस्तिबाग़ और उस आब और ख़ून में बहुत करीबी मुनासबत और ताल्लुक़ था जो मसीह के ज़ख्मी पहलू से बहे थे।

दोनों साकरीमन्टों की मुराद ये थी कि इंजील का पैग़ाम सही अलामात व निशानात के ज़रीये से पहुंचाया जाये। जब तक वो कलीसिया में मौजूद रहेंगी तो बावजूद इन रसूम और तुहम्मात के जिनका इज़ाफ़ा उन पर किया गया है वो हमेशा मसीह की मौत की नजात बख़श तासीर उसकी तिब्बी रास्ती, उस की ज़रूरत और उस की मर्कज़ी खासीयत की शहादत देती रहेंगी।

इब्तिदाई कलीसिया के शुरुका "रोटी तोड़ने में मशगूल रहे क्योंकि उस के ज़रीये से वो मसीह की मौत और उस के ख़ून के सबब गुनाहों की माफ़ी का इज़हार करना चाहते थे। ये जिस्म और ख़ून की शराकत (1 कुरन्थियो 10:16) उस की रूह में शरीक होना (1 कुरन्थियो 12:13) गुनाहों की माफ़ी (मत्ती 26:28) कर्ज़ की दस्तावेज़ मिटा डालना (कुलुस्सियों 2:14) और दिलों को मुर्दा कामों से पाक करना है (इब्रानियों 9:14) उसी ने इब्तिदाई कलीसिया और उस के माबाद की कलीसियाओं के लिए रोटी तोड़ने को उन्नीस सदीयों तक इस क़दर गिरां बहा और अहम बना दिया।

जब हम रस्मियात से ग़ज़लियात की तरफ़ मुतवज्जा होते हैं तो वहां भी हम इस की तस्दीक़ पाते हैं। अगर हम इब्तिदाई लातीनी और यूनानी ग़ज़लों और अर्मनी और क़िबती कलीसियाओं बल्कि उस के इलावा इस्लाह दीन के ज़माना की कलीसियाओं के गीतों को देखें तो मालूम हो जाएगा कि वहां सलीब को सबसे अफ़ज़ल और आला दर्जा हासिल है।

और हमारे खुदावंद की मौत और रूहों को तहरीक देने वाली है। हम कलीसिया के गीतों में वो यगानगी पाते हैं और अल-हयात के उस उमुक का मुलाहिजा करते हैं जो बाज़-औक़ात हमें अक़ाइद में भी नज़र नहीं आता।

**"ज़बह किया हुआ बर्षा ही कुदरत और दौलत और हिकमत और ताक़त और इज़ज़त और तम्ज़ीद और हम्द के लायक़ है"**

बर्षा तख़्त के दरमियान है। हर एक मख़लूक हल्लेलुयाह के नारे बुलंद करने में मशगूल होती है। हर एक सर-ज़मीन और हर एक मुल्क के बच्चे मुख़्तलिफ़ ज़बानों में निहायत खुश अलहाफ़ी से इंजील की मर्कज़ी तालीम के गीत गाते हैं।"

**येसु मुझको करता प्यार  
वो गुनाह मिटाता है**

**मुझ पर हुआ जान-निसार  
बच्चों को बुलाता है**

कलीसिया के गीतों और गज़लों का ज़्यादातर हिस्सा मसीह की मौत के बयान से मुताल्लिक़ है या सलीब पर मसीह के कफ़ारा होने के ख़याल को ज़ाहिर करता है। कौन उस ख़ूबसूरत गीत के अल्फ़ाज़ को Haupt Voll Blut and Wunden भूल सकता है जो मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जुमा हो चुका है या कौन है जिसने जर्मन मसीहीयों को ये गीत एक मर्तबा गाते सुना हो और उस के सुरों की दिलसोज़ी और दिल गुदाज़ी को भूल जाये।

इसी मज़मून का एक और गीत Stabat Mater Doloros है जो लातीनी ज़बान में है। लेकिन वो फ़क़त लातीनी कलीसिया ही की मिल्कियत नहीं बल्कि तमाम ईमानदारों को मर्यम के हमराह मसीह की सलीब के पास आते हैं। इसी क्रिस्म के ये गीत हैं :-

**"मैं जैसा हूँ , ना उज़्र कर"**

**"सलीब पर जब मैं करूँ ध्यान"**

**"एक चशमा शाफ़ी जारी है" और "येसु तू है मेरी आस"**

वगैरा वगैरा सब के सब जिनसे करीबन तमाम मसीही जमात वाकिफ़ है। मसीह की मौत के बयान से मुताल्लिक हैं। इसी तरह के और गीत भी हैं मसलन :-

दाग़ दिल के धोए कौन लहू जो क्रूस से जारी" और  
"खाली हाथ में आता हूँ क्रूस पर तकिया करता हूँ  
नंगा हूँ फ़कीर बदहाल मुझ नाचार को कर निहाल  
दे तू मुझे साफ़ पोशाक कर तू मेरे दिल को पाक"

अगर येसु नासरी हमारे ईमान के मुताबिक़ इब्नुल्लाह और हमारा मुनज्जी होने के बरअक्स फ़क़त एक इन्सान ही होता तो भी उस की होलनाक मौत तारीख-ए-इन्सानी में एक सबसे अहम वाक़ेअ होती उस के मस्लूब होने और दुख उठाने के मुताल्लिक़ उस के हम-अस्रों के बयानात की कसरत। निज़ाम-ए- कुदरत में ख़ौफ़नाक और अजीब वाक़ियात का ज़हूर में आना। सलीब पर के हफ़्त कलिमात और देखने वालों और अज़िमना व अक़वामें आलम पर उस का हैरत-अंगेज़ असर ये सब के सब उस की आलमगीर एहमीयत का एक बय्यन और ज़बरदस्त सबूत हैं। चाहिए कि हम उस की एहमीयत को उस से जुदा ना करें।

मसीह की ज़िंदगी का सबसे आला और अफ़ज़ल वाक़ेअ हमारे गुनाहों के लिए उसका सलीब पर मारा जाना था। जमीस डैनी के मुंदरजा ज़ैल अल्फ़ाज़ उस की एहमीयत को यूं ज़ाहिर करते हैं :-

"अगर कफ़ारा का मतलब उस की मुख्तलिफ़ तारीफ़ों के इलावा इन्सान के नज़दीक़ कुछ भी मअनी रखता है तो फ़िल-हकीक़त वही सब कुछ है। वो तमाम हकीक़तों में सबसे आला और अफ़ज़ल है और तमाम बातों का मूजिद है। वो सबसे ज़्यादा हमारे ज़हन में खुदा का इन्सान का तारीख़ का हत्ता कि कुदरत का तसव्वुर पैदा करता है। वह उनका ताय्युन करता है क्योंकि हमें ऐसी तर्कीब और तर्तीब से उन की तख़सीस करनी है। कि इन में बाहमी मुताबिक़त और मुवाफ़िक़त पाई जाये। वह हमारे तमाम ख़्यालात को तहरीक़ देने वाला है और आख़िरकार मुसीबत और ग़म के वक़्त चारा-जुई करने में हमारी हिदायत व रहनुमाई करता है। कफ़ारा एक ऐसी हकीक़त है जिसमें बाहमी समझौता की मुतल्लिक़न गुंजाइश नहीं पस इन्सानी अक़ल ख़्वाह ज़माना साबिक़ की ख़्वाह दौर-ए-हाज़रा की हो हर दौर के लिए मसीहीयत की कशिश या उस की शिक़स्त दोनों इसी एक

नुक्ता पर मर्कूज हैं। मसीह की सलीब या तो इन्सान की अज़मत या आखिर-कार उस की गुमराही का बाईस ठहरती है।”

मसीही मज़हब फ़क़त एक दिमागी या अक्ली तसव्वुर ही नहीं बल्कि इन्सानी ज़िंदगी से मुताल्लिक है । **“और रास्तबाज़ ईमान से जीता रहेगा”** लेकिन ये खाली अज़ फ़ायदा ना होगा। कि इन वाबस्ता हालात का इज़हार किया जाये। याद रखना चाहिए कि मसीहीयत का आगाज़ किज़्ब-ओ-दरोग से नहीं हुआ। और हम पर वाजिब है कि इस अम्र को ज़ाहिर करें क्योंकि ऐसा करना हमारे लिए मुम्किन भी है ।

अपने आगाज़ के मुताल्लिक मसीहीयत का अपना बयान तारीखी मुताला के उसूल से परखा जा सकता है। और मज़ीद दर्याफ़्त के ज़रीये से इस बयान की सदाक़त साबित हो सकती है बल्कि हो चुकी है। लेकिन तो भी अभी बहुत कुछ करना बाक़ी है। अगर हम देखना चाहें तो सबूत मौजूद है। इक़तिबास अज़ **“जदीद दर्याफ़्त और अहदेजदीद का मोतबर किताब साबित होना”** मन तस्नीफ़ सर विलियम ऐम रामसे।

**(Sir William M. Ramsay in Recent Discovery and the Trustworthiness of the New Testament.)**

## बाब दोम

### "हमने दगा-बाज़ी की घड़ी हुई कहानीयों की

### पैरवी नहीं की"

वो जो खुदा के इन बयानात पर यकीन लाते हैं जो उस ने अपने बेटे के मुताल्लिक अनाजील में रूह की हिदायत से लिखवाए हैं। इन की सदाकत के मुताल्लिक अपने दिलों में किसी क्रिस्म के शक व शुबहा को जगह नहीं देते। इन के पास रूह की गवाही मौजूद है कि जो कुछ लिखा है वो वाकई सच्च है। वह मुकद्दस पतरस के साथ उस बात पर ईमान लाते हैं कि मसीह की मौत और उस के दुख उठाने के तमाम वाकियात और उस का जलाली तौर से ज़िंदा होना **"दगाबाज़ी की घड़ी हुई कहानियां नहीं हैं"**

पतरस मसीह की मुसीबत और उस के दुख उठाने का चशम-दीद गवाह था और मरकुस उस का शागिर्द था। मुकद्दस यूहन्ना ने उस का बयान किया जो उस ने खुद सुना। अपनी आँखों से देखा। बल्कि गौर से देखा और अपने हाथों से छुवा था। (1 यूहन्ना 1:1)

मुकद्दस मत्ती बारह शागिर्दों में से एक था। मुकद्दस लूका बताता है कि किस तरह उस ने अपने बयान के लिए निहायत एहतियात के साथ चशमदीद गवाहों की तलाश की ताकि **"हमें असल हकीकत मालूम हो जाएगी।"**

उस पुर-तज़बज़ब, शक व शुबहा और नुक्ता चीनी के ज़माने में ऐसे लोगों से वास्ता पड़ता है जो ना सिर्फ़ इन्जीली बयानात का बल्कि उन के मोतबर होने और उनकी सदाकत का भी इन्कार करते हैं। बाअज़ हमें अलैहिदह बताते हैं कि येसु मसीह महिज़ एक फ़र्ज़ी और ख्याली शख्सियत है और उसकी ज़िंदगी की दास्तान दरहकीकत "दगाबाज़ी की घड़ी हुई कहानियां हैं।" जिनकी इब्तिदा-ए-इब्तिदाई और वक्ती रूमी, यूनानी और मिस्री तुहमात से हुई थी।

कदीमी मुल्हिदीन ने अपने अकाइद की बिना पर मसीह की मौत का इन्कार किया है। कुरआन में बह मुफ़स्सील यह बयान पाया जाता है कि :-



मसीह ना तो क़त्ल किया गया और ना मस्लूब हुआ "अल्लाह ने उन पर (यानी अहले यहूद पर) उन की बेईमानी की मुहर लगा दी उस वजह से कि उन्होंने कहा था यक़ीनन हमने मसीह येसु इब्ने मर्यम और खुदा के रसूल को क़त्ल किया। लेकिन फ़िल-हक़ीक़त ना तो उन्होंने उसे क़त्ल किया और ना इसे सलीब दी। बल्कि उन की खातिर उस का हम-शक़ल भेजा गया था" (4:156)

रासिख-उल-एतकाद मुसलमान महिज़ उलमाए दीन और मुफ़स्सिरीन के इस बयान से मुताल्लिक़ तशरीहों और तफ़सीरों को अपनी बेएतिक़ादी की बिना करार देकर हमेशा मसीह की तसलीब की तर्दीद करते रहे हैं। इनके दरमियान उमूमन ये ख़्याल राइज है कि खुदा ने उसके सताने वालों पर जादू डाल कर मसीह को इस होलनाक मौत से बचा लिया और उसके इवज़ यहूदा इस्करियुती को ये सज़ा उठानी पड़ी।

इसके मुताल्लिक़ मुख्तलिफ़ तशरीहात मौजूद हैं। लेकिन इस अम्र पर सब मुसलमान मुतफ़िक़ हैं कि मसीह सलीब पर नहीं मारा गया। उसने हमारे गुनाहों की खातिर अपनी जान फ़िदया में नहीं दी। वो मुर्दों में से हरगिज़ जिंदा नहीं हुआ। और उसने इस जहान से दूसरे जहान की जानिब सलीब की राह से इंतिक़ाल ना किया।

स्टरास (Strauss) और दीगर अक्ल परस्तों के इस नज़रिया को कि ऐन मौत से पेशतर मसीह का जिस्म सलीब पर से उतार लिया गया था। और कि वो क़ब्र में मुख्तलिफ़ मसालों के ज़ेर-ए-असर जिंदा और ताज़ा-दम हो गया था। पंजाब के अहमदिया फ़िर्का ने फ़ौरन तस्लीम कर लिया और उस फ़िर्का के बानी मिर्जा गुलाम अहमद कादयानी ने भी नज़रिया मज़कूर को एक रुसी किस्सा नवीस नोनोविच (Nonovitch) की किताब "मसीह की नामालूम जिंदगी" से अख़ज़ किया। इस किताब के बयान के मुताबिक़ मसीह सफ़र करता हुआ हिन्दुस्तान में आया और यहां तालीम देता रहा। कुछ अरसा बाद मिर्जा गुलाम अहमद ने कश्मीर में मसीह की क़ब्र दर्याफ़्त की और अपने आपको मसीह-ए-सानी मशहूर किया।

इस जमात ने निहायत चालाकी और सरगर्मी से तमाम इस्लामी दुनिया को इस नए मुख्तलिफ़-ए-मसीह की तालीम से भर दिया है। मुल्क आयरलैंड का फ़सानानिगार जॉर्ज मोर (George Moore) तो अपनी किताब "दी ब्रूक केरीथ" (The Brook Kerith) में यहां तक कह जाता है कि मसीह फ़िल-हक़ीक़त सलीब पर नहीं मरा बल्कि बेहोश हो गया था और बादअज़ां वो होश में आकर और ताज़ा-दम हो कर अपनी सोशियल ख़िदमत को ज़्यादा वसीअ पैमाना पर अंजाम देता रहा।

पस मगरिब में इस नज़रिये के पेश करने वाले और मशरिक में आँहज़रत के सैंकड़ों मोअतकिद कि जिनके एतिक़ाद की बुनियाद ईलाही मुकाशफ़ा पर कायम है हमारे पैग़ाम की सबसे आला तरीं और अफ़ज़ल हकीकत का इन्कार करते हैं।

लिहाज़ा हम अपने इस ईमान और उम्मीद के मुताल्लिक जिसके हम काइल हैं क्या जवाब दे सकते हैं? क्योंकि हम उस के चशमदीद गवाह नहीं हैं। ज़बान अंग्रेज़ी में एक गीत है जिस के एक बंद का तर्जुमा कुछ यूँ किया जा सकता है:-

**"हमने गौगाइयों और वहशी लोगों के दरमियान तुझे सलीब पर चढ़ाए जाते हुए। बचशम खुद नहीं देखा। ना हमने वो तेरी हलीम और पुर-मिन्नत सदा अपने कानों से सुनी कि ऐ बाप ! उन्हें माफ़ कर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या करते हैं। ताहम इतना ज़रूर मानते हैं कि ये शर्मनाक फ़ैअल फ़िल-हकीकत ज़हूर में आया कि जिससे कुल ज़मीन मुतज़लज़ल हुई और सूरज पर पर्दा जुल्मत छा गया।"**

हम क्यों इस के मोतकिद हैं? ईमान सबूत पर मबनी होता है और यहां हैरत-अंगेज़ सबूत मौजूद हैं। अगर हम इस का बग़ैर मुताला करें तो इस से हमारा ईमान और भी ज़्यादा पुख़्ता और मज़बूत हो जाएगा।

सबसे पेशतर अगर हम ग़ौर करें तो ये मालूम हो जाएगा कि मसीह की मौत कोई ग़ैर मुतवक्क़े बात ना थी। बल्कि इस का ज़िक्र वाज़िह तौर पर यहूदी पेशीनगोइयों के ज़रीया से किया गया था। और **"एक ऐसे रास्तबाज़ आदमी"** की किस्मत का बयान अफ़लातून ने भी इशारतन किया था। यशायाह नबी के सहीफ़ा का **"यहोवाह का मुसीबतज़दा बंदा"** दाऊद का ज़बूर जिसमें मसीह की मौत का नक्शा खिचा है और दीगर मुक़ामात जहां मसीह की गिरफ़्तारी और उस की मौत के मुताल्लिक पेशीनगोई मर्कूम हैं। ये सब किताब मुक़द्दस के मुताअला करने वाले के लिए आम बातें हैं। इस आने वाले अहम वाक़ेअ की खबर मुद्दतदराज़ से दी जा रही थी।

यूहन्ना इस्तबागी फ़रमाता है **"देखो खुदा का बर्षा"** ये चंद अल्फ़ाज़ अहदेअतीक़ की तमाम तालीम का मजमूआ हैं। यानी बग़ैर खून बहाए गुनाह की माफ़ी नहीं हो सकती । पस ज़रूर था कि खुदा का बर्षा ज़बह किया जाये ताकि दुनिया के गुनाहों की माफ़ी हो। अगर हम इस हकीकत से इन्कार

करें कि "किताब मुक़द्दस के बमूजब मसीह हमारे गुनाहों के लिए मरा" तो अहदे अतीक एक मुअम्मा सा मालूम होगा जिसका हल मुम्किन नहीं।

बल्कि खून की कुर्बानियां जो हर एक ज़माना और क़ौम में इन्सान के गुनाह की माफ़ी के लिए लाज़िमी तसव्वुर की जाती हैं एक ऐसा राज़ बन जाती हैं जिसके मआनी और मकासिद इन्सानी अक्ल से बईद हो जाते हैं :-

**"वो हमारे गुनाहों के सबब घायल किया गया और हमारी ही बदकारियों के बाईस कुचला गया।  
हमारी ही सलामती के लिए उस पर सियासत हुई ताकि उस के मार खाने से हम चंगे हों"**

अल्फ़ाज़ माफ़ौक़ मसीह से 429 बरस पहले अफ़लातून के ज़माना से ज़रा पेशतर लिखे गए । अफ़लातून अपनी किताब पोलीशीह (Plitia) जिल्द चहारूम में एक ऐसे कुर्बान होने वाले नजातदिहंदा का ज़िक्र करता है जिसकी अज़हद ज़रूरत थी ताकि दुनिया की रास्तबाज़ी को अज़ सर नो बहाल करे।"

एक कामिल रास्तबाज़ बंदा जिसके साथ निहायत बे इंसाफ़ी का सुलूक रवा रखा जाये बल्कि जो कोड़े खाए सताया जाये बाँधा जाये जिसकी आँखों की बसारत भी जाती रही और उन तमाम मुसीबतों के बर्दाश्त करने के बाद सतून से बाँधा जाये वही इस दुनिया की असली और हकीक़ी रास्तबाज़ी को बहाल कर सकता है हमें उस से कुछ सरोकार नहीं कि अफ़लातून ने एक बेगुनाह शख्स का गुनाहगारों के लिए दुख उठाने और खुदा से फिर उनका मेल कराने का ख़याल कहाँ से लिया। हमारे मतलब के लिए यही काफ़ी है कि ये ख़याल मौजूद है। और करीब करीब इसी क़दर वाज़िह और रोशन है जिस तरह यशायाह नबी की किताब में ईलाही पैग़ाम ।

ये मुम्किन ही नहीं कि कोई "मर्दे ग़मनाक" और ज़लील व ख़वार हुए बग़ैर या मस्तूब हुए बग़ैर कामिल रास्तबाज़ी की ज़िंदगी बसर कर सके।

सलीबी मौत खुद खुदावंद मसीह के लिए भी कोई नागहानी और ग़ैर मुतवक्क़े आफ़त ना थी इस से उस की उम्मीदें शिकस्ता व मादोम ना हुई थीं। बल्कि बरअक्स इस के उसे ये ख़ूब मालूम था कि ये बात अटल है । उसने इस होलनाक वाक़ेअ का यकीनी तौर से वकूअ में आने का बारहा ज़िक्र किया था। अपनी ख़िदमत के आगाज़ ही में उस ने इस मुसीबत के अक्स को देख लिया था। अपने बपतिस्मा के वक़्त उसने जो गुनाह से बिल्कुल नावाक़िफ़ था अपने आपको गुनेहगारों के

साथ शुमार किया। अपनी खिदमत के आगाज़ ही में उस ने शागिर्दों की तारीफ़ करते हुए इस की मिसाल सलीब बर्दारी से दी थी।

अपनी मसीहाई का इकरार करने के बाद "येसु अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर करने लगा कि मुझे ज़रूर है कि यरूशलेम को जाऊं.....और क़त्ल किया जाऊं चुनांचे आपने फ़रमाया कि :-

**"इब्ने आदम आदमीयों के हाथ में हवाले किया जाएगा और वो उसे क़त्ल करेंगे और तीसरे दिन वो ज़िंदा हो जाएगा"**

इजमाली इंजील के बयान के मुताबिक़ हमारे खुदावंद कि ज़िंदगी के आखिरी अय्याम बिलखसूस अपने कम फ़हम शागिर्दों को अपनी होलनाक मौत की ख़बर देने और उन्हें उसका यक़ीन दिलाने में सफ़र हुए ।

मसीह के सलीब पर खींचे जाने का मुफ़स्सिल बयान जो अक्सर औकात चशमदीद गवाहों की शहादत पर मबनी है। ऐसा साफ़ और सरीह है कि इस में शक व शुबहा की हरगिज़ गुंजाइश नहीं रहती। उन्होंने उसकी शहादत ऐसे संजीदा और साफ़ अल्फ़ाज़ में दी है कि गोया उन्हें पहले ही से ये ख़याल मदद-ए-नज़र था कि इस हकीक़त के मुताल्लिक़ किसी क्रिस्म के शक की कोई गुंजाइश बाक़ी ना रहे "येसु बड़ी आवाज़ से चिल्लाया और दम दे दिया.....और जो सूबादार उस के सामने खड़ा था उसने उसे यूं दम देते हुए देखकर कहा ये आदमी बे-शक़ खुदा का बेटा था" (मरकुस 15:37)

मुक़द्दस यूहन्ना बयान करता है "उन में से एक सिपाही ने भाले से उस की पसली छेदी और फ़ील-फ़ौर उस से खून और पानी बह निकला" फिर आगे चल कर यूं फ़रमाता है :-

**जिसने ये देखा उसने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची है और वो जानता है कि सच्य कहता है ताकि तुम भी ईमान लाओ।"**

ये अल्फ़ाज़ किसी ऐसे शख्स के नहीं जो सादा-लौह और जूद एतिक़ाद हो या जिसने धोका खाया हो। उस सूबादार ने बाक़ायदा अपनी मंसबी हैसियत में पिलातुस को इस अम्र की ख़बर दी और उसे मसीह की मौत का यक़ीन दिलाया। (मरकुस 15:44)

अरमतीयह के यूसुफ ने मसीह की लाश को कब्र में दफन किया जहां मर्यम मगदलीनी और मसीह की वालिदा ने उसे कब्र में मुर्दा देखा।(मरकुस 15:47)

अहद-ए-जदीद के तमाम मुसन्निफ़ीन ने मसीह की मौत का असल वाक़ेअ सुपुर्द-ए-क़लम किया है। आमाल की किताब में किसी मुक़ाम पर भी कोई आवाज़ मसीह के मस्लूब होने का इन्कार करती हुई सुनाई नहीं देती । बहुत सी सदीयां बीत जाने के बाद हज़रत-ए-इन्सान को ये ज़सारात और दिलेरी होती है कि उस तारीखी वाक़ेअ के मुताल्लिक़ शक को जगह दे और अपनी दगाबाज़ी की घड़ी हुई कहानीयों को मुशतहिर करे।

क़दीम तहरीरात का ज़बरदस्त मुताअला करने वाला और नुक्ता संज जोज़फ़ कलासनर अपनी जदीद तस्नीफ़ "नासरत का येसु" में लिखता है कि इजमाली अनाजील मोतबर हैं और येसु उन के बयान के मुताबिक़ दुनिया में पैदा हुआ और मर गया चंद साल का अरसा गुज़रा कि सामुएल ई स्टोक्स (Samuel, E, Stokes) ने मसीही बयानात की सदाक़त का इज़हार करने के लिए यहूदी और बुतपरस्त मुसन्निफ़ीन की शहादतों को फ़राहम किया।

मुम्किन है कि बहुत से लोग इस इंजील की ताईद व तस्दीक़ के मुताल्लिक़ जिस पर वो शक करते हैं । प्लीनी Pliny, टेकीटस (Tacitus), लोशीयन (Lucian) , युसिफ़स (Jesephus) बल्कि सेल्सस (Celsus) की अरा को सुनना चाहें क्योंकि ये लोग मसीही जमात के दायरे से बाहर थे। टेकीटस रुम की आतिशज़दगी का ज़िक़र करते हुए बताता है कि किस तरह नीरू ने अपने ऊपर से शुबा मिटाने की कोशिश की और लिखता है कि :-

"पस इस ख़बर को फ़ुर्र करने के लिए नीरू ने अपने इवज़ उन लोगों को मुजरिम ठहराया जिनसे अवामुन्नास उन के पोशीदा जराइम के बाईस नफ़रत करते हैं। उन्हें मसीही कह कर पुकारते हैं मसीह जिसके नाम से वो नामज़द हैं कैसर तबरईयास के अहद में पनतुस पिलातुस हाकिम के हुक्म से मारा गया था। और वो मुज़िर तुहमात कुछ अरसा के लिए दब गए थे फिर कुछ अरसा के बाद वो अज़-सर-नूँ सिर्फ़ यहुदियाह में जहां उस बिद्दत का आगाज़ हुआ था बल्कि रुम में फूट निकले जहां हर किस्म के क़त्ल और नजिस बेशर्मियाँ और क़बायह बाहम मिलकर राइज हो जाते हैं पस सबसे पहले उन में से बाअज़ को गिरफ़्तार किया और उन से जबरन इक़्रार कराया फिर उन के इत्तिला देने पर एक अनबोह-ए-कसीर मुजरिम करार दिया गया। महिज़ इसलिए नहीं कि उन पर जुर्म-ए-आतशज़दगी साबित हुआ था बल्कि ज़्यादा-तर इस लिए कि वो इन्सानी नसल

से नफ़रत रखने जुर्म के मुर्तक़िब थे वो ना सिर्फ़ क़त्ल ही किए गए। बल्कि निहायत बेइज़्ज़ती के साथ मारे गए यानी उन में से बाअज़ को जंगली दरिंदों की पोस्तीनें पहनाई गईं और फाड़ डालने वाले कुत्तों से फड़वाए गए। या सलीब पर लटकाए गए और फिर उन को आग लगादी गई। अक्सर औकात गुरुब-ए-आफ़ताब के बाद उन के जिस्मों को जलाया गया ताकि रात के वक़्त रोशनी का काम दें (अनलिज़ 15:44) (Annales 15:44)

सामोसटा कालूशैन lucuan of Samosata जो 100 ई. में पैदा हुआ था। अपनी किताब "परीगरीयन्स की वफ़ात" (Death of Perigrinus) में यूँ कहता है :-

मसीही अब तक उस बुज़ुर्ग शख्स की परस्तिस करते हैं जो मुल्के फ़लस्तीन में मस्लूब किया गया था। इसलिए कि वही दुनिया में इस नए मज़हब का बानी था। इन कमबख़्तों को ये यक़ीन-ए-वासिक है कि वो ग़ैर-फ़ानी हैं और ताअबद ज़िंदा रहेंगे। चुनांचे इसी सबब से वो मौत की चंदाँ परवाह नहीं करते। बल्कि बहुत से उन में से खुशी के साथ अपने आपको मौत के हवाले कर देते हैं। इन के पहले शरीयत दहिंदा ने उन्हें यक़ीन दिलाया है कि जब वो एक मर्तबा यूनानी देवताओं का इन्कार कर देते हैं और अपने उस मस्लूब सोफ़सती पर ईमान ले आते हैं और उस के अहकाम वफ़र अमीन के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगीयां गुज़ारते हैं तो वो एक दूसरे के भाई बन जाते हैं ।

युसीफ़स की किताब एन्टीकोटीज़ (Antiquities.) के दो मशहूर मुक़ामात से सब वाक़िफ़ हैं और ग़ालिबन वो असली और सही हैं। बहर-ए-हाल युसीफ़स की तमाम तारीख़ इंजील की ताईद करती है। हेरोदेस आज़म, उस का बेटा आरकैलास, हेरोदेस अनतीपास, हेरोदियास और उस की बेटी सलोमी, यूहन्ना इस्तबागी, हन्ना काइफ़ा, पनतूस पिलातुस, फेलिक्स और उस की बीवी ड्रोसला जो यहूदन थी। हेरोदेस अगरपा, बरनीकी, फ़रीसी और सदुती येह तमाम युसीफ़स की तारीख़ में मज़कूर हैं। बल्कि उनका ज़िक़्र और उन का बाहमी ताल्लुक़ भी बईना वही है जो अहद-ए-जदीद में मर्कूम है।

सेल्सस 170 ई. में एक एपीकीवरीन फिलासफ़र गुज़रा है जो मसीहीयत का एक निहायत ज़बरदस्त मुखालिफ़ था। उस की तस्नीफ़ "दी टू डिस्कोर्स" The True Discourse के जवाब में ओरीजन लिखता है कि सेल्सस मसीह की जानकनी की तरफ़ इशारा करते हुए उस का मुज़हका उड़ाता है और उस के सबूत में मसीह का ये कलिमा पेश करता है "ए बाप अगर मुम्किन हो तो ये पियाला


मुझसे टल जाये" वो मसीह "मस्लूब मसीह" कहता है और उन की बाबत जिन्होंने उसे सलीब दी थी यूं कहता है "तुम जिन्होंने अपने खुदा को सलीब पर खींचा" वो मसीही अक्रीदा यानी उस पर कि "मसीह ने ये मुसीबत बनीनों इन्सान के फ़ायदे के लिए उठाई" हमला करता है और मसीह के ज़िंदा होने की हकीकत को ग़लत साबित करने की कोशिश करता है। वो फ़रिश्तों की तरफ़ इशारा करता है जो मसीह की क़ब्र पर ज़ाहिर हुए और जिन्होंने क़ब्र पर से पत्थर लुढ़काया था। वो जिस्म के ज़िंदा होने के मुताल्लिक़ मसीहीयों के इम़ान की बेवकूफ़ी ज़ाहिर करने की कोशिश करता है और उन की तज़हीक़ करता है। इसलिए कि उन्होंने कहा कि "दुनिया मेरे एतबार से मस्लूब हुई और मैं दुनिया के एतबार से।" हमारे खुदावंद की मौत और ज़िंदा होने के मुताल्लिक़ इंजील के एक मुखालिफ़ की ये शहादत एक निहायत अहम बात है।

इक़तिबास "यहूदीयों और बुतपरस्तों के मुताबिक़" सामुएल स्टोक्स सफ़ा 48 Samuel. E. Stokes The Gospel according to Jews and Pagans.

हमें ये तस्लीम करना पड़ता है कि अगर इन्सानी तारीख़ में कोई ऐसा वाक़ेया है जिसका सबूत मौजूद है तो वो खुदावंद मसीह की मौत का बयान है। अशाए रब्बानी के मुक़र्रर किए जाने और खुदावंद के पाक दिन के माने जाने से भी इस अम्र की ताईद व तस्दीक़ होती है।

रोटी का तोड़ना और पियाले में से पीना उसी रात से शुरू होता है। जिस रात येसु पकड़वाया गया था। उस ने खुद उस साकरीमन्ट को मुक़र्रर किया और मसीही कलीसिया में आम तौर पर मक़बूलियत हासिल करना भी एक क्रिस्म से मसीह की मौत का यक़ीनी और माकूल सबूत है ख्वाह इस रस्म के मुताल्लिक़ मुख्तलिफ़ तशरीहात क्यों ना की जाएं या तरीक़ इबादत एक दूसरे से मुतफ़रिक् क्यों ना हो। ऐसी मुसलसल रिवायत एक क्रिस्म का तारीखी सबूत है जिससे इन्कार करना नामुम्किन है। बईना जिस तरह दीन इस्लाम में मुहर्रम के होलनाक वाक़ेअ की रसूम को तारीखी तहरीरात की अदमे मौजूदगी में हज़रत इमाम हुसैन शहीद कर्बला की शहादत का सबूत तस्लीम करते हैं।

येसु मसीह ने फ़रमाया था कि "वो सबत का मालिक" है। और उस ने इस हकीकत का सबूत यूं दिया कि उस की मौत और उस के फिर ज़िंदा होने के बाद कलीसिया ने फ़ौरन यहूदीयों के सातवें रोज़ के बजाय हफ़ता के पहले दिन को पाक मानना शुरू कर दिया। पस खुदावंद का दिन बज़ात-ए-खुद मसीह की मौत और उस के जी उठने का सबूत है। ग़ैर-मसीही मज़ाहिब में से हर एक

का जुदागाना निशान है मसलन कनुल की कली, स्वास्टीका  और हिलाल के निशानात वगैरा। सलीब मसीही मज़हब का निशान है। पस वो जो पहले ज़िल्लत, शर्म रुस्वाई जुर्म व खता और इंतिहाई बेचारगी और दरमांदगी का निशान थी अब क्योंकि अज़मत विस फ़राज़ी, शुजाअत, शफ़क़त और रहमत का निशान बन गई । इस का जवाब बजुज़ इस के और कुछ नहीं कि ये उस के ज़रीये से हुआ जो सलीब पर खींचा गया था। उस ने हमें और सलीब दोनो को उस लानत से मखलिसी बख़शी।

आख़िर में अगर अब भी कोई अस्हाब ऐसे हों जिन्हें अहदे-जदीद की तालीम की मर्कज़ी हकीक़त के तारीखी बयान के मुताल्लिक़ कुछ शक व शुबहा हो तो हनूज़ इब्तिदाई मसीही यादगारें और आसार और तहखाने मौजूद हैं जो ज़बाने हाल से अपने मख़सूस निशानात और सलीब की जानिब अपने इशारात से ये सदा बुलंद कर रहे हैं कि मसीह किताब मुक़द्दस के मुताबिक़ हमारे गुनाहों के वास्ते कुर्बान हुआ।

कार्लाइल (Carlyle) और एमर्सन (Emerson) की बाहमी ख़त-ओ-किताबत में हम देखते हैं कि आख़िर-उल-ज़िक़्र ने एक मर्तबा कार्लाइल के वो अल्फ़ाज़ याद किए जो उस ने अपनी मुलाक़ात के मौक़ा पर कहे थे। यानी "मसीह ने सलीब पर अपनी जान दी और उस के उस फ़ैअल से इस सामने के गिरजाघर यानी डनसर कोरकिर्क की बुनियाद रखी गई और उस ने हम दोनों को बाहम मिला दिया। इमतीदाद-ए-ज़माना तो फ़क़त बाहम मिलाने वाला रिश्ता है।"

हमें ईमान के सबूत के लिए और किस शहादत की ज़रूरत है? बे-एतिक़ादी की हद इस से ज़्यादा और क्या हो सकती है कि उसने ऐसे नज़रीए पेश किए हैं जो मसीह की ज़िंदगी और उस की मौत और उस के जी उठने की तारीखी हकीक़त की तर्दीद करते हैं !

मसीह किताब-ए-मुक़द्दस के बमूजब मरा और दुबारा जी उठा। अम्बिया ने उस की मौत की पेशीनगोई की। रसूलों ने उसे क़लम-बंद किया । तमाम दीनी कुतुब कफ़फ़ारा पर मर्कूज़ हैं और मस्लूब और ज़िंदा नजातदिहंदा की गवाही देती हैं वो बुनियादी और आलमगीर मौजूअ जो बाइबल शरीफ़ के पैग़ाम का मर्कज़ है इस सवाल का जवाब है कि गुनहगार इन्सान फिर खुदा के हुज़ूर क्योंकि रास्तबाज़ ठहर सकता है। यानी मसीह की मौत के ज़रीये से जो हमारा कफ़फ़ारा है बजुज़ उस के कोई दूसरा तरीक़ा नहीं। कोई और ख़ुश-ख़बरी नहीं। अगर ये बातिल है तो हमारा ईमान भी जिस पर मसीहीयत का दार-ओ-मदार है। बेफ़ाइदा है क्योंकि हमारे पास मासिवाए उस



के और कोई खुशखबरी नहीं कि मसीह हमारे लिए मरा और हमारी अदालत के लिए फिर ज़िंदा हुआ।

"ना तो हम तेरी खाली गुर के पास खड़े हुए कि जिसमें तेरा जिस्म अतहर रखा गया। ना हम उस बालाखाना में बैठे ना राह चलते में कहीं हमने तुझे देखा। लेकिन हम जो फ़रिश्तों ने कहा सर आँखों से मानते हैं कि ज़िंदा को मुर्दों में क्यों ढूँडते हो?"

खुदावंद! तू अपने गाड़े खूनी पसीने की खातिर  
अपनी रुहानी जान कुंदनी की खातिर  
अपने खारदार और ज़ख्मी सर की खातिर  
अपनी अशक बार आँखों की खातिर  
अपने तौहीन और तन्ज़ आमेज़ कलिमात से पुर कानों की खातिर  
अपने पित और सिरका से नम दहन की खातिर  
अपने उस चेहरे की खातिर जिस पर थूका गया था  
अपनी उस गर्दन की खातिर जो सलीब के बार से खम हो रही थी  
अपनी उस कमर की खातिर जो कोड़ों की मार से ज़ख्मी हो रही थी  
अपने मजरूह हाथ और पांव की खातिर  
अपने छेदे हुए पहलू की खातिर जिससे आब व खून रवां थे  
और अपने ज़ख्मी बदन की खातिर जिससे जोय खून जारी थी  
अपने बंदे की बंदी को माफ़ फ़र्मा और उसके तमाम गुनाहों की पर्दापोशी कर

---

# बाब सोम

## "और उन्होंने उस की आँखें बंद कीं"

(लूका 22:64 + मरकुस 14:65 + मत्ती 26:68)

तारीख के मुताबिक मसीह का दुख उठाना एक देरीना वाक्या है। वो एक मर्तबा गुनाहों की खातिर मर चुका और हर रोज़ नहीं मरता। मौत का अब उस पर कोई इख्तियार नहीं। लेकिन रुहानी तौर से उस का दुख बराबर बरकरार है। रुहानी तौर से वो इन्सान की माहीयत में हर-रोज़ दुख उठाता है। हम उसे अज़सर नौ सलीब पर खींचते हैं। हम मुतवातिर मसीह से सरकशी व रुगरदानी करते हैं। उसे फ़रामोश करते उस का इन्कार करते। उस की आँखें बंद करके उस पर थूकते हैं। उसे कोड़े मारते। उस का मुज़हका उड़ाते और उसे सलीब देते हैं।

साथ मस्लूब हुआ हूँ। होरशीयश बोनर (Horatius Bonar) ने हम सबकी तरफ़ से किया खूब और सच्च कहा है :-

"मैं ही तो था जिसने मसीह का खून-ए-पाक बहाया और उसे सलीब पर कीलें जड़ीं।

हाँ मैं ही तो था जिसने खुदा के मसीह को सलीब दी। और उस के ठठा करने वालों में शामिल हुआ।

मैं महसूस करता हूँ कि उस गौगाई अबनोह कसीर मैं भी एक हूँ और उन नाशाइस्ता और करखत आवाज़ों के दरमियान मैं अपनी आवाज़ खूब पहचानता हूँ।

सलीब के चौगिर्द में एक बड़ा मजमा देखता हूँ जो उस सितम-रसीदा शख्स की आह-ए-पुर दर्द का तमस्खर करता है। लेकिन वो मुझे अपनी ही आवाज़ मालूम पड़ती है गोया अकेला मैं ही हूँ जो उस का मुज़हका उड़ा रहा हूँ।"

"और जो आदमी येसु को गिरफ़्तार किए हुए थे। उसको ठट्ठे में उड़ाते और मारते थे और उस की आँखें बंद करके उसे ये कह कर पूछते थे नबुव्वत से बता तुझे किस ने मारा"?

तब बाअज़ उस पर थूकते और उस का मुँह ढाँकने और उस के मुक्के मारने और उसे कहने लगे नबुव्वत की बातें सुना ! और प्यादों ने उसे तमांचे मार मार के अपने कब्ज़े में ले लिया।”

दुनिया के मशहूर और नामवर मुसव्विरो ने बजुज़ इस खास वाक़ेया के मसीह के दुख उठाने के दीगर तमाम वाक़ियात की तस्वीर खींची है। लेकिन ये नज़ारा इस क़दर होलनाक और पुरमाअनी है कि हैरत होती है कि किसी मुसव्विर के मोए क़लम ने क्यों उस अजीबो गरीब नज़ारा के मआनी गहराई का नक्शा नहीं खींचा।

सुब्ह-ए-सादिक़ से पेशतर का आलम है और काइफ़ा के महल का सेहन तमाम जगह माहताब की रोशनी से मुनव्वर हो रहा है और आग जो हाज़िरीन को गर्म रखने के लिए रोशन की गई है सेहन में चहार सो अपने शोलों का अक्स फेंक रही है। ऐन दरमियान में चशम बस्ता मसीह को बिठाया गया है। उस के चौगिर्द ऐसे लोगों का मजमा है जो अपनी नफ़रत के बाईस बिल्कुल अंधे हो रहे हैं। इस मजमें के बाअज़ शुरका ग़ालिबन सनहीडर्न के खिदमत गुज़ार और सरदार काहिन के भाड़े के टट्टू थे। और ग़ालिबन सब मसीह के हम क़ौम ही होंगे। बाअज़ ने इन में से ज़रूर मसीह को देखा होगा और उस का कलाम भी सुना होगा और शायद उस के मोज़ात का भी मुशाहिदा किया होगा। बाग़ गतसमनी में वो उस की निगाह से गुरेज़ करते रहे लेकिन यहां वो उस की आँखें बंद करके उस का मुज़हका उड़ा रहे हैं।

आह! उन के दिलों पर किस क़दर जुल्मत तारी हो गई होगी जो उन्होंने ऐसा किया और मसीह के साथ ऐसा सुलूक जायज़ करार दिया ! आह ! क्या यह मुहब्बत और सदाक़त का इन्तिहाई अदम-ए-एहसास नहीं? और क्या ये पाकीज़गी के हुस्न व जमाल की तरफ़ कोरचशमी और अंधापन नहीं मुक़ाम-ए-सद-अफ़सोस है कि ये शर्मनाक सुलूक उन्होंने उस येसु नासरी के साथ किया जिसने यरूशलेम में एक नाबीना शख्स को बीनाई बख़शी थी। उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँधी ! क्या मलखूस भी उन के दरमियान था और क्या काइफ़ा ने उस में हिस्सा लिया था ! क्या पतरस ने बाहर जाकर ज़ारज़ार रोने से पेशतर इस नज़ारे को देखा था?

बाद में उसने इस खौफ़नाक रात का हाल बयान किया जब वो आग ताप रहा था लेकिन उस की रूह काँप रही थी :-

**"क्योंकि मसीह भी तुम्हारे वास्ते दुख उठाकर तुम्हें एक नमूना दे गया है.....और ना उस के मुँह से कोई मक्र की बात निकली। ना वो गालियां खा कर गाली देता था और ना दुख**

पाकर किसी को धमकाता था। बल्कि अपने आपको सच्चे इन्साफ़ करने वाले के सपुर्द करता था.....और उसी के मार खाने से तुमने शिफ़ा पाई"

हाँ पतरस ने कुछ फ़ासले पर से ज़रूर उस का मुशाहिदा क्या होगा क्योंकि उस वाकिया की शर्मिंदगी और जानकनी से उस का दिल निहायत अफ़सुर्दा व बेकरार था। येसु की आखिरी निगाह पेशतर इससे कि उस की आँखें बाँधी गईं। पतरस पर थी जिसने मुलाज़मीन के रूबरू अपने खुदावंद का इन्कार किया था।

ख्वाह मसीह की मौत और उस के दुख उठाने का बयान कितना ही मुख्तसर क्यों ना हो हम इस बुज़दिली, जुल्म और बईद-उज़-अक्ल और गैरवाजिब हसद का अंदाज़ा लगा सकते हैं जो हमारे नजातदिहंदा के साथ रवा रखे गए। क्या वजह थी कि उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँधी? क्या इस की ये वजह ना थी कि उस की आँखों में उनकी बे-एतिक़ादी के बाईस एक पाकीज़ा इस्तिजाब और उन की जहालत के सबब तरस मौजूद था लेकिन बावजूद इस के इन से एक ऐसा नूर रोशन था जो शोला नाज़ बन कर उन के ज़मीरों को जला रहा था। वो उस को रूबरू देखने की ताब ना ला सके।

पस बाक़ौल मुक़द्दस मरकुस "बाअज़ ने उस पर थूकना शुरू किया।" बाअज़ ने "जब उसे ठट्ठों में उड़ा चुके तो उस पर से अर्ग़वानी चोगा उतार कर उसी के कपड़े उसे पहनाए" उनकी बुज़दिली का मुक़ाबला फ़क़त उनका हसद कर सकता था। उन्होंने उसे मारा और उन्होंने उसे ठट्ठों में उड़ाया और "उन्होंने ताने और बहुत सी बातें उस के खिलाफ़ कीं।"

उनका हसद बईद अज़ अक्ल और गैर वाजिब था। उन्होंने ऐसे मौके पर सबूत के लिए इसरार किया। जहां सबूत की कुछ ज़रूरत ही ना थी। उन्होंने नबुव्वत का फ़ालगोई से मुक़ाबला किया। और चशम बस्ता कैदी और आजिज़ येसु मसीह को पत्थर मार मार कर चाहा कि वो उन की मुत्तफ़िका तकफ़ीर के मुताल्लिक जुदागाना तौर पर बताए और इस तरीक़ से उन्होंने नबुव्वत की कसर-ए-शान की। उन्होंने कहा "नबुव्वत से हमें बता कि तुझे किस ने मारा।" किसी एक शख्स ने उसे नहीं मारा था बल्कि एक क्रौम और तमाम इन्साननी नसल ने उसे मारा था।"

"वोह मर्द-ए-ग़मनाक और रंज-आशना हुआ और वो लोग गोया उस से रुपोश थे।" या गोया जब हम आप उस से रुपोश ना हो सके तो हम ने उस की आँखों पर पट्टी बाँधी और उस के चेहरे को छुपा दिया।

ज़मानों की बे-एतिक्रादी और कुफ़र इस वाक़िये से वाबस्ता है बाअज़ हमेशा से डरते रहे हैं और इस वजह से उन्होंने मसीह के चेहरे को देखना ना चाहा तारीख से ज़ाहिर होता है कि लोग मसीह का इक्कार करने से ये कह कर गुरेज़ करते रहे हैं कि वो महिज़ एक अफ़साने की हैसियत रखता है। पस इसलिए उन्होंने उस के चेहरे पर निगाह करने से इन्कार किया।

किस क़दर मशहूर तारीखें और मदारिस की दर्सी कुतुब महिज़ एक ना-मुकम्मल और सरसरी से बयान से मसीह की आँखों पर पट्टी बांधती हैं !

बे-एतिक्रादी बाइबल के औराक़ को बंद करके आँखों पर पट्टी बांधती है और इस तौर से उस के मुबारक पैग़ाम को बच्चों तक पहुंचने से रोकती है। या ये कह कर उसे अलमारी के तख़्ते पर पड़ा रहने देती है कि "ये एक मुस्तनद तस्नीफ़ है जिसके मुताल्लिक़ सबको इल्म है लेकिन कोई इसका मुताला नहीं करता।" लोग मिंब्रों पर से और अपने बिददत आमेज़ ख़्यालात की नशरो इशाअत से मसीह की आँखों पर पट्टी बाँधते हैं और बाद अज़ां उस के नबुव्वती मन्सब और उस के मसीहयाई जलाल का मुज़हका उड़ाते हैं जब कुफ़र और अल्हाद मुनज्जी आलमयान की आँखों पर पट्टी बांध चुकते हैं तब वो उस के मुँह पर थप्पड़ मारते हैं"

वालटीयर (Voltaire), नीटशे (Nietzsche), और रीनान (Renan), बेबल (Babel), पेन (Paine), इंगरसोल (Ingersoll) और इसी कुमाश के दीगर अशखास ने जो हालाँकि मज़कूरा बाला मुल्हदीन की मानिंद मशहूर ना थे लेकिन तो भी अक्काइद उन के हम ज़बान और हम ख़याल थे। इस अम्र पर इतिफ़ाक़ किया है कि पहले मसीह की आँख पर पट्टी बांधे और फिर उस की उलूहियत का इन्कार करें। यानी इस से पेशतर कि वो उस के जलाल और उस की अज़मत पर हमला करें उस के चेहरा को छुपा दें।

शहर थीगीयुर (Theguir) रमेन का ज़ाद बोम है और एक ख़ानकाह से मुताल्लिक़ क़दीम शहर है। उस के बाशिंदे निहायत नेक और दीन-दार हैं। वो जो दी दरिया के साहिल पर एक कोह पर वाक़ेअ है। ऐन लब-ए-दरया एक ऐसे मुक़ाम पर जिस पर हर राह गुज़रने वाले की नज़र यक-दम पड़ती है सफ़ैद पत्थर की एक मोरी बनी है जिसमें पूरे क़द के तीन सलीब नस्ब हैं और दर्मयानी सलीब के नीचे तीन ज़बानों में ये अल्फ़ाज़ कुंदा हैं :-

"ये आदमी बेशक़ ख़ुदा का बेटा था" इस कलवरी के मुताल्लिक़ क्रिस्सा मशहूर है कि जब रेनन की शान में उस का बुत शहर के कैथड्रल के क़रुब में नस्ब किया गया तो बाअज़ ने अपने इज़हार-ए-नाराज़गी के लिए उस कलवरी को बनवाया था।

इस चशम बस्ता मसीह की तसलीब का इन्जीली बयान निहायत दर्दनाक है और उस का मुताला करते हुए दिल को बहुत रंज और सदमा होता है। लेकिन जब इस बात पर गौर करते हैं कि किस तरह उन्नीस सदीयों तक बराबर लोग उसे चशम बस्ता करके ठट्ठों में उड़ाते रहे हैं। तो हमारे गम व अलम की कोई इतिहा नहीं रहती।

नीटशे के मुंदरजा जैल अल्फाज़ से बढ़कर कुफ़्र आमैज़ और रंज आलूद अल्फाज़ और क्या हो सकते हैं "इंजील या खुशखबरी" का खातमा सलीब पर हो गया। वो जो उस के बाद इंजील कहलाई वो उस इंजील के बरअक्स थी जो मसीह की जिंदगी से वाबस्ता थी। दरहकीकत वो बद और मनहूस खबर थी।" हालाँकि नटीशे बाज़-औक़ात खुद मसीह की जात के मुताल्लिक निहायत मुशफ़िकाना तरीक़ से इशारा करता है और शाज़ोनादर ही "यहूदीयों के इस मुख़्तसर से फ़िर्का के बानी" की मज़म्मत करता है लेकिन तो भी वो मसीहीयत के नाम से और पौलुस रसूल के नाम से जो इंजील जलील का मुबशिशर था सख़्त मुतनफ़िर था।

कुफ़्र व बेदीनी का हसद अस्र हाज़िरह में भी ठीक वैसे ही नुमायां है जैसे काइफ़ा के कमरा अदालत में था। लोग मसीह से गुरेज़ नहीं कर सकते। उस का चेहरा अज़बस जाज़िब-ए-तवज्जोह है। उस की आँखें शोला आतिश की मानिंद हैं। या तो वो इन्सान को अपनी जानिब खींच लेता है या वो उस से बिल्कुल दूर हो जाता है। मसीह का ये वस्फ़ खुसूसी ज़माना गुज़श्ता की तरह अब तक बरकरार है।

"क्या यही वह चेहरा है जिसकी दहशत से सराफ़ीम आलम-ए-बाला पर अपना मुँह छिपा लेते हैं ? क्या यही वो चेहरा है जिस पर कोई दाग़ या झुर्री नहीं। हाँ वो चेहरा जो मुहब्बत का चेहरा है? बिलाशक यही वह चेहरा है जो गो अब बदनुमा और बे जान है ताहम तमाम मख़लूक़ात की मुहब्बत के लिए मुक़तफ़ी है। जिससे मुहब्बत ईलाही का इक़तिज़ा पूरा हो गया है। हाँ वो चेहरा येसु मसीह का चेहरा पाक है।"

अहदेअतीक़ के मुक़द्दसिन अज़बस आर्ज़ूमंद थे कि खुदा के जलाल का दीदार उस के मसीह के चेहरे से हासिल करें यही मूसा की दुआ थी। यही दाऊद की उम्मीद थी। यही यशायाह की तमन्ना थी "कब तक तू अपना मुँह मुझसे छुपाएगा?" अपने बंदे को अपने चेहरा का जलवा दिखला।" अपने ममसोह के चेहरे को मत फिरा।" मुझे से मुँह ना मोड़ नहीं तो मैं इन की मानिंद हो जाऊंगा जो गढ़े में गिरते हैं। "जब यशायाह ने उस का जलाल देखा और उस की मुसीबत का बयान किया तो उसने उस खौफ़नाक दिन की पेशीनगोई इन अल्फाज़ में की" :-

“मैं अपनी पीठ मारने वालों को देता और अपने गाल उन को जो बाल को नोचते । मैं अपना मुँह रुस्वाई और थूक से नहीं छुपाता” “वह मर्द-ए-गमनाक और रंज का आशना हुआ लोग उस से गोया रुपोश थे।” “बल्कि तुम्हारी बदकारीयाँ तुम्हारे और तुम्हारे खुदा के दरमियान जुदाई करती हैं और तुम्हारे गुनाहों ने उसे तुमसे रुपोश किया।” इन्होंने इस की आँखों पर पट्टी बाँधी।”

और शायद यशायाह की पेशीनगोई यूँ पूरी हुई :-

“अंधा कौन है मगर मेरा बन्दा ? और कौन ऐसा बहरा है जैसे मेरा रसूल जिसे मैं भेजूँगा। अंधा कौन है जैसा कि वो जो कामिल है और खुदावंद के खादिम की मानिंद अंधा कौन है?”

जब हम ऐसे अल्फ़ाज़ पर गौर करते हैं तो उस वक़्त हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि येसु मसीह कैसी सख़्त मुसीबत और तकलीफ़ की हालत में से गुज़रा होगा। जब उसने चशम बस्ता हो कर उम्दन व कसदन कुफ़्र व बेदीनी व जहालत का शख़्सी तजुर्बा हासिल क्या होगा। बेदीनी और कुफ़्र की बे-एतिक़ादी कोई नई बात नहीं। ज़मानों के शुरू से लोग अम्बिया किराम से जिन्होंने खुदा की शहादत दी है ऐसे सबूत तलब करते रहे हैं जो आज तक उस चर्ख-ए-कुहन के नीचे कभी किसी बात के लिए तलब नहीं किए गए जब कभी ये कहा गया है कि मसीह पर ईमान लाओ तो इस किस्म के सवालात का अंबार लग जाता है। मसलन उस के मोज़ात कहाँ हैं? क्या वो कोई निशानात ज़ाहिर करता था? हम क्यों उस के कलाम पर ईमान लाएं ? क्या उस की कोई पेशीनगोई पूरी हुई है? “हमारे पैग़ाम पर कौन एतिक़ाद लाया और खुदावंद का बाजू किस पर ज़ाहिर हुआ?”

हम या तो मसीह से मुँह फेर लेते हैं या खुद उसे चशम बस्ता कर देते हैं और यूँ काइल हुए बग़ैर या इत्मीनान-ए-कुल्ली हासिल किए बग़ैर रह जाते हैं। सरदार काहिन के मुलाज़िमों ने कुछ ना देखा था। लेकिन इस की एक निगाह ने पतरस की ज़मीर पर ऐसा असर किया था कि वो निहायत रंजीदा और नादिम हो गया था। उस के लिए तौबा मुम्किन हुई क्योंकि उसने मसीह की आँखों पर पट्टी ना बाँधी थी और इसी तरह बराबर होता चला आया है जेरेमी टेलर (Jeremy Taylor) ने भी अपने वाअज़ में जो मुक़द्दसिन के ईमान और सब्र के मुताल्लिक है इसी ख़याल को मदद-ए-नज़र रखा है।

"उस की मौत दफ़अतन और यक-बारगी ना हुई । बल्कि वो एक बर्बा था जो दुनिया के शुरू से ज़बह किया गया था। क्योंकि वो बक़ौल मुक़द्दस पविलियनस हाबील में क़त्ल किया गया था। वो नूह की सूरत में समन्दर कि रुकी लहरों से टकराया गया था। जब इब्राहीम अपने शहर से बुलाया गया और वहां से निकल कर आवारा फिरा तो मसीह ही उस की ज़ात में फिरता रहा

। इज़हाक की सूरत में कुर्बानी के लिए नज़्र किया गया । याकूब की सूरत में सताया गया । यूसुफ़ की सूरत में बेचा गया। सम्सून की सूरत में अंधा किया गया। मूसा की सूरत में उस की तौहीन हुई । यशायाह की सूरत में आरे से चीरा गया। यर्मियाह नबी की सूरत में कुर्वे में डाला गया क्योंकि ये सब मसीह की मुसीबत के नमूने और निशान थे। फिर उस का दुख उस के ज़िंदा होने के बाद जारी रहा। क्योंकि वही अपने बंदों की ज़ात में सताया जाता है।

वही तमाम बदकारों के इन्कार की बर्दाश्त करता है वही ज़िंदगी का मालिक है जो अपने खादिमों की मुसीबत और तकलीफ़, सरकशों की बगावत, मुनहरिफ़ों और मुनकिरों के इन्कार और ज़ालिमों के जुल्म, गासिबों की बे इंसाफी और कलीसिया की इज़ारसानी के वक़्त बेइज़ज़त किया जाता और दुबारा सलीब पर खींचा जाता है। मुक़द्दस स्तिफ़नुस में वही पथराओ किया गया। मुक़द्दस बरतलमाई की सूरत में उसी कि जिल्द खींची गई। मुक़द्दस लौरंस की सूरत में वही आग के शोलों पर बरीयां किया गया मुक़द्दस इग्नतियुस (Ignatius) की ज़ात में वही शेरों के आगे डाला गया। पोली कॉर्प की सूरत में जलाया गया और वही उस झील में सर्दों के बाईस यख हो गया जहां कपदोकीयह के चालीस शहीद खड़े किए गए ।

मुक़द्दस हिलेरी (St. Hilary.) का क़ौल है कि मसीह की मौत की साकरीमन्ट हरगिज़ पूरी नहीं हो सकती जब तक इन्सानियत की तमाम मसाइब बर्दाश्त ना की जाएं।

पस अगर हमारे ज़माना में भी लोग हमारे मुनज्जी को रुपोश करते या उस को बेइज़ज़त करते और उस का मुज़हका उड़ाते हैं तो हमें ये देखकर हैरत-ज़दा नहीं होना चाहिए । ख्वाह हज़रत मुहम्मद का मक्सद कुछ भी हो और ख्वाह उसने और कुछ किया हो या ना किया हो उसने मसीह को रुपोश ज़रूर किया है। गोया मसीह यानी आफ़ताब-ए-सदाक़त पर मुहम्मद स. यानी माह-ए-मक्का का गरहन लगा है।

हर नया मज़हब या फ़लसफ़ा जदीद लोगों को इंजील से मुनहरिफ़ करता है तब ही कामयाब होता है जब पहले मसीह को रुपोश कर ले। वो जो उस की आँखों में एक बार देख लेते हैं उन्हें किसी और नूर की ज़रूरत नहीं रहती वो जिन्होंने उस के चेहरे का दीदार हासिल कर लिया किसी और हादी और रहनुमा की पैरवी करना पसंद नहीं करते।”

अगर हमारी ख़बरी पर पर्दा पड़ा है तो हलाक होने वालों ही के वास्ते पड़ा है यानी उन बेईमानों के वास्ते जिनकी अक़लों को इस जहान के ख़ुदा ने अंधा कर दिया है ताकि मसीह जो ख़ुदा की



सूरत है। उसके जलाल की सूरत की रोशनी उन पर ना पड़े। क्योंकि हम अपनी नहीं बल्कि येसु मसीह की तब्लीग करते हैं कि वो खुदावंद है। और अपने हक में ये कहते हैं कि येसु की खातिर तुम्हारे गुलाम हैं इसलिए कि खुदा ही है जिसने फ़रमाया कि तारीकी में से नूर चमके और वोही हमारे दिलों में चमकाता कि खुदा के जलाल की पहचान का नूर येसु मसीह के चेहरे से जलवागर हो।”

वोह जो अक़ल की आँखें बंद करके तारीकी में चलते हैं अक्सर औकात खुद पहले मसीह को रुपोश करने से रोशनी को छुपा देते हैं। ख्वाह इन अल्फ़ाज़ "यानी दुनिया के सरदार" का मतलब कुछ ही हो लेकिन उस में यक़ीनन वो शैतानी इख़्तियार ज़रूर शामिल है जो लोगों को हमारे नजातदिहंदा के जलाल का मुशाहिदा करने से बाज़ रखता है और वो ज़माना की उस रूह से मुताल्लिक है जो बिद्दती ख़्यालात दुनियादारी के मसाइल और अक़ीदे अय्याराना चालें और फ़ित्ना साज़ियाँ, नजिस और नापाक तहरीकें और मुरव्वजा अक्राइद जो ज़माना में शक व शुबहा और कुफ़्र व बेदीनी का माहौल पैदा करके ईमान की बेखकुनी करती है।

कोर बातिनी बेदीनी की पेशरू बल्कि उस का मूजिब है। कोरबातिनी इंजील पर पर्दा डालने, खुदा के सरीह और रोशन कलाम को पेचीदा बनाने और सदाक़त की जानिब से आँखें मूंद लेने का नतीजा है। मसीह ने फ़रमाया है :-

**"मैं दुनिया में अदालत के लिए आया हूँ ताकि जो नहीं देखते वो देखें और जो देखते हैं वो अंधे हो जाएं"**

फिर एक मर्तबा चशम बस्ता मसीह की उस दर्दनाक तस्वीर पर गौर करो जो सनहीडर्न के बदमआशों के दरमियान खींची गई है। इस चेहरे पर नज़र करो जो सुब्ह-ए-सादिक़ और उलूहियत के नूर से मुनव्वर है। लेकिन चशम बस्ता है और थप्पड़ों की मार से उस के सुर्ख़ रुख़सारों से जोवे खून जारी है। ज़बूर नवीस फ़रमाता है अपने मसीह के मुँह पर निगाह रख और यहां पर हम उस के चेहरे को मुसीबतज़दा नजातदिहंदा की असली सूरत में देखते हैं :-

देख वो मर्द ग़मनाक जो मारा कुटा, सताया हुआ, ज़लील किया हुआ और बंधा हुआ है लेकिन अपनी ज़बान से एक आवाज़ तक नहीं निकालता और जां निसारी ली ख़ामोशी ने उस के लबों पर मोहर-ए-सुकूत लगा दी है।”

“हमें नबुव्वत से बता कि किस ने तुझे मारा।” इस आयत का जवाब हम अपने दिलों से तलब करें। मसीह ने फ़क़त इस लिए मुसीबत ना उठाई कि हमें गुनाह और इस की लानत से रिहा करे बल्कि वो दुख उठा कर हमें एक नमूना दे गया है ताकि उस के नक्श-ए-क़दम पर चलें। अपनी मस्तुबियत के एक एक वाक्ये से दुनिया का सलीब बर्दार हमारे कानों में ये कह रहा है "मेरी पैरवी करो ज़ुरात और दिलेरी के साथ ज़िंदगी गुज़रानौ और हर एक मुसीबत का बग़ैर कुड़-कुड़ाए कमाल आजिज़ी और बुरदबारी के साथ मुक़ाबला करो रंज व अलम और गुस्सा व गज़ब दिल-शिकन ज़जर-ओ-तौबीख को खुशी से क़बूल करो अपने ऐब लगाने वालों के सामने ख़ामोश खड़े रहो। इंजील और मेरी दिलेरी से बर्दाशत करो मेरे साथ नाकामयाबी के पियाले में से पीने से इन्कार ना करो जो अक्सर औक़ात ज़ाम-ए-मौत से भी मलख़तर हौता है यानी तज़हीक की जानकनी जो मौत की जानकनी से भी ज़्यादा पुरदद और अलमनाक होती है।”

जब हम अदालत के कमरे और चशम बस्ता मसीह पर नज़र डालते हैं और देखते हैं कि किस तरह उस ने उन गुनाहगारों की मुखालिफ़त और तौहीन की बर्दाशत की तो उस वक़्त हम अपनी मलामत और हक़ारत को बर्दाशत करने में पस्त-हिम्मत और आजुरदा-खातिर नहीं होंगे।” जब मेरे सबब लोग तुम्हें लान-तान करेंगे और हर तरह की बुरी बातें तुम्हारी निस्बत नाहक़ कहेंगे तो तुम मुबारक होगे। खुशी करना और निहायत शादमान होना क्योंकि आस्मान पर तुम्हारा अज़ बड़ा है। इसलिए लोगों ने नबियों को भी जो तुमसे पहले थे इसी तरह सताया था।”

ये आखिरी और सबसे अज़ीम खुशख़बरी है हाँ ये उन की खुशख़बरी है जो मसीह की अज़ इब्तिदा-ता-इंतिहा पैरवी करते हैं। यानी गतसमनी से लेकर गलगता तक।

खुदा के दोस्तों की खुफ़ीया जमात में शरीक होने की पहली शर्त ये है कि हम दुनिया की मस्नद अदालत के सामने उस के हमराह खड़े हों और दुनिया के मज़हब उस की तहज़ीब और उसके इख़्तियार हुकूमत के हाथों कभी तो उस के साथ ठट्ठों में उड़ाए जाएं। कभी उन की खुशनुदी भी हासिल कर लें और कभी बाहमी ग़लत-फ़हमियों का भी शिकार हो जाएं हिक़मतों के हाथों जिनको दुनिया ने हक़ीक़त को मोरीद-ए-इल्ज़ाम ठहराने के लिए मयार मुक़रर कर रखा है।

जब हम ये ऐलान करते हैं कि दुनिया इस क़ाबिल नहीं कि वो हमें वो हक़ीकी बादशाहत दे सके जिसकी हम तलाश कर रहे हैं उस वक़्त हम दुनिया की हम्ददी खो बैठे हैं और उस की हिस्स-ए-मुशतरक की तौहीन करते हैं। वो मस्नद अदालत के रुबरु इस ख़याल के साथ दाख़िल होती है कि हमारी तबीयत के सरकश अंसर के साथ अक्लमंदी से पेश आएगी और हमारी बेवकूफी की बर्दाशत

करेगी। फिर जहालत, काहिली और बुज़दिली बड़ी तस्कीन से हमें मलामत करती हैं जिस तरह से कि उन्होंने अक्वल और वाहिद बेऐब हस्ती की थी। (इकतिबास अज़ "दी पाथ औफ़ इटर्नल विज़डम" मन तस्नीफ़ जान करडीलियर)।

## बाब चहारुम

"उन्होंने येशु को बाँधा, उन्होंने उसके

मुँह पर थूका"

येशु मसीह अपनी सलीब उठा कर ऐन इसी तरह ले गया जिस तरह इज़हाक पहाड़ पर लकड़ियाँ ले गया। येशु इसी तरह बाँधा गया जिस तरह इज़हाक बाँधा जाकर मज़बह पर रखा गया।" और जब वो उस मुक़ाम पर जिसकी बाबत खुदा ने उससे कहा था पहुंचे। तब वहां इब्राहीम ने एक कुर्बान-गाह बनाई और लकड़ियाँ चुनी और अपने बेटे इज़हाक को बाँधा और उसे कुर्बान-गाह पर लकड़ी के ऊपर धर दिया" (पैदाइश 22:9)

पस अहले यहूद का इज़हाक की उस कुर्बानी को इस क्रूर एहमीयत देना और हर साल निहायत संजीदा तौर से कोह-ए-मौर्या के इस वाक्ये की याद को ताज़ा रखना बिला वजह ना था।

रासिख उल-एतकाद यहूदीयों का अक्रीदा उनके नए साल की मुकररा तरतीब-ए-नमाज़ में मर्कूम है और वो मुंदरजा ज़ैल है :-

"ए खुदावंद खुदा तू हमारे हक में अपना वो वाअदा याद फ़र्मा जो तूने हमारे बाप इब्राहीम से कोह-मौर्या पर किया था। उस की मुहब्बत पर गौर फ़र्मा जो उस से उस वक़्त ज़ाहिर हुई जब उस ने अपने बेटे इज़हाक को बांध कर कुर्बान गाह पर रखा। उस ने अपनी महर पिदरीको ज़ब्त किया ताकि तेरी मर्जी अपने तमाम दिल से बजा जाए। इसी तरह तेरी मुहब्बत तेरे उस कहर को जो हमारे खिलाफ़ भड़कता है फ़र्द करे और तेरी बड़ी खूबी के बाईस तेरा ग़ज़ब व अताब तेरी क़ौम तेरे शहर और तेरी मीरास की तरफ़ से हट जाये । आज तू उस की औलाद के हक में इज़हाक का बाँधा जाना याद कर ।"

डाक्टर मैक्स लैंड्सबर्ग (Dr. Max Landsberg) फ़रमाते हैं :-

"ज़माना की रफ़्तार के साथ अक्रीदे की एहमीयत भी बहुत बढ़ गई है। हगादीसी (Haggadistie)

कुतुब में इस की जानिब बेशुमार इशारात मौजूद हैं उसी की बिना पर मगफिरत के हुक्क कायम करके रोजाना नमाज़ सुबह में दर्ज किए गए। जर्मन यहूदियों के तौबा के अय्याम की नमाज़ों पर एक और हिस्से का इज़ाफ़ा किया गया जो अक्रीदा के नाम से नामज़द है।”

क्या ये दुआ मसीह के ज़माना में राइज थी? अक्सर औकात कुर्बानियां मज़बह के सींगों से बाँधी जाती थीं और ज़बिहा के बाँधे जाने के मौक़े पर खास रसूम अदा की जाती थीं । हैकल की कुर्बानियों से मुताल्लिक़ ख़्वाह कुछ ही रसूम राइज हूँ लेकिन मुम्किन है जब येसु को बाग़ गतसमनी से बांध कर ले जा रहे थे तो उस के शागिर्दों को ये ख़्याल गुज़रा हो कि **"ख़ुदा का बर्दा"** उस अज़ीमुशान कुर्बानी के लिए ले जाया जाता है। इज़हाक की कुर्बानी जिसका महिज़ एक नमूना थी।

तीन इंजील नवीस बिलखूस मसीह के बाग़ में और पिलातुस के रूबरू बाँधे जाने का मुकर्रर बयान करते हैं। यूहन्ना मुक़द्दमा से पेशतर का बयान करते हुए यूं रक़म तराज़ है :-

"तब सिपाहीयों और उन के सूबेदारों और यहूदियों के प्यादों ने येसु को पकड़ कर बांध लिया। और पहले उसे हन्ना के पास ले गए क्योंकि वो उस बरस के सरदार काहिन काइफ़ा का सुसर था....पस हन्ना ने उसे बाँधा हुआ सरदार काहिन के पास भेज दिया "वहां उन्होंने येसु को ठट्ठों में उड़ाया और उस के मुँह पर थूका फिर "जब सुबह हुई तो सब सरदार काहिनों और क्रौम के बुजुर्गों ने येसु के ख़िलाफ़ मश्वरा किया कि उसे मार डालें और उसे बांध कर ले गए और पिलातुस हाकिम के हवाला किया" (मत्ती 27: 1 ता 2)

मरकुस फ़रमाता है "सरदार काहिनों ने बुजुर्गों और फ़कीहों और सारे अदालत वालों समेत सलाह करके येसु को बंधवाया और ले जाकर पिलातुस के हवाले किया।”

पस हमारे ख़ुदावंद ने सबसे पेशतर बाग़ गतसमनी में ज़ैतून के दरख़्त के नीचे अपने हाथ फैलाए ताकि उसे बांध लें। पतरस का बे-निशाना तल्वार चलाना ही सिपाहीयों के डराने के लिए काफ़ी था । उन्होंने उस के हाथ बांध लिए जिस का आखिरी काम ये था कि अपने हाथ बाँधे जाने से पेशतर मलखस के कान को चंगा कर ले। शायद दुश्मनों ने पसे पुशत उस के हाथ रस्सियों से बाँधे हों बादअज़ां उस के शागिर्द उसे अकेला छोड़कर फ़रार हो गए । इस तरह उस रात के होलनाक खेल का पहला सीन तमाम हुआ।

उसे यानी बंधे हुए येसु को कोई बड़ा फ़ासिला ना तै करना पड़ा वो उसे उसी दरावज़े से बाहर ले गए जिससे वो ईद फ़सह की इशा के बाद अपने शागिर्दों के हमराह बाग़ के अंदर दाख़िल हुआ था। वो उसे हन्ना के महल में ले गए जो गुज़शता साल सरदार काहिन था वहां सिपाहीयों ने उस के हाथ खोल दिए और अपने अपने घर चले गए। क्योंकि उस के बाद रूमी सिपाहीयों का कुछ ज़िक्र नहीं पाया जाता। यहां मसीह ने हन्ना और काइफ़ा के रूबरू उन के खुफ़ीया और दिली बुग्ज़ और हसद का तजुर्बा किया जिनके मुताल्लिक कहा गया है "हारून की औलाद निहायत गुस्ताख़ कमीने और शहवत-परस्त" जिनके नाम उन के हमअसरीन लानत के साथ दबी आवाज़ से अपनी ज़बान पर लाते थे। यहां हमारे खुदावंद को मुँह पर पहला थप्पड़ लगाया गया। शायद वो किसी मुलाज़िम के हाथ से हो या छड़ी से हो।

लूका के बयान के मुताबिक़ इस मुक़द्दमा की झूठी समाअत के बाद जो उन झूटे गवाहों के सामने हुई और मौत के फ़तवा के बाद कि जिसका फ़ैसला पहले ही हो चुका था। काइफ़ा के मुलाज़िमों और सिपाहीयों ने उस बेकस व लाचार कैदी येसु का मुज़हका उड़ाया उसे बेइज़्ज़त व ज़लील करके सख़्त बेरहमी से उस के साथ पेश आए । लेकिन इन तमाम तानाज़नी और ज़िल्लत व ख़वारी और ज़र्बी ने जो उस बेचारे तन्हा मुसीबतज़दा पर लगाई गई।” जो दरहकीकत बेकस व लाचार ना था बल्कि खुद ही इरादतन मुकाबला ना करता था। जो वाकई शिकस्त ख़र्दा ना था। बल्कि बरअक्स उस के फ़क़त फ़साद से गुरेज़ करता था। जो दरअसल आजिज़ ना था बल्कि फ़क़त अपनी मर्ज़ी से आपको दुश्मनों के हवाले किए हुए था।”

ना फ़क़त इन्सानियत के सुफ़लापन और उस की लानत को आलम आशकारा किया बल्कि उन्हें मसीह इब्नुल्लाह पर डाल कर उन्हें बेख-ओ-बिन से उखाड़ फेंका उस अस्ना में जब कि वो अपनी क्रौम के ज़रीया से ठुकराया जा रहा था और उन की नफ़रत और कीना का इज़हार हो रहा था येसु बंधा खड़ा था।

दुनिया के आगाज़ से लेकर अब तक ऐसे हाथ पहले नहीं बाँधे गए थे। अहद-ए-अतीक के बंधे हुए हाथों का बयान येसु के ज़हन में रोशन था। क्या वो उस के सताने वालों को भी याद था ? क्या शमाउन ने अपने हाथों को अपनी रजामंदी से पेश किया। जब यूसुफ़ ने उसे ज़ामिन करार देकर कैद कर लिया। ताकि वो यानी यूसुफ़ अपने भाई बनीयामीन को फिर एक मर्तबा देख सके ? सूरमा सम्सून कई बार बाँधा गया। लेकिन उस ने उन के मुज़हका उड़ाया जिन्होंने उसे रस्सियों

और बेद की छालों से बाँधा था। उस ने अपने बंधनों को इस तरह तोड़ा "जिस तरह सनके तार जिसमें आग से झुलसने की बू आए" तोड़े जाते हैं और खुदा ने उसे उस वक़्त तक ना छोड़ा जब तक उस ने खुदा को ना छोड़ा।

यर्मियाह रस्सियों से बाँधा हुआ ऐसे कुवें में फेंका गया था। जिसमें पानी के इवज़ कीचड़ था। लेकिन खुदा ने उसे रिहाई बख़्शी। खुदा ने दानियल के तीनों रफ़ीकों को बचाया जो बाँधे हुए आग की भट्टी में डाल दिए गए थे। इन सब के हाथ बाँधे गए लेकिन ये फ़क़त उन के जिस्मानी हाथ थे।

मसीह आग की भट्टी में उस चौथे शख्स की मानिंद था जिसकी सूत देवताओं के बेटे की सी थी। नहीं नहीं खुदा के बेटे की सी । मसीह के हाथों पर नज़र करो ! चार्ल्स बेल (Charles Bell.) अपने मशहूर-ओ-मारूफ़ मज़मून यानी "खुतबा बर्दस्ते इन्सानी" (Eassy on the Human Hand.) में कुदरत में अजीबो-गरीब तर्कीब की मौजूदगी का सबूत देते हुए हाथों की बनावट का बयान करते हुए लिखता है कि :-

दस्त-ए-इन्सानी की तर्कीब व साख़त में बड़े से बड़े हैवान के पंजों के मुकाबले में कैसी अजीब व ज़बर्दस्त ताक़त मौजूद होती है कि वो इन्सानी हुनरमंदी और दस्त कारी के किस क़दर मुनासिब ए-हाल है लेकिन येसु के हाथों का बयान कौन कर सकता है जो दीगर इन्सानी हाथों की तरह पढ़े जा सकते हैं और जिनसे ना फ़क़त उस के एक कामिल शख्सियत बल्कि कामिल औसाफ़ और चाल चलन के मालिक होने का पता चलता है। ये बंधे हुए हाथ कभी मासूम बच्चों के नन्हे नन्हे हाथों की मानिंद मुक़द्दसा मर्यम की छातीयों पर रखे जाते होंगे ये हाथ बढ़ई के काम को मेहनत व जफ़ा कुशी से अंजाम देते होंगे और शहर नासरत के दहक़ानों के लिए हलों को हल्का बना कर बैलों के लिए उनके बार को कम करते होंगे। हाँ ये हाथ कोढ़ीयों, लंगड़ों लुंजों और अँधों को शिफ़ा बख़्शने के लिए फैलाए जाते थे ये हाथ पुर मुहब्बत ओ पुर शफ़क़त थे। जब माएं अपने बच्चों को उस के पास लाती होंगी तो वो उन्हें गोद में लेकर उन्हीं हाथों को उन के सरों पर रख कर उन्हें बरक़त देता होगा। उस की उंगलियां उन के नरम नरम रुख़्सारों और उन के ख़ूबसूरत बालों को मुहब्बत से छूती होंगी । यही हाथ थे जिन्होंने हैकल में मिट्टी गूँध कर एक मादरज़ाद नाबीना शख्स की आँखों पर लगा कर उसे बीनाई बख़्शी थी। जिसके बाईस उन अक़ल के अँधों का ग़ज़ब और कीना और भड़का और जिनकी कोर बातिनी येसु के अजीबो-गरीब

कामों और उस के मोज़ाना कलाम के बावजूद भी बराबर कायम रही। यही वो हाथ थे जिन्होंने रस्सियों को कूड़ा बनाया और जायज़ और वाजिब गज़ब के साथ उन के लगाया जिन्होंने उस के बाप के घर को तिजारत का घर और चोरों का खोह बना लिया था। ये वो हाथ थे जिन्होंने मशरिकी मेहमान-नवाज़ी के दस्तूर के मुताबिक़ आखिरी इशा के मौक़ा पर यहूदाह इस्क्रियुती को जिसने उसे पकड़वाया था निवाला दिया था। इन्ही हाथों से येसु ने ये जान कर कि बाप ने सब चीज़ें मेरे हाथ में कर दी हैं और मैं बाप के पास से आया हूँ और खुदा ही के पास जाता हूँ तौलिया लिया और अपनी कमर बांध कर अपने शागिर्दों के पांव धोए थे बल्कि यहूदाह इस्क्रियुती के भी। यही वो हाथ थे जो सुनसान पहाड़ों की चोटियों पर दामें उठते थे। और आखिरकार यही हाथ बाग़ गतसमनी में जानकनी की हालत में दुआ व शफ़ाअत के लिए जोड़े जाते थे। इस वक़्त ये बंधे हैं और कुछ अरसे के बाद इन में मेखें ठोंकी जाएँगी । इन्ही हाथों से शुक्र करते हुए येसु ने रोटी तोड़ी और पियाला उठाया जबकि उसने फ़रमाया "लो खाओ ये मेरा बदन है.....तुम सब इस में से पी लो क्योंकि अहद का मेरा वो खून है जो बहुतेरों के गुनाहों की माफ़ी के लिए बहाया जाता है।"

अब उस आखिरी पेशीनगोई की तक़मील का वक़्त आ पहुंचा । उस का बदन जल्द तोड़े जाने को है और उस का अहद का खून गुनाहगारों के लिए बहाए जाने को है "और उन्हीं ने येसु को बाँधा।"  
**ऐ बाप उनको माफ़ कर कि ये जानते नहीं कि क्या करते हैं।"**

जब पौलुस के बरखिलाफ़ लोगों ने शोर मचाया कि उसे कोड़े लगाए जाएं तो रूमी पलटन के सरदार को मालूम था कि एक रूमी आदमी को बग़ैर फ़तवा लगाए कोड़े लगवाना खिलाफ-ए-क़ानून है "और पलटन का सरदार भी ये मालूम करके डर गया।" लेकिन ये लोग ना डरे।

इब्रानियों के ख़त के राक़िम ने मसीह के बाँधे जाने का बयान चशमदीद गवाहों से लिया था और उस ने अपने ज़माने के मर्दों ज़न का हाल लिखते हुए जो उन दिनों में अपने इमान के बाईस कैद किए जाते थे यूं फ़रमाता है :-

**"कैदीयों को इस तरह याद रखो कि गोया तुम उन के साथ कैद हो।"**

लेकिन मसीह को याद करने वाला कोई ना था यहां तक कि पतरस ने भी उस की कैद से शर्मा कर ये कहा **"मैं इस आदमी को नहीं जानता।"**



वो कौन था जिसने हमारे नजातदिहंदा के हाथों को पहले बाग़ गतसमनी और फिर कमरा अदालत में बाँधा? क्या रूमी सिपाहीयों ने उस के हाथ बाँधे? हाँ उन्होंने ऐसा किया महिज़ सिपाहीयों की हैसियत में अपना फ़र्ज़ अदा कर रहे थे। क्या यहूदाह ने अपनी क़बीह और शर्म नाक हरकत पर उस अलामत-ए-ख़ौफ़ का इज़ाफ़ा किया? हम ये पढ़ते हैं कि बाद में "हन्ना ने उसे बंधा हुआ काइफ़ा सरदार काहिन के पास भेज दिया" क्या पिलातुस उस जुर्म का मुर्तक़िब ना ठहरा जब उसने कैदी को बंधा हुआ रहने दिया और उस को कोड़े लगवाने का हुक़म दिया। जिसका अभी मुक़द्दमा भी ना हुआ था और ना जिस पर हनूज़ फ़तवा लगा था और जिस में उसने कोई क़सूर ना पाया था।

**देखो देखो उस मर्द-ए-ग़मनाक को !** यहां एक और प्रोमैथियुस (Prometheus)

कैद है ये वो है जो बग़ैर धोका और फ़रेब दिए आस्मान से आग, ज़िंदगी और नूर लाता है। ये वो है जो इन्सान को अज़सर नो पैदाइश और उसे आस्मान की बेहतरीन और बीश बहा नेअमतें इनायत करता है। प्रोमैथियुस को तो तीस साल की सख्त कैद के बाद हेर्कियुलिज़ (Hercules) ने रिहा किया था। मसीह को हन्ना, काइफ़ा, यहूदाह और मैंने और आपने बंधवाया था। वो अब तक कैदोबंद में मुब्तला है और उन्नीस सदीयों से बराबर अज़सर नौ सलीब पर खींचा जाता है। दस्त-बस्ता मसीह इस वक़्त हमारे पास मौजूद है राबर्ट किबल (Robert Keable) कहता है कि दस्त-बस्ता येसु नासरी अब तक करीब करीब नसफ़ दुनिया के गली कूचों में फिरता रहता है । जब कभी किसी जगह कोई बे-दस्त व पह लंगड़ा लुंजा बच्चा अपने वालदैन के गुनाह के बाईस इस रंज आलूद दुनिया में पैदा होता है तो मसीह को उस वक़्त फिर वो पियाला पीना पड़ता है जो टल नहीं सकता। हालाँकि उस के ऐसा करने से आखिरकार बाप की मर्ज़ी कि **"इन**

**छोटों में से एक भी हलाक ना हो"** पूरी होती है।

जहां कहीं कोई गुमराह और मस्लूल रूह भटकती फिरती है वहां ज़रूर कोई यहूदाह अपने खुदावंद को चंद नफ़रती दिरहमों के इवज़ पकड़वाता है। जब कभी मसीह का कोई लाफ़ ज़न शागिर्द यारों और दोस्तों की मजलिस में बैठ कर अपनी कम हिम्मती और कम एतिकादी की वजह से आजमाईश के वक़्त अपने खुदावंद का इन्कार करता है तो उस वक़्त मसीह फिर दुबारा अपने साथियों और दोस्तों के दरमियान ज़लील व रुसवा किया जाता है।

बल्कि ये ज़रबें रूमी सिपाहीयों की ज़र्बों से शदीद तर होती हैं। लेकिन जहां कहीं कसदन और इरादातन गुनाह किया जाता है वहां पर तो गोया मसीह को सलीब पर लटकाकर उस का दिल बिरछी से छेदा जाता है।

## (2)

"उन्होंने उस के मुँह फिर थूका" उसके जिस्म पर नहीं बल्कि उस के मुँह पर थूका । यूनानी में जो लफ़ज़ इस्तिमाल हुआ है वो बिलखसूस उस हरकत की कमीनगी पर-ज़ोर देता है । मरकुस और यूहन्ना ने जहां मसीह के थूक कर मिट्टी सानने और उस नाबीना शख्स की आँखों पर लगाने और उस को बीनाई बख़्शने का ज़िक्र किया है वहां एक और यूनानी लफ़ज़ इस्तिमाल किया है (मरकुस 7:33, व 8:23, व यूहन्ना 9:6) थूकना ज़माना-ए-कदीम से लेकर उस वक़्त तक दुनिया में बेइज़्जत करने के तरीकों में से एक तसव्वुर किया जाता है बाअज़ ऐसे जानवर हैं मसलन मेंढक बिल्ली और ज़हरीले फनीर साँप जिन्होंने शायद वहशी इन्सान को ये बेहूदा हरकत सिखाई हो।

मेरा एक हम ख़िदमत था जो मुद्दत दराज़ से मुल्क-ए-अरब में मिशनरी डाक्टर की हैसियत में ख़िदमत करके वहां के बाशिंदों के नज़दीक हर दिल-अज़ीज़ बन गया था। वो उस की इज़्जत व तोक़ीर भी करने लगे थे। एक रोज़ वो एक मकान में बैठा था कि सहारा से एक मुतअस्सिब वहाबी अंदर दाखिल हुआ। वो ईलाज की खातिर ना आया था बल्कि महिज़ इस लिए कि डाक्टर के मुँह पर थूके। मिशनरी ने फ़ौरन रास्त व वाजिब गुस्सा और तमाम मरीज़ों की रजामंदी के साथ उस शख्स को अपने जिस्मानी ज़ोर का ऐसा मज़ा चखाया जिसका वो बजा तौर पर मुस्तहिक़ था अहले-ए-मशरिक़ के नज़दीक उस से बढ़कर और कोई बेइज़्जती नहीं। अहदेअतीक़ में इस की मिसालें मौजूद हैं "तब ख़ुदा ने मूसा को फ़रमाया कि अगर उस के बाप ने उस के मुँह पर थूका होता तो क्या वो सात दिन तक भी शर्मिदा ना रहती ? (गिनती 12:14)। तो उस के भाई की जोरू बुजुर्गी के सामने उस के नज़दीक आए और उस के पांव से जूती निकाले और उस के मुँह पर थूक दे और जवाब देकर और कहे कि उस शख्स के साथ जो अपने भाई का घर ना बनाए यही किया जाएगा" (इस्तिसना 25:9) वो मुझसे घिन खाते वो मुझसे दूर भागते हैं और मेरे मुँह पर थूकने से बाज़ नहीं रहते" (अय्यूब 30:10)

इस पर हमें यशायाह नबी की पेशीनगोई का इज़ाफ़ा करना चाहिए जो उस ने मसीह के मुताल्लिक़ की थी जो सच्चाई और ख़ूबी से मामूर हो कर अपनी क्रौम की ज़िल्लत और बे इज़्जती की बर्दाश्त करता है "ख़ुदावंद यहोवा ने मुझको उल्मा की ज़बान बख़्शी ताकि मैं जानूं कि उस की जो थकामाँदा है कलाम ही से कुमक करूँ। वो मुझे हर सुबह जगाता है और मेरा कान उभारता है कि आलिमों की तरह सुनूँ। ख़ुदावंद यहोवा मेरे कान खोलता है और मैं बागी नहीं हूँ और ना बर्गशता होता। **मैं अपनी पीठ मारने वालों को देता और अपने गाल उन**

**को जो बाल को नोचते। मैं अपना मुँह रुस्वाई और थूक से नहीं छुपाता"** (यशायाह 50: 4 ता 6)

क्या मसीह ने अपनी होलनाक मौत की पेशीनगोई करते हुए खुद इस पेशीनगोई का हवाला ना दिया था ? देखो हम यरूशलेम को जाते हैं और इब्ने आदम सरदार काहिनों और फ़कीहों के हवाले किया जाएगा.....और वो उसे ठट्ठों में उड़ाएंगे और उस पर थूकेंगे और उसे कोड़े मारेंगे और क़त्ल करेंगे" (मरकुस 10:33-34)

यहां पर हम उस इतिहाई बेइज़्जती को देखते हैं जो हमारे नजातदिहंदा के साथ रवा रखी गई । सटाकर का क्रौल है कि इन्सान की फ़ित्रत में निहायत मकरूह और क़बीह सिफ़ात पाई जाती हैं। जिन पर नज़र डालना ही ख़तरनाक होता है। मसीह की सिफ़ात-ए-कामला व हसना के मुक़ाबला में ही उस के मुखालिफ़ीन की सबसे क़बीह-ओ-बदतरीन ख़साइल ज़हूर में आए। अब चूँकि वो इस दुश्मन के क़ब्जे में आ जाता है। जिसको वो बर्बाद करने आया था तो दुश्मन की तमाम क़बाहत व बदसुरती जाहिर होती है और वो अपना तमाम ज़हर उगुल देता है खूँखार दरिंदे की मानिंद दुश्मन अपने फाड़ डालने वाले पंजे से उस के गोश्त को नोचता है और अपनी नजिस और ग़लीज़ सांस उस के दहन मुबारक में फेंकता है।

इस का अंदाज़ा लगाना हमारे तसव्वुर व क़यास से बईद है कि उसके शाहाना मिज़ाज और उस की नाज़ुक तबीयत पर उस बे-हुरमती और रुस्वाई का क्या असर हुआ होगा। वो कौन लोग थे जो बार-बार उस ख़ौफ़नाक हरकत के मुर्तकिब हुए ?

इन्जीली बयान से मालूम होता है कि सबसे पहले यहूदी उल्मा और हादियान ए दीन और उन के बाद उन के मुलाज़िम और रूमी पलटन के सिपाही थे। जिन्होंने उसे बेइज़्जत किया" (मत्ती 26:67, व 27:30)

क्या अहले एशिया ! क्या अहले यूरोप और क्या अहले शाम सबने अपने गज़ब और हकारत को उस के पाक और मुबारक चेहरे पर थूक की सूरत में उगल दिया "ताकि हर एक का मुँह-बंद हो जाए और सारी दुनिया खुदा के नज़दीक सज़ा के लायक ठहरे "लेकिन सबसे पहले ये उस की अपनी क्रौम ने किया और वो जो उसे बखूबी जानते थे बल्कि अपनी कुतुब-ए-मुकद्दसा के पेश-ए-नज़र उस बेइज़्जती के मआनी से भी खूब वाकिफ़ थे।

ये इस अम्र का क्या ही उम्दा सबूत है कि गुनाह और बे-दीनी निहायत ही बुरी तरह इन्सानी अक़ल और इन्सानी ख्यालात के तनज़ुल और पस्ती का बाईस होते हैं। किसी पर थूकना हकारत का इज़हार है। उन के हसद और कीना का ज़हर उन के तारीक दिलों से बाहर निकला। इस नज़ारे की कैफ़ीयत जो नाक्राबिल-ए-बयान है किसी मशहूर मुसव्विर मसलन रीमबरनट (Rembrandt) की तसावीर की तारीक पाईन से मुशाबेह है यानी उस नज़ारा की तारीक पाईन निगाह इन्सानी दिल की जुल्मत और स्याही। उस की इंतिहाई शीतनीत और नेक और मुकद्दस लोगों के खिलाफ़ उस की बुज़दिलाना हकारत के मुतरादिफ़ है।

जब तक उन्होंने उसे गिरफ़्तार करके बांध ना लिया और उस के चेहरे को छिपा ना लिया वो उस पर थूक ना सके उस वक़्त से लेकर अब तक बराबर इसी तरह होता चला आया है। तारीख़ में ऐसी बेशुमार मिसालें मौजूद हैं जहां लोगों ने मसीह और उस के शागिर्दों के चेहरों पर थूका। शहीदों के बयान की खूनी दास्तान के एक एक वर्क पर ना फ़क़त जुल्म बल्कि हकारत और बेइज़्जती की अलामात मर्कूम हैं।

मुकद्दस पौलुस ने भी इस का एहसास करते हुए कहा :-

**"हम दुनिया के कोड़े और सारी चीज़ों की झड़न की मांद रहे"**

जिस वक़्त कलईर वो का बर्नाई ये गा रहा था :-

## इब्न ख़ुदा का जिस-दम आया ख़याल दिल में बाक़ी रहा ना कुछ भी रंज व मलाल दिल में

तो बाअज़ लोग सलीबी जंगों और इन्कुइज़िशन (Inquisition) यानी मज़हबी अदालतों की सख्ती और जुल्म के बाईस लोगों को मसीह के नाम पर कुफ़्र बकने पर मजबूर कर रहे थे। कितने मुन्किरों, काफ़िरों और दहरियों ने अपनी दिली हकारत और नफ़रत का गुबार येसु नासरी पर निकाला है। यहूदाह इस्क्रियुती के ज़माना से लेकर एक मुन्किर मसीह की अदावत से बढ़ी हुई किसी और मुखालिफ़ की अदावत अब तक देखने में नहीं आई।

नीरू ने मसीहीयों का ख़ून बहा कर सख्त जुल्म किया। लेकिन ये उस गैज़ व गज़ब की शिद्दत के मुकाबला में बिल्कुल हीच है जिसका मुज़ाहरा मुनहरिफ़ जूलियन ने मसीह के पैरों के बरख़िलाफ़ किया।" उसने पहले ख़ुद मसीह को कबूल किया लेकिन बादअज़ां मुर्तद हो गया।

गिबबन जो पहले प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिक था और आखिर कार दोनों से फिर गया उस की एक और मिसाल है ।

नीटशे (Nietzsche) तो यहां तक गिर गया कि उसने मसीह ख़ुदावंद के ख़िलाफ़ जो हर्ज़ा-सराई की है वो थूकने के मुतरादिफ़ है।"

मसीहीयत का तसव्वुरे ख़ुदा कि वो बीमारों का देवता और मिस्ल एक अन्कबूत है या ये कि वो रूह है ख़ुदा के तसव्वुरात में सबसे अर्ज़ल तसव्वुर है जिसका ख़याल भी शायद ही किसी के दिल में आया हो। शायद वो ख़ुदा के हम-सूरत इन्सान का पस्ततरीं दर्जा का तसव्वुर हो।

बरअक्स इस के का ख़ुदा ज़िंदगी को गैर-फ़ानी बनाए या उसे अज़सर नौ तब्दील करे वो ज़िंदगी की मतना कुज़ात की गहराइयों में गर्क हो गया। मैं मसीहीयत को एक सख्त लानत समझता हूँ और उसे इंतिकाम लेने की बदखू और एक अज़ीम कलबी बर्गशतगी से ताबीर करता हूँ। जिस के लिए कोई तदाबीर काफ़ी मुज़िर, मकरूह और फ़रेबदह साबित नहीं हो सकतीं।

मैं उसे इन्सानियत का दाइमी बदनुमा दाग़ तसव्वुर करता हूँ क्या इन्सानी हसद व कीना इस से तजावुज़ कर सकता है?

लेकिन हम देखते हैं कि उस मंज़र में जहां मसीह ज़लील और बे-इज़्जत किया गया। ऐसा शैतानी बुग्ज़ व किना कैसा बे-तासीर ठहरा। वहां उस ईलाही नजातदिहंदा की फ़तहमंदो ज़फ़रमंद खुद-आगही का इज़हार होता है। फ़तह का यकीन उस के मुबारक चेहरे से अयाँ है। उस ने फ़रमाया :-

**"जब मेरे सबब से लोग तुम्हें लान-तान करेंगे और सताएँगे और हर तरह की बुरी बातें तुम्हारी निस्बत नाहक कहेंगे तो तुम मुबारक होगे। खुशी करना और निहायत शादमान होना क्योंकि आस्मान पर तुम्हारा बड़ा अज़्र है इसलिए कि लोगों ने उन नबियों को भी जो तुमसे पहले थे इसी तरह सताया था।"**

उस शख्स को देखो ! उसने हमारी खातिर दुख उठाया और हमारे लिए नमूना छोड़ गया ताकि हम उस के नक्शे कदम पर चलें तुमने अब तक गुनाह के मुकाबला करने में अपनी जान नहीं लड़ाई । ज़रा उस पर गौर करो जिसने मलामत किए जाने पर खुद मलामत ना की।

एक लातीनी गीत का मज़मून मुंदरजा ज़ैल है :-

**"वह कौन है जो मुसीबतज़दा है ? मसीह जो कलाम-ए-खुदा और बाप की हिक्मत है। वो किस मुसीबत में मुब्तला है? कांटे, कोड़े, थूक और सलीब की बेइज़्जती में जब खुदा इस तौर से दुख उठा सकता है तो तू भी दुख उठाना सीख"**

---

जान कारडीलियर अपनी किताब अल-मारूफ़ गैर-फ़ानी हिक्मत की राह (The Path of Eternal Wisdom) में यूं लिखता है :-

"जो कुछ हम यहां देखते हैं वो गैर-फ़ानी और दाइमी हिक्मत का लब्बे-लुबाब और उसकी माहीयत है। ये वो राज़ है जो ज़िंदगी में पिनहां है। ये वो कलाम है जो सब चीज़ों के दरमियान अबद तक कायम रहेगा। फ़ित्रत और इल्म दफ़न और मज़हब । इल्म-ए-हुस्न-ओ-जमाल और मुहब्बत की मुख्तलिफ़ अन्वा व अक़साम की पुश्त में आख़िरकार उस ख़ल्क करने वाली बहादुरी और अलवालग़र्मी का मुलाहिज़ा करते हैं जो आख़िर दम तक बर्दाश्त करती है।

जब हमारी खातिर जानकनी और ज़ईफ़ की हालत में से गुज़री । उसने किसी बात से गुरेज़ ना किया। फ़क़त इसलिए कि हमारी गुमराह रूहें ज़्यादा रोशनी हासिल करें। वो वाजिब-उल-वजूद और नाक़ाबिल तलाश उलूहियत जिसके तसव्वुर में हम बसते हैं बरहना की गई और अपनी इस मख़लूक की कोर आँखों के सामने पेश की गई जो मुहब्बत करने या ना करने और नेकी व बदी दोनों के काबिल थी।"

---

## बाब पंजुम

### "और उन्होंने.....उसके कपड़े कुरआ डाल कर बांट लिए"

उन्होंने मसीह के कपड़े उतारे ! हमारे खुदावंद येसु मसीह के इस खौफनाक तजुर्बा का बयान तमाम इंजील नवीसों ने किया है। मरकुस जो खुद बाग गतसमनी से बरहना भाग गया था इस का बयान करता है। मती इस वाकिये को मसीहाई ज़बूर की पेशीनगोई का तक्मिला तसव्वुर करता है ।

यूहन्ना भी उस ज़बूर की तरफ़ इशारा करता है जिसमें दीगर तमाम तहरीरों की निस्बत मसीह की मौत और उस के दुख उठाने का बिल्कुल सही और दुरुस्त बयान दर्ज है:-

**"वो मेरे हाथ और पांव छेदते । मैं अपनी सब हड्डीयों को गिन सकता हूँ। वो मुझे ताकते और घूरते हैं।"**

ये तजुर्बा मसीह के दीगर तजुर्बात की निस्बत उस को ज़्यादा तकलीफ़दह मालूम हुआ होगा। खुसूसन इसलिए कि वो पाक ज़ात था और एक शानदार और बुजुर्ग शख़िसयत का मालिक था। मुकद्दस यूहन्ना फ़रमाता है कि :-

#### "उन्होंने उसके कपड़े उतारे"

वो अपनी माँ के पेट से बरहना बाहर आया और बरहना सलीब पर लटक रहा है!

पहले आदम ने अपने गुनाह के बाईस बाग-ए-अदन में जिस्मानी व अख़लाकी बर्हेनगी का तजुर्बा हासिल किया। दूसरे आदम ने गुनाह आलूद जिस्म की सूरत इख़्तियार की और उस की वजह से हमारी बर्हेनगी की शर्मिंदगी का तजुर्बा किया।

कलाम मुजस्सम हुआ और लोगों ने उस का जलाल देखा। उस की रुस्वाई और उस के नंग का मुलाहिज़ा किया लेकिन ये फ़िल-हक़ीक़त उस का जलाल था । मसीह येसु के कपड़े उतारे गए। यह उस की ज़िल्लत और बेइज़्जती की हद थी। उसे बरहना किया गया ताकि उस की रास्तबाज़ी के



सबब हम सफ़ैद पोशाक से मुलबबस हों और जिस वक़्त मौत हमें बरहना कर दे तो उस वक़्त हम अपनी बर्हेनगी के बाईस शर्मिदा ना हूँ।

तमाम रूमी मुसन्निक़ इस अम्र पर मुत्तफ़िक़ हैं कि सलीब पर लटकाते वक़्त मुजरिम के कपड़े उतार लिए जाते थे। हमें बताया जाता है कि अहले यहूद अपने मुजरिमों को एक लँगोट बाँधने की इजाज़त देते थे। इस हैबतनाक नज़ारे की तस्वीर उस ज़माना के मसुव्वारिन ने भी यूँ ही खींची है। लेकिन इस दर्द अंगेज़ तस्वीर पर हमें इस आखिरी और इतिहाई बेइज़्ज़ती का इज़ाफ़ा करना चाहिए। अपने पर्दा हया व शर्म को उस बेदर्दी से चाक होते देखकर कुल शुहदाए किराम भी ख़ौफ़-ज़दा होते थे बल्कि बाअज़ तो दिम सलीब उसके ख़याल ही से काँपते और घबराते थे। लेकिन मसीह ने उसे हमारी खातिर गवारा किया।

अरमीनीयों के क़त्ल-ए-आम में मसीही ख़वातीन को ये शर्मिदगी भी बर्दाश्त करनी पड़ी जो मौत की तकलीफ़ की निस्बत तल्ख़-तर थी। कोवनीटरी की गोडीवा हालाँकि इफ़्त की चादर ओढ़े थी लेकिन तो भी उसने महसूस किया कि गोया दीवार के तमाम शिगाफ़ उस पर नज़र जमाए हुए हैं। इसी तरह मसीह ने भी दुख उठाया। हम जो खुद अब उस तस्वीर में फीके रंगों का इज़ाफ़ा कर रहे हैं चाहिए कि हम बे-एअतिनाई से उसे नज़र-अंदाज ना करें।

गलगता में जब सलीब अपनी ले आया येसु  
तब उन्होंने उस को खुद मस्लूब कर के लटका दिया

उस के हाथों और पाओं में भी मेखें ठोकीं  
कलवरी उसे बनादी उस के कीलें ठोक कर

खारदार एक ताज उन्होंने उस के सर पर रख दिया  
ज़ख़म थे उन के शदीद उन से लहू जारी हुआ

उस ज़माना के थे कैसे वहशी और ज़ालिम बशर  
गोश्त-ए-इन्सानी की इन दिनों में कुछ कीमत नहीं थी

जब येसु आया था बर्मिघम पर ऐसे हाल में  
लोग उस के सामने से सब जा रहे थे गुज़र

गो कि लोगों ने उसे तकलीफ़ मुतलक़ ना दी  
लेकिन ऐसे तन्हा उसे मरने दिया

इस क्रदर बेरहम वहशी थे गो तब के लोग  
इसलिए ईज़ा उसे पहुंचाने से बाज़ ना आए

भागे वो बारिश में तन्हा भीगता उस को फ़क़त  
अपने अपने रास्तों पर उस तरीक़ा से गए

फिर भी चिल्लाता रहा येसु उन को कर माफ़  
क्योंकि वाक़िफ़ ही नहीं उस से कि क्या करते हैं वो

हो रही थी मूसलाधार एक तो बारिश उधर  
दूसरे है सख़्ततर सर्दी का आलम उस तरफ़

हो रहे हैं कपड़े भी येसु के बिल्कुल तर-बतर  
बारिश-ए-बारों से कोई भी ना थी उस की पनाह

लोगों के अंबोह के अंबोह उस के पास से  
बे किए परवाह कुछ उस की यूंही जाते हैं गुज़र

बल्कि उसको छोड़ जाते हैं तन-ए-तन्हा ही वो  
और येसु ऐसी हालत में लगा दीवार से

कलवरी के वास्ते रोता है चिल्लाता है

सलीबी दुख के दो पहलू हैं यानी जिस्मानी दर्द और ज़हनी तकलीफ़ जिस्म व रूह हर दो की  
जानकनी बेरहमी से कोड़े लगाना। हाथ और पांव में मेखें ठोंकना । आतिश-ए-प्यास का भड़कना।

खस्ता व ज़ख्मी आज़ा का बार जिस्म को उठाना और मखलिसी की तमन्ना ये तमाम जिस्मानी तकलीफ़ हैं।

अपनी क़ौम से रद्द किया जाना। गुनाहगारों में शुमार होना साथियों से ठट्ठों में उड़ाया जाना बरहना किया जाना। हदफ़ लानत व मलामत बनना फ़ौक़उल-फ़ितरत जुल्मत का तारी होना। ये सब रुहानी आज़ार हैं।

मसीह की निहायत दर्दनाक आवाज़ ने साफ़ ज़ाहिर कर दिया कि उस की रुहानी तकलीफ़ दरअसल उस की तमाम मुसीबत की जड़ थी।

जब हम मसीह की मौत के इस पहलू पर नज़र गाड़र डालते हैं तो हमारी तवज्जा तीन ख्यालात की जानिब मुल्तफ़ित होती है। सलीब पर उस के हया व हिजाब को बे-नक्राब किया गया। दुनिया अब तक उसे बरहना करती और फिर कुरआ डाल कर उस की पोशाक बांट लेती है। हर मसीही को भी इसी तरह सलीब पर बरहना होना है।

एक निहायत ही दक्कीक़-रस मुसन्नफ़ का क़ौल है कि :-

"आप तकलीफ़ उठाए बग़ैर मसीह से मुहब्बत कर नहीं सकते। ना ही रंज व अलम कि बर्दाश्त किए बग़ैर सलीब से आपका विसाल हो सकता है। ख्वाह आप चाहें या ना चाहें विसाल सलीब की कोशिश में आपके ज़रूर कोई ना कोई ज़ख्म आही जाएगा। और यकीनन ये मसीह के बे-हिजाब किए जाने पर ग़ौर व फ़िक्र करने का नतीजा है।

तजस्सुम के मआनी की गहराई का मुलाहिज़ा कलवरी पर ही होता है।

मुक़द्दस पौलुस के नज़दीक ये मसीह के रंज और उस की पस्ती की इंतिहाई मंज़िल थी। वो फ़रमाता है :-

**और "इन्सानी शकल में ज़ाहिर हो कर अपने आपको पस्त कर दिया और यहां तक फ़रमांबर्दार रहा कि मौत बल्कि सलीबी मौत गवारा की।"**

रोज़ अदालत में रास्त बाज़ों के सवाल का कि "ए मेरे ख़ुदा हमने तुझे कब नंगा देखा?" एक जवाब ये है। वो कुछ भी छिपा नहीं रखता। अय्यूब ने अपनी मुसीबत के वक़्त कहा "देख वो मुझे मार डालता है तो भी मुझे उसका भरोसा है।" और मसीह फ़रमाता है ख्वाह वो मुझे

सलीब भी दे दें तो भी मैं उन्हें अपने हाथ और पांव और अपना ज़ख्मी पहलू दिखाऊंगा।" मैं अपनी सब हड्डियों को गिन सकता हूँ। वो मुझे ताकते और घूरते हैं।"

यहां पर शाह जूलजलाल मौजूद है लेकिन अपनी शानो-शौकत के साथ नहीं बल्कि बर्हेनगी की हालत में खुदा मुजस्सम हुआ और सिपाहीयों काहिनों, अवाम के हुजूम, मुहब्बत करने वाले शागिर्दों औरतों बल्कि अपनी माँ पर भी यकसाँ ज़ाहिर हुआ। लेकिन अपने जलाल और अपनी हशमत के साथ नहीं। फ़क़त वो जिसने उसे देखा हो वहां वही ये अल्फ़ाज़ कह सकता है कि जो इब्रानियों के खत में मर्कूम हैं :-

**"इसलिए कि वो खुदा के बेटे को.....सलीब देकर अलानिया ज़लील करते हैं "**

ये कोई अजीब बात नहीं कि ऐसे खौफ़नाक आलम के वक़्त पर्दा बीच में से फट गया ! मसीह ने अपनी जान आजिज़ी और जानकनी के वक़्त ना सिर्फ सलीबी मौत पर गवारा की बल्कि उस खुशी के सबब जो उस की आँखों के सामने थी उस ने उस ज़िल्लत व रुसवाई को हीच समझा।

मुकद्दस लूका की इंजील के मुताबिक़ उस मौका पर हमारे खुदावंद ने फ़रमाया :-

**"ऐ बाप इनको माफ़ कर क्योंकि ये जानते नहीं कि किया करते हैं"**

उसके सर के ऊपर पिलातस ने ये मज़हकाखेज़ नविश्ता लगाया **यहूदीयों का बादशाह** बादशाह बगैर अर्गवानी पोशाक और उसका तख़्त क्या ? सलीब ! सलीब के नीचे सिपाही उस के कपड़ों के हिस्से करते और उस की पोशाक पर कुरआ डालते हैं। इन सब बातों के बाद किस तरह मुम्किन है कि कोई मसीह से शर्माए या दुबारा सलीब देकर अलानिया उसे ज़लील करे। वो नज़ारा आने वाले हालात का मज़हर था। क्योंकि इन उन्नीस सदीयों में बराबर मसीह को अज़सर-ए-नौ सलीब पर खींचा जाता और उसे अलानिया ज़लील किया जाता है।

मसीह का लिबास क्या है? ऐ खुदावंद मेरे खुदा तू निहायत बुजुर्ग है। तू हशमत और जलाल का लिबास पहने है। वो नूर को पोशाक की मानिंद पहनता है।" कायनात खुदा की हशमत का लिबास है। आस्मान एक पर्दा है जो उस के जलाल पर छाया हुआ है। अबर उस के रथ हैं। चूँकि मसीह खुदा से खुदा है इसलिए मुकद्दस यूहन्ना ये कहने से नहीं झिझकता **"जो कुछ पैदा हुआ उस में से कोई चीज़ भी उस के बगैर पैदा नहीं हुई ।**

कुदरत का तमाम हुस्न व जमाल उसका खल्क किया हुआ है। वो उस का हशमत व जलाल का बिन सिला लिबास है । हिक्मत व साइंस फ़कत उस ख़ूबसूरती और तर्तीब को दर्याफ़्त या उस की नक़ल ही कर सकती है जो अज़ल से कुदरत में पिनहां है क्योंकि मसीह के मुबारक हाथों ने उन्हें वहां रखा है। शफ़क़ "उस मुक़द्दस हस्ती का रंगीन लिबास है जो फ़कत एक घंटा हुआ क़त्ल किया गया।"

तमाम फ़ुनून-ए-लतीफ़ मसलन मुसव्विरी, संग तराशी, मौसीकी और फ़ने इमारत वगैरा सबकी लताफ़त और नफ़ासत का सबब मसीह की ज़िंदगी की मुबारक तासीर और उस की मौत ही है।

कई बार मुसव्विरी और माहिरीन मौसीकी ने अपने फ़ायदे और अपनी तलक़ीन की खातिर उस की पोशाक उतार ली और फिर उसे बरहना और ज़लील करके लटका रहने दिया। डार्विन अपने नज़रिया दरबाब "माहीयत अजनास" में इन्सान की माहीयत और कुदरत में उस का दर्जा दिखाने की कोशिश करता है लेकिन वो इब्ने आदम को बिल्कुल नज़र-अंदाज कर देता है।

मसीह की माहीयत क्या थी ? आलमे मौजूदात के पार एक ऐसा आलिम और भी है जो साइंस के फ़हम व इदराक से बाला-ए-तर है जब हम मख़्लूक को उस के ख़ालिक से जुदा कर देते हैं और मख़्लूक के तमाम क़वानीन और क़वाइद को ख़ालिक की हस्ती के बगैर समझना चाहते हैं तो क्या ऐसा करने से हमारा मुबल्लिग़-ए-इल्म बढ़ जाता है या कम हो जाता है। शायद लोगों ने यरूशलमे में मसीह को देखकर ये कहा हो कि देखो वो नासरत का रहने वाला जाता है जिसकी पोशाक बिन सिली है। लेकिन क्या ऐसे लोगों की रसाई उसके दिल तक हुई ?

महिज़ साइंस में अख़लाकी ख़ूबीयों को कोई क़दरो मर्तबा हासिल नहीं जिसमें टी. एडमीज़ कहता है कि "अगर हम साइंस के मुर्व्वजा तसव्वुरात को कामिल तौर से क़बूल कर लें तो हम इन्सानी ज़िंदगी की तमाम ख़ूबीयों को ज़ाए कर देते हैं ।

अन्वाअ व अक़साम के हुनर मुज़िर असर को ज़ाहिर कर रहे हैं। मसलन आजकल के क्रिस्सा कहानीयों और अफ़सानों ही को ले लो । अगर इन्सानी चल-चलन कुछ हकीकत ही नहीं रखता और शख़िसयत फ़कत एक फ़र्ज़ी शैय है और आज़ादी आमाल फ़कत एक ख़्वाब है और हम महिज़ दिमाग़ की तब्दीलीयों का एक सिलसिला हैं और बस इतनी ही वक़्त-ओ-मंज़िलत रखते हैं जितनी

एक बेचारे जुगनू को लकड़ी के खुशक कुंदे पर हासिल हो तो फिर कोई बताए कि इन के मुताल्लिक लिखने लिखाने से किया फ़ायदा ?

फ़लसफ़ा ने भी मसीह को बरहना कर रखा है और फ़लसफ़ादां अक्लमंदी से कहीं या बे-अक्ली से कुछ ऐसे मसाइल पर बेहस करते हैं जिनका जवाब देने के लिए मसीह ना फ़क़त आप आया था बल्कि जिनका जवाब वो बज़ात-ए-ख़ुद है। लेकिन बादअज़ां ये लोग अपने बेहस व मुबाहिसा से उसे ख़ारिज कर देते हैं। हाल ही में एक नई किताब "फ़लसफ़ा जदीद से मुताल्लिक मसाइल" शायी हो कर अमरीका के कॉलिजों में उमूमन इस्तिमाल हो रही है । उस ज़खीम किताब के 575 सफ़हों में एक जगह भी मसीह की जानिब कोई इशारा नहीं पाया जाता। हालाँकि वो फ़लसफ़ा के बुनियादी सवालात का जवाब देने आया था। मसलन हम कहाँ से आए हैं ? और हम यहां क्यों मौजूद हैं ? हमारी सही फ़ित्रत क्या है ? हमारा अंजाम क्या है ? ज़िंदगी क्या है ? मौत क्या है ? रंज व अलम का राज़ क्या है और इन्सानियत की उम्मीद क्या है ?

क्या स्पिनोज़ा (Spinoza), हीगल (Hegel), शोपनहोर (Shopenhauer), काण्ट (Kant), हक्सले (Huxley), स्पनसर (Spencer), बर्गसन (Bergson) और इसी किस्म के दीगर फ़लसफ़ी मसीह की पोशाक पर कुरआ नहीं डाल रहे?

जदीद इल्मे अख़लाक़ मसीह से पहाड़ी वाअज़ तो ले लेता है। लेकिन कलवरी पर चढ़ने से उसे साफ़ इन्कार है। वो जो बाग़ गतसमनी में कभी दाखिल ही नहीं हुए और मसीह की जानकनी से वाकिफ़ नहीं वो आलमगीर इखुवत और ख़ुदा की अब्बूवीयत के मुताल्लिक चर्ब ज़बानी तो बहुत दिखाते हैं । लेकिन वो उसकी असल कद्रो-कीमत से वाकिफ़ नहीं।

जदीद मसीही इलाहिय्यात, जदीद हिन्दूधर्म, जदीद दीने इस्लाम और जदीद यहूदियत सब के सब मसीह के अख़लाक़ को तो लेना चाहते हैं । लेकिन उस की उलूहियत का इन्कार करते हैं जो कुछ सच्चाई है। ख़ूबसूरती और शराफ़त इन जदीद मज़ाहिब और फ़लसफ़ों में मौजूद है वो ऐसी पोशाक है जो मुस्तआर ली हुई है। "जब सिपाही येसु को सलीब दे चुके तो उसके कपड़े उतार कर चार हिस्से किए, हर सिपाही के लिए एक हिस्सा ।"

अरबाब-ए-मईशत एक मुआशरी इंजील की मुनादी करते हैं। लेकिन ये भूल जाते हैं कि मुआशरी इंजील बैत-लहम में पैदा हुई थी। और इन्सानियत के हुकूक़ पर गलगता में मसीह के खून से मुहर

लगाई गई। सलीब जो पहले ज़िल्लत व रुसवाई का निशान थी अब मसीह के खून के बाईस रहम, सुलह व सलामती और मुहब्बत, दिलेरी ,शहादत व उबुदियत का निशान बन गई। पस ये बिल्कुल नामुम्किन है कि हम मुआशरी खिदमत का ज़िक्र करें और मसीह को नज़र-अंदाज कर दें।

जब कभी हम सलीब अहमर के शिफ़ा खानों और खैरात खानों में जाते हैं वहां मसीही रूह तो मौजूद होती है। लेकिन मसीह और उस के पैग़ाम का कोई निशान नहीं पाते । ये देखकर हम फ़ौरन मर्यम के हम नवा हो कर पुकार उठते हैं **"मेरे खुदावंद को उठा ले गए और मालूम नहीं उसे कहाँ रखा।"** निशान तो बिलाशक मौजूद है लेकिन मसीह को नज़र-अंदाज कर दिया जाता है । उस के लिए अंदर कोई जगह नहीं। हम ईद विलादत की मुबारकबादियां भेजने का एहतिमाम तो बड़े वसीअ पैमाना पर किया करते हैं। लेकिन इन रोक़ाओं पर जो उस की विलादत की खबर देते हैं उस की आमद का कोई पैग़ाम मौजूद नहीं होता। पोशाक तो मौजूद होती है लेकिन खुद मसीह गायब होता है। जब कि हनूज़ मसीह सलीब पर बरहना और तन्हा लटका होता है तो लोग उस की पोशाक पर कुरआ डालते हैं। और **"जब उस का ठट्ठा उड़ा चुके तो उस की पोशाक उस पर से उतार ली"** (मत्ती 27:31)

पस ये कोई ताज्जुब की बात नहीं कि आबाए कलीसया-ए-यूनान ने मसीह के दुख उठाने की नमाज़ की तर्तीब में हमारे नजातदिहंदा के तमाम मसाइब को जुदागाना शुमार करने और उन के ज़रीये से रहम की इल्तिजा करने के बाद ये इज़ाफ़ा किया है **"तू अपनी नामालूम तकलीफ़ों और मुसीबतों की खातिर जो तूने सलीब पर उठाई और जिनका हमें साफ़ व सरीहयह इल्म नहीं हम पर रहम कर और हमें बचा।"**

हमें भी इसी दुआ की ज़रूरत है। मसीही भी मसीह की मानिंद सलीब पर बरहना किया जाता है। शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता। हमारी अस्लीयत हमारी सलीब पर ही ज़ाहिर होती है। मुसीबत के बर्दाश्त करने से ही तजुर्बा हासिल होता है। मौत के उस होलनाक पुल पर से बरहना शख़्सियत के सिवा और किसी चीज़ का गुज़र नामुम्किन है । कार्लाइल इन्सानियत का नक्शा खींच कर दिखाता है जब बनी-नौ इन्सान को बरहना किया जाता है और उस की पोशाक की ज़ीनत उन से जुदा कर ली जाती है तो तमाम इन्सान एक दूसरे के हम-शकल होते हैं। यानी जब मर्तबा व मनसब-ओ-मंज़िलत की बुजुर्गी और हशमत इन्सान से दूर हो जाती है तो उन

में बाहम कोई फ़र्क बाकी नहीं रहता। इन्सान की असली तबीयत व माहीयत का इन्किशाफ़ फ़क़त रंज वालम के ज़रीये से होता है। आग में ताए जाने और सलीब पर खींचे जाने से ही इन्सान की हकीकत ज़ाहिर होती है। येसु मसीह, गेस्टेस (Gestas), और डसीमस (Desmas) तीनों सलीब पर लटक रहे हैं। एक गुनाह में मरा, एक गुनाह के एतबार से मुर्दा है और तीसरे के ज़रीये से गुनाह की मौत वाके हुई। एक काफ़िर है, एक ईमानदार है और तीसरा नजातदिहंदा है। एक ने मरकर अपनी ज़िंदगी ज़ाए की दूसरे ने ज़िंदगी हासिल की। तीसरे ने अपनी ज़िन्दगी को फ़िदये में दे दिया।

सलीब पर हम खुदा और उसकी मख़लूक को उनकी हकीकी सूरत में देखते हैं। मौत हमारी रूह के सिवा और सब कुछ हमसे जुदा कर डालती है। हमारी ज़ात पर पर्दा डालने वाली तमाम अश्या हमसे दूर हो जाती हैं। जब हम खुदा के हुज़ूर अदालत में हाज़िर होंगे। तब हम बर्हेनगी की हालत में होंगे। अय्यूब कहता है कि "अपनी माँ के पेट से मैं नंगा बाहर निकल आया और फिर नंगा वहां जाऊंगा।" जब हम मौत के दरिया से उबूर करते हैं तो जेल की आयत की तस्दीक होती है। और उस से मख़लूक़ात की कोई चीज़ छिपी नहीं बल्कि जिससे हमको काम है। उस की नज़रों में सब चीज़ें खुली और बेपर्दा हैं।"

लिहाज़ा मसीह को सलीब पर लटके हुए देख कर हम ये आरज़ू रखते हैं कि हम भी "अपने आस्मानी घर से मुलबबस हो जाएं ताकि मुलबबस होने के बाईस नंगे ना पाए जाएं।" मुबारक वो है जो जागता है और अपनी पोशाक की हिफ़ाज़त करता है ताकि नंगा ना फिरे। लोग उसकी बर्हेनगी ना देखें "मुकाशफ़ात की किताब की सात मुबारकबादियों में से इस मुबारकबादी की तरफ़ बहुत कम तवज्जा दी जाती है।

आस्मान में "पाना" मुसद्दिर के लिए कोई जगह नहीं क्योंकि वहां "बनना" मुसद्दिर उस की जगह ले लेता है। हम वहां पर कुछ पाएंगे नहीं बल्कि खुद एक ग़ैर-फ़ानी मीरास बिन जाएंगे। ये कौन हैं जो सफ़ैद जामे पहने खड़े हैं? ये अपनी रास्तबाज़ी में मुलबबस नहीं हैं और उन सफ़ैद लिबास वालों की अंबोह कसीर के ऐन दरमियान वो खड़ा है। जो सलीब पर बरहना किया गया था। लेकिन "अब पांव तक का जामा पहने और सोने का सीना बंद सीने पर बाँधे हुए था।"

जी टी वाट्स (G.T. Watts) ने जो एक मशहूर मुसत्वि़र गुज़रा है। फ़ेडरिक शील्डज़ (Frederick Sheilds) से दर्याफ़्त किया कि :-



"फ़ेथ" यानी ईमान की पोशाक के लिए कौन से रंग मुनासिब हैं। उस ने जवाब दिया "ईमान इन्सान के लिए जो हिस्सी अश्या से महसूर है आस्मानी चीज़ों का यक़ीन है। इसलिए नीलगूं आस्मान का रंग उस के लिए मौज़ूं है यानी उसके बाजू और उस के चोगा के लिए। लेकिन उस का बाकी लिबास बेदाग और सफ़ैद होना चाहिए और या इसलिए कि वो जो आमाल हसना के ज़रीये से रास्तबाज़ी को हासिल करना चाहते हैं। नाकामयाब होते हैं। क्योंकि ये "फ़ेथ" यानी ईमान का इनाम है "बादशाह के सफ़ैद लिबास से मुलब्स हो कर हम आखिर-ए-कार मुंदरजा ज़ैल अल्फ़ाज़ के रुहानी और ग़ैबी माअनी को समझेंगे यानी "उन्होंने उस के कपड़े आपस में बांट लिए.....

---

सलीब से मुताल्लिक जो ज़बूर है वो "ऐ मेरे खुदा ! ऐ मेरे खुदा ! तूने मुझे क्यों छोड़ा है" से शुरू होता है और बाअज़ तर्जुमों के मुताबिक "पूरा हुआ" से खत्म होता है। हम ये कह सकते हैं कि रंज व अलम की बईद अज़ कयास गहिराईयों के इज़हार के एतबार से इस ज़बूर से बढ़कर और कोई ज़बूर नहीं ये हमारे खुदावंद की जानकनी और हालत-ए-नज़ा की दर्दनाक तस्वीर है। उसके आखिरी कलिमात का बयान उसके आखिरी आँसूओं का अशकदान और उसकी खुशी के इख्तताम की यादगार है। शायद दाऊद और उसकी मुसीबत भी इस में किसी क़दर पोशीदा हों । लेकिन जिस तरह सितारे आफ़ताब की रोशनी में मादूम हो जाते हैं। इसी तरह जो उस में येसु को देख लेता है दाऊद उसके लिए ग़ायब हो जाता है बल्कि दाऊद की जानिब उसका ख़याल तक भी नहीं जाता। यहां हमारे सामने सलीब के जलाल और उस की तारीकी हर दो के बयानात मौजूद हैं। यानी मसीह की मुसीबत और उसका जलाल जो उस की मुसीबत का नतीजा है।

ए काश हमें फ़ज़ल इनायत हो कि हम उस अज़ीमुशान नज़ारा को देख सकें ! चाहे कि हम मूसा की मानिंद अपनी जूतीयां उतार कर कमाल आजिज़ी और खाकसारी से उस मज्मुर का मुताला करें क्योंकि हमारी कुतुब-ए-मुक़द्दसा में सबसे पाकतरीन मुक़ाम यही है (चार्ल्स. ऐच.सरजन)

## बाब शुशम

"ऐ मेरे खुदा ! ऐ मेरे खुदा तूने मुझे क्यों

छोड़ दिया है ?"

मसीह के हफ्त सलीबी कलिमात में फ़क़त एक यही कलिमा है । जिसे मरकुस, मती हर दो ने अपनी अनाजील में लिखा है। बाईसवीं ज़बूर का आगाज़ इन्ही अल्फ़ाज़ से होता है। लेकिन दोनों मुबशिशरों में से एक ने ये भी ज़िक्र नहीं किया कि किसी पेशीनगोई की तकमील है। सलीब पर कामिल छः घंटे सख़्त मुसीबत और अज़ाब उठाने के बाद हमारे नजातदिहंदा के लब हाय मुबारक से ये अल्फ़ाज़ निकले। उस का पहला कलिमा ये था "ऐ बाप इनको माफ़ कर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या करते हैं।" यानी माफ़ी के लिए दुआ। उसका दूसरा कलिमा सलामती और इल्मीनान का वाअदा है। "मैं तुझसे सच्य कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ फ़िर्दोस में होगा।" उस का तीसरा कलिमा अपनी माँ को तसल्ली देने और उसके लिए फ़िक्रमंद होने से मुताल्लिक है "ऐ औरत देख तेरा बेटा.....देख तेरी माँ" उस के बाद तारीकी तारी हो गई । फिर तीन आखिरी कलिमात से पेशतर चंद लम्हों के अरसा में यकेबाद दीगरे कहे गए उस ने निहायत दर्दनाक आवाज़ से चिल्ला कर कहा "ऐ मेरे खुदा ! ऐ मेरे खुदा तूने मुझे क्यों छोड़ दिया है?"

इन अल्फ़ाज़ में ज़रूर कोई खास ताक़त और जज़्बा मख़फ़ी है इसका सबूत ये है कि दोनों मुबशिशरों ने निहायत गौर व खोज़ के बाद मसीह के अल्फ़ाज़ ऐन उसी ज़बान में जिसमें मसीह ने फ़रमाए कलमबंद किए "एली एली लमा शबक़तनी" पाक कलाम में मसीहाई ज़बूर के इलावा ये अल्फ़ाज़ और कहीं नहीं पाए जाते। ये चिल्लाने की आवाज़ ऐसी भारी तकलीफ़ का इज़हार करती है जो ना तो उस से पेशतर कभी दुनिया में देखी गई और ना ही उस की मिसाल फिर कभी देखने में आएगी।

कारथोसीयह के लुडोल्फ (Ludolf) से चौधवीं सदी की एक रिवायत है मंसूब की जाती है कि हमारे मौला ने सलीब पर लटके हुए बाईसवीं ज़बूर की आयात को दोहराना शुरू किया और बराबर यही

करता रहा यहां तक कि वो इकतीसवीं बाब की पांचवीं आयत तक पहुंचे। "मैं अपनी रूह को तेरे हाथ में सौंपता हूँ।" इस में कुछ शक नहीं कि इस ख्याल के इलावा हम मसीह की ज़िंदगी उसके मसीहाई इल्म और उस की आगही की तशरीह दीगर कुतुब की निस्बत मज़ामीर में सबसे ज़्यादा वाज़िह और रोशन पाते हैं।

ये बिल्कुल सही है कि बाईसवें ज़बूर में मसीह की सलीबी मौत का बयान ऐसे अल्फ़ाज़ में मर्कूम है और हम सवाल करते हैं कि आया ये तारीख है या पेशीनगोई ? अलबत्ता स्ट्रास और इसी क्रिस्म के दीगर लोग कहते हैं कि इस वाक्ये का इन्जीली बयान महिज़ फ़र्जी है और दरहकीकत वकूअ में नहीं आया । बल्कि फ़क़त इसलिए लिखा गया कि अहद-ए-अतीक के और एक मुक़ाम का बहतरीक नबुव्वत पूरा होना साबित किया जाये।

लेकिन ईमानदार के लिए उस के नजातदिहंदा का ये कलिमा इन मसाइब का मज़हर है जो उसे बर्दाश्त करने पढ़ें और गुनाहगारों के लिए उसकी मुहब्बत का सबूत है। पस ये आवाज़ हमको और जुमला मुक़द्दसिन को ललकार ललकार कर कह रही है कि ज़ोरआवर बनो और जेल के अल्फ़ाज़ के मआनी को बखूबी समझो यानी उस की चौड़ाई और लंबाई और ऊंचाई और गहराई कितनी है और मसीह की उस मुहब्बत को जान सको जो जानने से बाहर है।"

अगर सलीब अहद-ए-जदीद की मर्कज़ी सदाक़त है तो ये आवाज़ इस सदाक़त की असल है और इसका ज़बरदस्त इज़हार । मसीह के दुख के वाक़ियात का बाअदब मुताला करने वालों के नज़दीक ये पाक तरीन मुक़ाम है।

सुपरजन ने किया ख़ूब कहा है "चाहिए कि हम उस निहायत अल्मनाक कलिमा के हर एक लफ़ज़ पर जुदागाना गौर ना करें । "तूने" मैं समझ सकता हूँ कि क्यों सरकश यहूदाह और बुज़दिल पतरस मुझे छोड़ गए। लेकिन तू ऐ ख़ुदावंद मेरे ख़ुदा ! मेरे वफ़ादार शफीक़ तू मुझे किस तरह छोड़ सकता है?" ये उस के मसाइब में से बदतरीन मुसीबत थी। दोज़ख की आतिश शोला-ज़न ख़ुदा और रूह की बाहमी जुदाई है। "मुझे" यानी अपने बेऐब, फ़र्माबरदार और मुसीबतज़दा बेटे को । तूने मुझे क्यों हलाक होने के लिए छोड़ दिया?"

अगर हम ताइब और मनफ़अल दिल से सलीब पर लटके हुए मसीह को देखें तो हम उस ज़बरदस्त मसले को समझ सकेंगे। मसीह इसलिए छोड़ा जाता है कि हमारे गुनाहों ने ख़ुदा और उसके

दरमियान जुदाई पैदा कर दी । **"क्यों?"** इस अजीबो-गरीब हकीकत का क्या सबब है कि खुदा ने अपने बेटे को ऐसी हालत और ऐसे नाजुक वक़्त में छोड़ दिया?

इसका सबब मसीह में मौजूद नहीं तो फिर वो छोड़ा गया" **"छोड़"** अगर तू मुझे तंबीह करता तो शायद मैं इस की बर्दाश्त कर लेता। क्योंकि तेरे चेहरे का जलवा मुझे नज़र आता रहता। लेकिन आह ! तूने मुझे बिल्कुल छोड़ दिया। क्यों तूने ऐसा किया ? **"दिया"** यानी फ़िल-हकीकत ऐसा हो गया। हमारा नजातदिहंदा उसके खौफ़नाक असर को महसूस करते हुए ये सवाल पूछता है यकीनन ये बिल्कुल सच्य है लेकिन कैसा पुरइसरार है। ये महिज़ छोड़ देने की धमकी ना थी जिसके बाईस हक़ तआला ने बुलंद आवाज़ से चिल्ला कर ये अल्फ़ाज़ कहे बल्कि उसने वाकई छोड़ जाने का तजुर्बा किया।

इस जिस्मानी, रुहानी और दिमागी तकलीफ़ का अंदाज़ा लगाने के लिए जो उस आवाज़ से आश्कारा है। हमें उन तमाम वाक़ियात पर दुबारा गौर करना चाहिए । सलीब दिया जाना ज़माना -ए-क़दीम के ईज़ा पहुंचाने के तरीकों में से सबसे ज़्यादा हैबतनाक तरीका था। और रूमी अदालत में ये जराइम की इतिहाई सज़ा मुतसव्वर होती थी। उसमें जिस्मानी बेइज़्जती और जानकनी शामिल थी। जानकनी इसलिए कि जिस्म को ग़ैर मामूली तौर से रखते और हाथ पांव में मेखें ठोंकने के बाईस सख्त दर्द होता। प्यास की आग भड़क उठती और आखिर कार ताक़त बतदरीज ज़ाइल हो जाती और मौत की नौबत आ पहुँचती।

इस किस्म की बेइज़्जती बिलखसूस क़ौम यहूद के नज़दीक बहुत ज़्यादा समझी जाती थी । क्योंकि वो सलीब को निहायत नफ़रत व हकारत की नज़र से देखते थे और उसको खुदा की लानत तसव्वुर करते थे (ग़लतीयों 3:13, व इस्तसना 21:22) इसके साथ ही वो तक्राबुल भी मलहूज़ रखना चाहिए जो मसीह की पाकीज़गी, उस की बेगुनाही और उसकी ईलाही शान और उस वहशयाना तम्सखर, मुज़हका और नफ़रत के तीरों की बोछार के दरमियान है जो तमाशाबिन ज़ेरे सलीब खड़े हो कर उस पर चिल्ला रहे थे बल्कि वो भी जो उस के दाएं और बाएं सलीब पर लटके थे। सरदार काहिन उस का ठट्ठा करते हुए उसे ले गए। "उसने औरों को बचाया अपने तई नहीं बचा सकता.....उसने खुदा पर भरोसा रखा है। अगर वो उसे चाहता है तो अब उसको छोड़ा ले।" इस के जवाब में एक मोज़ज़ाना तारीकी इस तमाम नज़ारा पर छटे घंटे से लेकर नौवें घंटे तक छाई रही कामिल तीन

घंटों की तारीकी के बाद अपनी जानकनी और अज़ाब और मुसीबत की जुल्मत के बाईस येसु बुलंद आवाज़ से चलाया "ऐ मेरे खुदा ! ऐ मेरे खुदा ! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

मेलनकथन और दीगर मुस्लिहीन इस आवाज़ का मतलब यूँ बयान करते हैं कि ये आवाज़ इस अम्र का बाईस है कि मसीह ने अपनी इन्सानी रूह में गुनाह के बरखिलाफ़ ग़ज़ब व क्रहर का एहसास किया था। बाअज़ का ये ख़याल है कि ये आवाज़ उसकी सियासी तदाबीर की नाकामयाबी का इज़हार थी। यानी एक मायूस हुब्बुल वतन की नाउम्मीदी की आवाज़।

बाअज़ दीगर अशखास जिनमें शलईरमीचर (Schleirmacher) भी शामिल है का ये ख़याल है कि ये अल्फ़ाज़ उस मातमी ज़बूर का इफ़ितताही कलिमा में जिसका इख़्तताम भी निहायत आला है और मसीह ने उसे अपने दावा मसीहाई के सबूत में दोहराया था।

मावर कहता है कि लोगों से रद्द किए जाने की वजह से "खुदा के" साथ उसकी यगानगी व रफ़ाक़त का एहसास एक लम्हा के लिए किसी क़दर कम हो गया था।"

ओल्हाउसन (Olhausen) कहता है कि ये "फ़िल-हकीक़त खुदा का उसे एक लम्हा के लिए क़सदन छोड़ना था।"

डाक्टर फ़लीब शाप (Philip Schaff) मसीह के इस तजुर्बा को बाग-ए-गतसमनी की जानकनी का उस पर निहायत शिद्दत से हमला-आवर होना और उस की कफ़फ़ारा दही की मुसीबतों का इख़्तताम कहता है। ये गुनाह और मौत का ईलाही तजुर्बा था। यानी नस्ल-ए-इन्सानी के लिए गुनाह और मौत के अंदरूनी बाहमी ताल्लुक और उनकी आलमगीर हकीक़त को एक शख्स ने दर्याफ़्त किया जो बिल्कुल बेऐब और पाक ज़ात था। ये तजुर्बा एक ऐसी पुर-इसरार और नाकाबिल-ए-बयान जिस्मानी रुहानी तकलीफ़ थी जो करीब-अल-वक़ूअ मौत के ख़याल बल्कि दरअसल मौत ही से कश्मकश करने के बाईस थी।

मौत गुनाह की मज़दूरी और तमाम इन्सानी तकलीफ़ों का इख़्तताम है हालाँकि मसीह उस से बिल्कुल आज़ाद था तो भी उसने उस बेमिसाल मुहब्बत के बाईस जो उसे इन्सान से है उसे इरादतन इख़्तियार कर लिया था।

यकीनन हम उसे अहले इस्लाम के ख़याल के मुताबिक़ मसीह का मौत से ख़ौफ़-ज़दा होना और अंजाम और नतीजा की बर्दाश्त करने में अख़लाक़ी दिलेरी की कमी नहीं कह सकते ।

जैन जीकोउस रूसो (Jean Jecques Roussean) जैसा काफ़िर भी ये कहता है कि "अगर सुकरात ने एक फिलासफर की मानिंद अपनी जान दी तो मसीह नासरी की मौत तो एक खुदा की मौत थी।"

हम मसीह के सलीब पर बुलंद आवाज़ से चिल्लाने के मआनी उस वक़्त तक हरगिज़ नहीं समझ सकते जब तक हम ये ईमान ना ले आएँ कि वो हमारे गुनाहों को लेकर सलीब पर चढ़ गया। और जब तक हम उस की मौत में अपने गुनाहों के फ़िदया के काइल ना हो जाएँ। लेकिन अगर हम ये मान लें कि मसीह खुदा का बर्षा था और खुदा ने उस पर हम सबकी बदकारीयाँ लादीं) तो हम उस तकलीफ़ के सरबस्ता राज़ को मालूम नहीं कर सकते हैं।

अगर मसीह की मौत फ़क़त एक शहीद की मौत थी जिसने किसी अज़ीमुश्शान हक़ीक़त के लिए अपनी जान दी तो ये आवाज़ बे मौक़ा और बेमहल ठहरती है । लेकिन अगर उसका मरना एक बेऐब का गुनाहगारों के लिए मरना था और अगर वो हमारे लिए गुनाह बना तो हमारे और तमाम दुनिया के गुनाह हमारे नजातदिहंदा के दहन-ए-मुबारक से ये तकलीफ़ और तन्हाई की आवाज़ निकलवाते हैं।

कफ़ारा किया है? कफ़ारा इन्सान के गुनाह के इवज़ खुदा के प्यारे बेटे की सज़ा है जो उस ने इन्सान का काइम मक़ाम हो कर खुदा के अदल व इन्साफ़ के तकाज़ा को बरकरार रखने के लिए उठाई।

अगर हम कफ़ारा की मज़क़ूरा बाला तारीफ़ को नापसंद करते हैं तो हम अज़ीमुश्शान हक़ीक़त को अशाए रब्बानी की नमाज़ों में जिसको हम मसीह की मौत की यादगारी के लिए बरकरार रखते हैं और जो कलीसिया में राइज हैं देख सकते हैं। बलीजीयम और हॉलैंड की इस्लाह याफ़ताह कलीसियाओं ने जो मसला कफ़ारा की तशरीह व तौज़ीह की है भला उस से ज़्यादा खूबसूरत तशरीह और क्या हो सकती है। यानी हम ईमान रखते हैं कि उसने अपने मुबारक बदन का सलीब पर ठोंका जाना इसलिए गवारा किया ताकि उस पर वो हमारे गुनाहों की तहरीर को सब्त करे। और कि उसने उस लानत को जो हमारा हिस्सा थी अपने ऊपर उठा लिया ताकि हमको अपनी बरकतों से मामूर कर दे। और कि उसने अपने आपको जिस्मानी और रुहानी तौर से दोज़खी आज़ार और मलामत के मातहत कर दिया। जब उसने सलीब पर लटके हुए बुलंद

आवाज़ से चला कर कहा "ऐ मेरे खुदा ! ऐ मेरे खुदा ! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" ताकि खुदा हमें ना छोड़े और हम खुदा के हुज़ूर मक़बूलियत हासिल करें।

मिसिज़ बर्नेटिंग (Mrs Browning) की नज़म के आखिरी अल्फ़ाज़ में जो काओपर (Cowper) की कब्र पर कुंदा हैं यही ख्याल ज़ाहिर होता है :-

एक मर्तबा इम्मानुएल के तन्हाई की हालत में "ऐ मेरे खुदा ऐ मेरे खुदा तूने मुझे क्यों छोड़ दिया" चिल्लाने की आवाज़ ने इस दुनिया को ता व बाला कर दिया। वो सदा गूँजे बगैर आस्मान पर पहुंची। वह उस गुमराह शूदा मख़लूक के दरमियान से उसके मुबारक लबों से निकली। वो इसलिए बाद अज़ां उस गुमराह शूदा मख़लूक के किसी फ़र्द को फिर ऐसे दर्दनाक अल्फ़ाज़ निकालने की ज़रूरत ना महसूस हो।"

"उसने हम सबकी बदकारीयाँ उस पर लादीं" यानी हमारे गुनाह, हमारे बदनुमा दाग, हमारी ज़बरमीं, हमारी पीशमानी, हमारी कोताहियों, हमारे कसूर, हमारी लविज़शें, हमारे जुर्म, हमारी खताएँ, हमारी खिलाफ़ वरज़ीयां, हमारी तकसीरें, हमारी जहालत, हमारी नजासत और हमारी बदकारीयाँ, हमको उस हकीकत के खौफ़नाक एहसास से घबराना नहीं चाहिए। हम कभी अपने गरूर और अपने तकब्बुर को नज़र-ए-हकारत से नहीं देख सकते। जब तक हम पहले ये महसूस ना करलें कि खुदा के साथ हमारा मेल फ़क़त इस सबब से मुम्किन है कि "वो जो गुनाह से वाकिफ़ ना था।" उसी को उसने हमारे वास्ते गुनाह ठहराया ताकि हम उसमें हो कर खुदा की रास्तबाज़ी हो जाएं। मसीह जो हमारे वास्ते लानती बना उस ने हमें मोल लेकर शरीयत की लानत से छुड़ाया।" वो फ़क़त हमारे ही गुनाह की खातिर नहीं बल्कि तमाम दुनिया के गुनाह की खातिर खुदा से छोड़ा गया। गोया ज़मानों के गुनाह और उन की शर्मिंदगी एक बहर-ए-बे-कराँ व मोज़ज़न पानियों की मानिंद उस पर से गुज़री। गहराइयाँ गहिराईयों को पुकारती हैं। वहशी इन्सान की तमाम ना-मुकम्मल नफ़सानी खाहिशात और उन की जहालत की तारीकी, बनी इस्राइल की खुदपसंदी और खुदअराई नैनवा और सूर की शेखी, मिस्र और बाबुल के जुल्मो सितम, फ़िर्की और गिरोहों की बे-इंसाफी, बाज़ारों के जुर्म व गुनाह क़हबा खाने और जंग के मैदान यहूदाह का पकड़वाना, पतरस का इन्कार और मसीह के दीगर शागिर्दों की फ़रारी, पिलातुस, हेरोदेस, और काइफ़ा की तकसीरें, बल्कि ज़माना गुज़शता, हाल व मुस्तक़बिल की बदकारीयाँ ये तमाम बातें उस की रूह को पस्त कर रही थीं जिसका नतीजा ये दर्दनाक सदा थी उस दिल को जो खुदा का मुक़द्दस था गुनाह



आलूदा दुनिया का तसव्वुर बाग-ए-गतसमनी में एक घिनौनी सूरत बन कर सता रहा था। सलीबी दुख निहायत तारीक और हकीकी था। मसीह की रूह का दुख फ़िल-हकीकत उस का असल दुख था।

फोरसिथ (Forsyth) कहता है कि मसीह का दुख उठाना और उस की मौत दरहकीकत मामूली दुख और मुसीबत से कहीं बढ़कर है क्योंकि वो अमल कफ़ारा था। तारीख कलीसिया (हर दौर रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट) के मुख्तलिफ़ मदरिज पर मसीह के दुखों पर किसी क़दर मुबालगा के साथ ज़ोर दिया जाता है। लेकिन असल में मसीह के दुख पर इतना ज़ोर नहीं देना चाहिए जितना इस अम्र पर कि उसने "क्या किया" मसीह का दुख उठाना एक ईलाही फैअल है। क्योंकि उसने ब-आसानी उस को कार-ए-अज़ीम में तब्दील कर दिया।

ये मुसीबत खुशी से गवारा की गई और पाक और मुक़द्दस इताअत व फ़रमांबदारी के ज़रीये से इन माहौल के तहत जो गुनाह और लानत के बाईस खुदा की पाकीज़गी के बमूजब इन्सान पर वारिद हुए तब्दील की गई। ये मुसीबत खुदा की पाकीज़गी और उसके हुस्न-ए-तक़द्दुस के सामने एक कुर्बानी थी। यहां तक तो ये सज़ा ठहरी लेकिन उस मुसीबत की शिद्दत और उस की इंतिहा नहीं बल्कि उस की इताअत और उस की पाकीज़गी ही इन्सान के लिए कफ़ारा ठहरी।"

इन्सान को उस आवाज़ की तशरीह करने से किसी क़दर ख़ौफ़ आता है। इन तमाम बातों के बावजूद जो इन्सान ने इस के मआनी को रोशन करने के लिए कही हैं ये एक चीसतान ही है। यानी कफ़ारा एक नाक़ाबिल-ए-हल हकीकत है। खुदा जो क़ादिर-ए-मुतलक़ और मुहब्बत करने वाला बाप है उसने क्यों अपने इकलौते बेटे को इस इंतिहाई तकलीफ़ की तारीकी में अकेला छोड़ दिया ? बाअज़ लोग निहायत जुरात और दिलेरी से ये कहते हैं कि मसीह खुदा के ग़ज़ब व क़हर का तख़ता मशक़ बना। अगर इस ख़याल की निहायत एहतियात से तरमीम ना की गई तो ये तसव्वुर बहुत ही तकलीफ़-दह साबित होगा। मुम्किन नहीं कि ईलाही सितम-रसीदा शख्स एक लम्हे के लिए भी बाप के ग़ज़ब का तख़ता मशक़ बना हो। वो आस्मान से फ़क़त इसी लिए आया ताकि बाप की मर्ज़ी बजा लाए और उस लाइंतिहा मुहब्बत के मक़सद को तबाह शूदा दुनिया को नजात बख़शने के कारे अहम के ज़रीये से अंजाम दे। ख़वाह ऐसा करने से उसकी पाक ज़ात को कितना ही दुख क्यों ना पहुंचे बल्कि बरअक्स इसके उससे पेशतर बाप की तवज्जा और उसकी मुहब्बत बेटे पर कभी इस से ज़्यादा मर्कूज़ ना थी।"

**"बाप मुझसे इसलिए मुहब्बत रखता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ"**

मसीह ने खुद पेश अर्जी वक़्त इस क़दर ये महसूस ना क्या होगा कि वो बाप की मर्जी बजा ला रहा है और इसलिए बाप उस से खुश होगा और उसे कभी अकेला ना छोड़ेगा।

इस दर्दनाक सदा में मसीह की तन्हाई का वो एहसास पिनहां है जो मुजस्सम होने के अय्याम में उस ने महसूस किया था और जिस का खातमा सलीब पर ही हुवा ।

**"मैंने तन-ए-तन्हा अंगूर को कोल्हों में कुचला।"** वो अपनी पैदाइश के वक़्त तन्हा था। नासरत में उसने अपने अय्याम में ज़िंदगी तन्हाई में बसर किए। बादअज़ां सहाराओं और पहाड़ों की बुलंद चोटियों पर उस ने तन्हाई के लम्हे गुज़ारे। उस के मुताल्लिक अवाम की ग़लतफ़हमी । उसकी पीशीवाई, उस की आजमाईश और उस की दुआएं ये सब उसकी तन्हाई का सबब थीं। वो अवाम के दरमियान रह कर तन्हा रहा पहाड़ पर अपनी सूरत के तब्दील होने के वक़्त वो अकेला ही था। यरूशलेम पर मातम करते और उस पर आँसू बहाते वक़्त वो अकेला ही था। बाग़ गतसमनी और कोह कलवरी पर वो अकेला ही रहा। **"सारे शागिर्द उसे छोड़कर भाग गए।" "उन्होंने मुझसे मुफ़्त अदावत की ।"** क्योंकि उसने किसी तरह का जुल्म ना किया और उस के मुँह में हरगिज़ छल ना था। लेकिन खुदावंद को पसंद आया कि उसे कुचले । उसने उसे ग़मगीन किया ।"

सलीब की तन्हाई का बयान करते हुए राबर्ट किबल कहता है :-

"मेरा ख़याल है कि वो यकीनी तौर पर अपने तजुर्बात-ए-ज़िंदगी को ज़ाहिर कर रहा था। ऐसे तजुर्बे जो उस वक़्त तक उस मर्द-ए-ग़मनाक ने ख़ामोशी के साथ हासिल किए होंगे। इसमें कुछ शक नहीं कि सलीब पर वो ज़्यादा शदीद मालूम हुए होंगे । वो तन्हा मर्द जो दुनिया से इसलिए रद्द किया गया क्योंकि वो गुनाह से मुबर्रा था। खुदा से इसलिए रद्द किया जाता है क्योंकि वो गुनाह बना। आह ! ये कैसी मुहब्बत है जो क्रियास से बालातर है।

आह ! उस की तन्हाई की फ़तह कैसी अजीबो-गरीब है ! उस नौवें घंटे में येसु हमारा खुदावंद दुनिया में ऐसी तन्हाई की हालत में था जो इन्सान के इदराक व फ़हम से बाहर है !"

---

“मुल्क-ए-मिस्र के बादशाही मकबरों के कुतबों और मनकोशात पर जगह जगह ज़िंदगी की कुंजी (मिफ़ताह-उल-हयात) का निशान देखा जाता है। अजीब बात है कि वो निशान सलीब की शकल में है। जब हम अपनी गोल मेज़ों के चौगिर्द बैठे थे तो यकायक हमारे दिलों में ये ख़याल गुज़रा कि सलीब ही मिफ़ताह-उल-हयात है और यहां ज़ेरे सलीब हमने तमाम अश्या की माहीयत पर गौर किया। हमने ये महसूस किया कि इसमें यानी सलीब ही में आलम मौजूदात की हकीकत हम पर रोशन होती है और अगर हमारी रसाई उस दुख और तकलीफ़ तक हो जाएगी जो सलीब में मख़फ़ी है तो हम ज़िंदगी के मआनी को समझ सकेंगे।

बला-रैब मसीह एक राज़ है और इस का हल उस की कुर्बान होने वाली रूह में मौजूद है और वो राज़ हल भी कहाँ होता है ? सलीब पर ! इसका समझना मसीह को समझना है। मसीह को समझना ख़ुदा को समझना है। और ख़ुदा को समझना आलम-ए-मौजूदात और ज़िंदगी के मआनी को समझना है। पस सलीब ही वो वाहिद कुंजी है जिसको अगर मैं अपने हाथ से जाने दूँ तो पशेमान हो जाता हूँ और कायनात का राज़ मुझ पर नहीं खुलता। लेकिन इस कुंजी को अपने कब्जे और अपने दिल में रखते हुए मैं उस राज़ को मालूम करने पर कादिर हूँ।”

(इक़तिबास अज़ **"क्राइस्ट एट दी राउंड टेबल" मिन तस्नीफ़ ई  
स्टैनली जोन्स)**

**बाब हफ़तुम**  
**"देखो ख़ुदा का बरी !"**

वस्तु एशिया से मसीह की एक जिला-वतन खादिमा जिसने अहले-ए-इस्लाम के दरम्यान निहायत तन वही से तवील खिदमत की है यूं कहती है :-

"हम यहां इब्तिदाई बातों को सबसे आगे रखना सीखते हैं और फिर बतदरीज निहायत अक्लमंदी और इस्तिक़लाल के साथ अपने वाहिद मक्सद तक पहुंचने की कोशिश करते हैं। मेरी राय ये है कि हमें बैरूनी दुनिया को दिखाये बगैर खामोशी के साथ ऐसा करना चाहिए। ताकि हम उस अंदरूनी दुनिया में जहां हमारे खुदावंद ने हमें रखा है वाकई कुछ खिदमत अंजाम दे सकें। आजकल मसीह के नाम की गवाही देने के लिए हमें आज़ादी हासिल है लेकिन अंदेशा ये है कि किसी वक़्त भी ये आज़ादी हमसे छिन ना जाये। लिहाज़ा हमें निहायत दानिशमंदी के साथ वक़्त को ग़नीमतजान कर इसका मुनासिब व वाजिब इस्तिमाल करना चाहिए"

क्या हम मसीह के गवाह होने की हैसियत में ये सवाल नहीं पूछ सकते कि ये मक्सद किया है? हमारे पैग़ाम का मर्कज़ किया है ? वो कौनसी हकीकत है जिसे हमें ज़रूर ज़ाहिर करना है ? वो कौनसा ऐसा सरीह, आला व बरतर और मुतहर्रिक पैग़ाम है जो हमें ग़ैर-मसीही दुनिया को पहुंचाना है ? क्या वो पैग़ाम यूहन्ना इस्तबागी के अल्फ़ाज़ से ज़ाहिर नहीं होता जो बनी इस्राइल के लिए एक नए पैग़ाम का पहुंचाने वाला था ? बनी इस्राइल और अहले इस्लाम में बहुत सी बातें मुशतर्का हैं । ब्याबान में पुकारने वाली एक आवाज़ ही पैग़ाम सुना रही है :-

## "यानी देखो खुदा का बर्दा !"

हेरोदेस की तेगे आबदार ने यूहन्ना को जल्द जाम-ए-शहादत पिलाया और यूं उस से मसीह के पाक नाम की शहादत देने की आज़ादी ले ली गई । लेकिन जब तक उसे ये आज़ादी हासिल थी उसने इब्तिदाई बातों को पेश रखा।

ये कैसर तबरयास के अहद का पंद्रहवां साल था। पिन्तुस पिलातुस यहुदियाह का हाकिम था। हेरोदेस गलील पर हुकमरान था और फिलिप्स और लाईसीयस (Lysias) चौथाई मुल्क के हाकिम थे। हन्ना और काइफ़ा के सपुर्द हैकल की इबादत और कुर्बानीयों का इतिज़ाम था।

रूमी सल्तनत में बगावत के आसार नमूदार थे। बहुत नए फिरके और जमातें बन गई थीं जो अपने अपने फ़लसफ़े पेश कर रही थीं। लेकिन उनमें से एक में भी कोई ज़िंदा जावेद उम्मीद ना थी। लिहाज़ा ख़ुदा का कलाम ब्याबान में यूहन्ना पर ज़ाहिर हुआ और उसने जो कुछ सुना उस की मुनादी की यानी **"देखो ख़ुदा का बर्‍या !"**

ये अल्फ़ाज़ यानी **"ख़ुदा का बर्‍या"** हमारे ख़ुदावंद के लक़ब की सूरत में दो मर्तबा मुक़द्दस यूहन्ना और एक मर्तबा पतरस के पहले ख़त में मज़कूर हैं। मुक़द्दस यूहन्ना इस लक़ब को तसगीर की सूरत में मुकाशफ़ा की किताब में अट्ठाईस मर्तबा इस्तिमाल करता है । अगर हम इन मुक़ामात का मुताला करें तो हमें मालूम हो जाएगा कि उस शागिर्द के नज़दीक जो ख़ुदावंद मसीह के सीने पर सर रखकर तकिया करता था और जो दीगर शागिर्दों की निस्बत उसकी नजात बख़्श मुहब्बत के राज़ से बेशतर वाक़िफ़ था इन अल्फ़ाज़ को किस क़दर एहमीयत हासिल थी। ये अल्फ़ाज़ सबसे पेशतर यूहन्ना इस्तबागी की गवाही में मज़कूर हैं जो उसने मसीह की निस्बत दी। **"दूसरे दिन उसने येसु को अपनी तरफ़ आते देखकर कहा देखो ये ख़ुदा का बर्‍या है जो दुनिया के गुनाह उठा ले जाता है"** उसके अगले दिन फिर यरदन के उस पार शायद बैत-अन्या बैत उबारा में यूहन्ना और उस के शागिर्दों में से दो शख़्स खड़े थे उसने ख़ुदावंद मसीह पर जो जा रहा था निगाह करके कहा **"देखो ये ख़ुदा का बर्‍या है।"**

पतरस इस लक़ब को बिल्कुल इसी तरह तो नहीं इस्तिमाल करता लेकिन गुनाहों से ख़लासी हासिल करने के मुताल्लिक़ ज़िक्र करते हुए यूं कहता है कि :-

**"ये फ़ानी सोने और चांदी के ज़रीया से नहीं हो सकती बल्कि एक बेऐब और बेदाग़ बर्‍या यानी येसु के बेशक़ीमत ख़ून से।"**

पतरस के जज़ीरे में यूहन्ना के मुकाशफ़ा के ज़रीया से दफ़अतन हमारी मुलाकात यहूदाह के कबीले के इस बब्बर से होती है जो **"ख़ुदा का बर्‍या भी है"** और मैंने उस तख़्त और चारों जानदारों और उन बुजुर्गों के बीच में गोया ज़बह किया हुआ एक बर्‍या देखा" चौबीस बुजुर्ग उस बर्‍या के सामने गिर पड़े (मुकाशफ़ा 5:8) और एक नया गीत गाने लगे और फ़रिश्ते जो शुमार में लाखों करोड़ों थे बुलंद आवाज़ से ये कहते सुनाई दिए **"ज़बह किया हुआ बर्‍या ही कुदरत और दौलत**

और हिक्मत और ताक़त और इज़्जत और तम्जीद के लायक़ है" तमाम मख़लूक़ात भी जवाब में बर्‍या की हम्दो इज़्जत के गीत गाती है।

फिर हम पढ़ते हैं कि बर्‍या ख़ुदा की सात मुहरों में से एक को खोलता है और ख़ुदा का ग़ज़ब पे-दर-पे ज़ाहिर होता है। यहां तक कि लोग ख़ौफ़-ज़दा हो कर चिल्ला कर "पहाड़ों और चटानों से कहने लगे कि हम पर गिर पड़ो और हमें उस की नज़र से जो तख़्त पर बैठा हुआ है और बर्‍या के ग़ज़ब से छिपा लो" (मुकाशफ़ा 6: 16)

नजात याफ़ताह लोगों की एक बड़ी जमात सफ़ैद जामे पहने तख़्त और बर्‍या के आगे खड़ी बड़ी आवाज़ से चिल्ला चिल्ला कर उस की तम्जीद के गीत गाती है। क्योंकि बर्‍या जो तख़्त के बीच में है वो उन की गल्लाबानी करेगा और ख़ुदा उनकी आँखों के सब आँसू पोंछ देगा (मुकाशफ़ा 7: 10 व 17)

आगे चल कर हम देखते हैं कि किस तरह वो बर्‍या के ख़ून के बाईस भाईयों पर इल्ज़ाम लगाने वाले पर ग़ालिब आए (12:11) और इसलिए भी कि इनके नाम बर्‍या की किताब हयात में लिखे गए थे (13:8) फिर हम बर्‍या को कोहे सिय्योन पर खड़ा देखते हैं (14:1) और वो जो औरतों के साथ आलूदा नहीं हुए बर्‍या के पीछे पीछे चलते हैं क्योंकि वो ख़ुदा और बर्‍या के लिए पहले फल होने के वास्ते आदमीयों में से ख़रीद लिए गए (14:4)

लेकिन वो जो उस हैवान की परस्तिस करते हैं बर्‍या के सामने आगे और गंधक के अज़ाब में मुब्तला होते हैं (14:10) वो जो ग़ालिब आए थे बर्‍या का गीत गाते हैं (15:3) वो जो उस हैवान के साथ हैं बर्‍या से लड़ते हैं। लेकिन बर्‍या उन पर ग़ालिब आता है क्योंकि वो ख़ुदावन्दों का ख़ुदावंद और बादशाहों का बादशाह है (17:13) इसके बाद आस्मान पर एक बड़ी भेड़ की आवाज़ ये कहते हुए सुनाई दी "हल्लेलुयाह इसलिए कि बर्‍या की शादी आ पहुंची (19:7) "मुबारक हैं वो जो बर्‍या की शादी में बुलाए गए हैं।" आखिरी अबवाब में तमाम जलाल और बुजुर्गी ख़ुदा के बर्‍या को दी गई है जो दुनिया के गुनाह उठा ले जाता है । **मुक़द्दस शहर बर्‍या की दुल्हन है।**

कुल रसूल बर्‍या के रसूल हैं उस में कोई मुक़द्दस नहीं क्योंकि ख़ुदावंद ख़ुदा कादिर-ए-मुतलक़ और बर्‍या उसका मुक़द्दस में (21:22) उस शहर में सूरज और चांद की कोई हाजत नहीं। क्योंकि ख़ुदा के जलाल ने उसे रोशन कर रखा है और बर्‍या उस का चिराग़ है (21:23) उसमें कोई दाखिल नहीं

हो सकता मगर वो जिसके नाम बर्रे की किताब-ए-हयात में लिखे हैं (21:27) आब-ए-हयात का दरिया बर्रे के तख्त से निकल कर सड़क के बीच में बहता है क्योंकि खुदा का तख्त बर्रे का तख्त है और उस के बंदे उस का मुँह देखेंगे और उस का नाम (यानी येशु का नाम) उन के हाथों पर लिखा हुआ होगा (22: 1-3) **"तू उसका नाम येशु रखना, क्योंकि वही अपने लोगों को उनके गुनाहों से नजात देगा।"**

पस कौन इन मुतअद्दिद मुकामात की दलायल और उनके बेशुमार सबूतों के बावजूद कह सकता है कि येशु मसीह खुदा का बर्रा हो कर गुनाहगारों का नजातदिहंदा, दुनिया का बचाने वाला, जलाल का बादशाह, आदिल मुंसिफ और क्रौमों का एक ही जोहर है और बाप की और उसकी एक ही सिफात हैं और उसकी और बाप की एक ही शान, बुजुर्गी और इख्तियार है।

यह तमाम बातें यूहन्ना इस्तबागी के अल्फाज़ में मख्फ़ी थीं जो उसने उस बेऐब येशु नासरी को देखकर यरदन के किनारे कहीं हालाँकि येशु अपने बपतिस्मा के वक़्त गुनाहगारों के साथ शुमार किया गया था। लेकिन बादअज़ां आस्मान पर से उस आवाज़ के आने के ज़रिये से कि **"ये मेरा प्यार बेटा है जिससे मैं खुश हूँ।"** उस को जलाल बख़शा गया (मती 3:17)

यक़ीनन यूहन्ना ने यह अल्फाज़ इस ख़याल से कहे होंगे कि लोगों के उनके हकीकी मआनी समझ में आ जाएँ। उसने यह अल्फाज़ चीसतान के तौर पर ना कहे बल्कि उसकी मुराद इन अल्फाज़ से मसीह मौऊद को ज़ाहिर करना था। ग़ालिबन उसका मतलब यशायाह के 53 तिरेपनवें बाब के यहोवाह के सादिक बंदे से होगा जो हमारी बदकारीयाँ उठाता है और बर्रे की मानिंद ज़बह करने को ले जाया जाता है।

अगर इन अल्फाज़ से महज़ येशु के हलीम और उसकी फ़िरोतनी की जानिब इशारा हो (जैसा कि जदीद-इलाहिय्यात के बाअज़ मोअतकिद अपनी तहरीरों में दिखाने की कोशिश करते हैं) और उन में उस के कफ़ारा और कुर्बानी का अंसर शामिल ना किया जाये तो उससे इसी किस्म के दीगर मुकामात का खून होता है।

गोडेट (Godet) अपनी राय ज़ाहिर करते हुए कहता है :-

"इसमें कुछ शक नहीं कि यूहन्ना को उस फ़र्क ने जो उसने येशु और अपने दरमियान देख लिया था रागिब किया हो कि अहदे-अतीक के जुमला अलकाब पर इस लक़ब को तर्जिह दे यानी **"ख़ुदा का बर्ी"** जो जहान के गुनाह उठाले जाता है।"

ये हैरानी की बात है कि ये लक़ब **"बर्ी"** जिससे उस मुबशिशर ने येशु को सबसे पहले जाना वही है जिसको किताब-ए-मुकाशफ़ात में तर्जिह दी गई है। वो उस सुर को जो एक मर्तबा उसके सुर में समा गया तादमे-मर्ग अलापता रहा।"

ये शीरीं राग ख़ुद मसीह की अपनी और अव्वलीन तालीम में सुनाई देता है यानी उसने फ़रमाया कि वो इसलिए आया कि अपनी जान औरों के लिए फ़िदया में दे और जिस तरह मूसा ने पीतल का साँप ब्याबान में लकड़ी पर उठाया इसी तरह इब्ने आदम भी हमारी नजात की खातिर सलीब पर चढ़ाया जाएगा।

मसीह का कोई लक़ब या नाम मुख्तलिफ़ कलीसियाओं की नमाज़ की किताब में इतनी मर्तबा नहीं आया जितनी दफ़ा ये नाम :-

**"ऐ ख़ुदा के बर्े जो जहान के गुनाह उठा ले जाता है अपना इत्मीनान हमें बख़्श।**

**ऐ ख़ुदा के बर्े जो जहान के गुनाह उठाले जाता है हम पर रहम कर"**

डेंटे (Dante) की तस्नीफ़ परगटूरियो (Purgatorio) में भी आवाज़ें यक ज़बाँ हो कर माफ़ी के लिए यही दुआ माँगती हुई सुनाई देती हैं **"ख़ुदा का बर्ी"** यही उन की तम्हीद है और फ़क़त इसी नाम को वो हम-आवाज़ हो कर गाती हैं।"

यूहन्ना इस्तबागी मसीह की शख़िसयत पर अपनी तवज्जा मर्कूज़ रखता है। वो सीगा वाहिद इस्तिमाल करता है और कहता है "देख" हालाँकि मसीह तमाम दुनिया के गुनाह उठा ले जाता है तो भी हम में से हर एक को अपने ज़ाती गुनाह के दूर करने के लिए शख़सी तौर पर मसीह को देखना है। **"वही हमारे गुनाहों का कफ़़ारा है और ना सिर्फ़ हमारे गुनाहों का बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का भी।"**

येशु नासरी कोई शाहाना लिबास और शाही ताज पहने हुए ना था। वो नज्जार का बेटा था। लेकिन यूहन्ना रसूल ने उसमें वो जलाल देखा जो बाप के इकलौते का था। उसने उसे फ़ज़ल व सच्चाई



से मामूर देखा। वो खुदा का बर्रा है। उसके वसीले से सब चीज़ें बनीं और कुल पर उस का इख्तियार है। खुदा ने अपने बेटे को दुनिया में भेजा और वो उसे प्यार करता है। उस कुर्बानी में इन्सान का कुछ खर्च नहीं होता। क्योंकि खुदा ही अपनी सबसे बेहतरीन चीज़ देता है।

**"देखो उस मर्द को !"** ये अल्फ़ाज़ पिलातुस ने येसु की जानिब इशारा करते हुए कहे जब उसने उसे कांटों का ताज सर पर रखे हुए ज़ख्मी और घायल और अर्गवानी चोगा पहने हुए देखा। यूहन्ना इस्तबागी ने मसीह की खिदमत के आगाज़ ही में उसके बपतिस्मा के बाद कहा **"देखो खुदा का बर्रा !"**

दुनिया उस वक़्त से लेकर अब तक उसे देख रही है। क्योंकि वो तमाम तारीख़ उफ़ुक़ पर मुहीत है। वो छुप नहीं सकता। लोग तो उस पर नज़र करते और कन्नी कतरा कर गुज़र जाते हैं या उसे देख कर आख़िर दम तक उस की पैरवी करते हैं। सटडरट कैंडी (Studdert Kennedy) येसु का बयान करते हुए उस का नक़शा बर्इना वैसे खींचता है जैसे मौजूदा दुनिया उसे देखती है। और कहता है :-

“वह अब भी अपनी खस्ता-हाल कलीसिया के साथ इसी तरह ज़लील व ख़वार नज़र आता है जो सब्त के रोज़ तो होशाना के नारे बुलंद करती है लेकिन जुमा के दिन बाग़ गतसमनी में उसे अकेला छोड़कर फ़रार हो जाती है जो बड़े होने के मुताल्लिक़ बेहस तो करती है लेकिन थे मांदों के पांव धोने से अहितराज़ करती है जो पतरस की मानिंद पहले इकरार तो करती है। लेकिन बाद में उसे पकड़वा देती है यानी अपने बेकस व लाचार ख़ादिमान-ए-दीन के एक गिरोह अज़ीम के साथ जिसमें मेरे जैसे कम अक़ल बेवकूफ़ लोग शामिल हैं। जो इंजील की मुनादी तो करते हैं लेकिन उस की तालीम का असर अपनी ज़िंदगीयों में दिखाने से कासिर हैं। जो मुहब्बत करने की कोशिश तो करते हैं लेकिन दरअसल अवाम के दिल पसंद नहीं हो सकते। वो अब भी वैसे ही काबिल-ए-तज़हीक़ मालूम होता है जैसा उस वक़्त था कि जब उस के सर पर कांटों का ताज धरा था और उस की ज़ख्मी पीठ पर जिससे सेल खून जारी था एक गलीज़ अर्गवानी चोगा पहनाया गया था जब उस के हाथ में तम्सखर के तौर पर असा के बजाय लाठी पकड़ाई गई थी। और उस के मुबारक चेहरे पर एक शराबी सिपाही का थूक बह रहा था। हाँ बर्इना वही मसीह जो तब था अब भी है। लेकिन मैं उससे खौफ़ खाता हूँ क्योंकि मुझे ख़याल है कि नई रोशनी का इन्सान अपने इतिहाई वहशीपन और बरबरीयत के बावजूद अपने दिल में उस से डरता है इसलिए येसु

इन्सान के दिल में एक किस्म की बेचैनी और इज़तिराब पैदा करता है वो इन्सान की खुद-एतिमादी को दूर करता और उस के गरूर और तकब्बुर की बेखकुनी करता है उसमें कुछ ऐसी कुदरत है कि साहिबे इक़तिदार भी उसे सज्दा करने को अपने तई मजबूर पाते हैं हालाँकि सज्दा का सज़ावार फ़क़त खुदा कादिर-ए-मुतलक है।"

मसीह वो बर्दा है जो खुदा कफ़ारे के लिए मुहय्या करता है ताकि वो कफ़ारे की कुर्बानी ठहरे। इब्रानियों के ख़त की सरीह तालीम के मुताबिक़ हम मसीह में अहदेअतीक़ की तमाम तालीम की तक्मील देखते हैं। जो गुनाह के कफ़ारे के लिए खून की कुर्बानी को लाज़िम करार देती है यहां पर तमाम इन्सानी रसूम और कुर्बानी से मुताल्लिक़ जुमला अहकाम का बुजुर्ग़ वाज़े और बानी मौजूद है यानी खुदा का बर्दा जो तमाम अक्वाम की आरज़ू और तमन्ना है।

इब्रानियों के ख़त का राक़िम कोह-ए-सीना के जलाल और कोह-ए-सिय्योन पर अख़लाकी उसूल और क़वाइद देते वक़्त मज़ीद जलाल का मुक़ाबला करते हुए एक हैरत-अंगेज़ मेराज को पहुंचता है और यूं फ़रमाता है :-

**"तुम जिंदा खुदा के शहर यानी यरूशलेम के पास और लाखों फ़रिशतों और उन पहलोठों की आम जमात यानी कलीसिया जिनके नाम आस्मान पर लिखे हैं और सब के मुंसिफ़ खुदा और कामिल किए हुए रास्तबाज़ों की रूहों और नए अहद के दर्मयानी येसु और छिड़काओ के उस खून के पास आए हो जो हाबील की निस्बत बेहतर बार्ते करता है।"**

खून के बहाए जाने से गुनाहों की माफ़ी किस तरह होती है? कुर्बानी की रस्म शुरू क्योंकर हुई ? इसके आलमगीर होने की क्या वजह है ? ना फ़क़त मुल्क-ए-शाम के मज़हब में बल्कि तमाम अक्वाम की कुर्बानी से मुताल्लिक़ रसूमात में हम कफ़ारे के तीन बुनियादी उसूल पाते हैं यानी फ़िदया इत्मीनान व दिल जमुई और आसूदगी व कफ़ाएत । ये सब सलीब पर मसीह की कुर्बानी में मौजूद हैं। मसीह इन ही मआनी में हमारे लिए मरा जिस तरह कोह-ए-मौर्या पर बेल इज़हाक़ के इवज़ कुर्बानी चढ़ा मसीह की मौत से कामिल तसल्ली और ख़ातिर जमुई हो गई यानी अदल व इन्साफ़ का तकाज़ा पूरा हुआ माफ़ी हासिल हुई । उससे भी कहीं ज़्यादा जितनी चौखट पर खून का निशान लगाने से हुई जब कि मलक-उल-मौत के मिस्र के पहलोठों को मारता हुआ गुज़र रहा था। मसीह की मौत काफ़ी है। वो दुबारा नहीं मरने का । उसने एक बार सलीब पर

कुर्बान होने से "एक कामिल और काफ़ी कुर्बानी गुज़रानी और तमाम दुनिया के गुनाहों के लिए तसल्ली बख़्श ज़बीहा पेश कर दिया।"

टरम्बल (Trumbell) "खून के अहद" के दिलचस्प मुताअले के दौरान में मुल्क-ए-शाम व रोम की इब्तिदाई तालीम का एक निहायत उम्दा खुलासा पेश करता है जो अहद-ए-अतीक की तालीम से बहुत कुछ मुताबिकत रखता है और वो कहता है कि "इन लोगों के नज़दीक खून बहाए जाने के बग़ैर गुनाहों की माफ़ी और खुदा से रिफ़ाक़त और इत्मीनान कलबी हासिल करना मुम्किन नहीं" यूहन्ना इस्तबागी के मसीह को खुदा का बर्षा कहने के मअनी को समझने के लिए हमें चाहिए कि अहद-ए-अतीक के सहाइफ़ का बग़ैर मुताला करें क्योंकि यही अहद-ए-जदीद के मौजू की बिना और असल हैं।

मुल्क-ए-शाम के इस वसीअ मज़हबी तसव्वुर को हम इस्लाम की कदीम रस्म यानी अक़ीका की कुर्बानी में पाते हैं। जिसको आँहज़रत ने जायज़ करार दिया। वो अनक़रीब आलमगीर रस्म है जो रासिख-उल-एतकाद व रिवायात पर मबनी है और मराको से लेकर मुल्क-ए-चीन तक राइज है। रिवायात से मालूम होता है कि आँहज़रत ने ना फ़क़त अपने दोनो नवासों इमाम हसन और इमाम हुसैन के लिए ही अक़ीका की कुर्बानी गुज़रानी बल्कि खुद अपने लिए भी (इन नफ़िसही) वो दुआ जो सात दिन के बच्चे के गुनाहों की मग़फ़िरत के लिए बर्षा या बक़्री के बच्चे कि कुर्बानी चढ़ाए जाने के मौक़ा पर मांगी जाती है मुंदरजा ज़ैल है :-

"ऐ खुदा मेरे बच्चे फुलां फुलां नामी के लिए ये अक़ीका की कुर्बानी गुज़रानी जाती है। उसका खून उसके खून के इवज़, उसका गोशत उसके गोशत के इवज़, उसकी हड्डी उसकी हड्डी के इवज़, उस का चमड़ा उसके चमड़े के इवज़ और उसके बाल उसके बाल के इवज़ ऐ खुदा इसे मेरे बच्चे को दोज़ख की आग से बचाने का फ़िदया बना क्योंकि फ़िल-हक़ीक़त मैंने उस की तरफ़ जिसने आस्मान व ज़मीन पैदा किए रूजू किया और मैं तुज़ पर ईमान रखता हूँ। मैं इनमें से नहीं जो तेरी ज़ात वाहिद में दूसरों को तेरा शरीक ठहराते हैं। वाक़ई मेरी नमाज़ और मेरा नज़राना बल्कि मेरी ज़िंदगी और मौत खुदा के लिए है जो मालिक-ए-हर दो-जहाँ है और लाशरीक है। मैंने यही तालीम पाई और मैं अहले इस्लाम में से हूँ।"

अहले इस्लाम में भी फ़सह की मानिंद उस ज़बीहा की कोई हड्डी नहीं तोड़ी जाती। मुक़द्दस यूहन्ना इस खास अम्र पर इशारा करता है जो नबुव्वत के तौर पर लफ़ज़ बह लफ़ज़ पूरा हुआ

(यूहन्ना 19:36) **क्योंकि उस ने कलवरी पर ख़ुदा के बर्रे को देखा जो जहान के गुनाह उठा ले जाता है।"**

अहले-इस्लाम और दीगर गैर-मसीही अक्वाम के लिए इंजील का पैगाम इसी मुख्तसर से जुमला में पाया जाता है। मसीह की सलीब इस्लामी अक्कीदे की जंजीर की गाईबी कड़ी है। मसीह की सलीबी मौत, उसकी ज़रूरत, उसके तारीखी वाकया होने की हकीकत उसके मआनी व मकासद, उसके नताइज, उसकी कुदरत और उसकी रिक्कत व दिलसोज़ी ये तमाम हकायक इस्लाम के अरबाब-ए-फ़िक्र व दानिश की चश्म-ए-बसीरत से पोशीदा रहे हैं। लेकिन ख़ुदा उन्हें बच्चों पर ज़ाहिर करता है।

जिस वक़्त मुतलाशी हक़ मसीह की सलीब के पास जाकर मस्लूब मसीह पर नज़र करता है तो उस वक़्त उस की तमाम मुश्किलात हल हो जाती हैं। इस्लाम में अफ़्आल तसव्वुफ़ भी बावजूद अपनी कमालियत के सलीब के राज़ को ज़ाहिर करने में कासिर रहे हैं। बहुत सी रूहों के होलनाक अंजाम का यही सबब है जो मंज़िल-ए-मक़सूद पर पहुंचे बग़ैर मुतवातिर भटकती रहती हैं। ग़ज़ाली, शोअरानी, जलाल उद्दीन अलरोमी, इब्न अलअरबी और इसी क़िस्म के बहुत से मुतलाश्यान-ए-हक़ एक तवील और खतरनाक राह पर सफ़र करते रहे हैं। गुनाह और तौबा मग़फ़िरत और ख़ुदा का दीदार हासिल करने के मुताल्लिक़ उनकी जो तालीम है अज़बस कि वो इंजील की तैयारी के लिए मुफ़ीद तो है। ताहम वो कलवरी की बुलंदीयों तक हरगिज़ हरगिज़ नहीं पहुँचती। यही वो मुक़ाम है जहां मुल्क अरब का "मुसिफ़ बेटा" ख़ुद भी राह से बिल्कुल गुमराह हो गया और बहुत से लोगों को गुमराह कर गया। अगर हम पैदाइश की किताब के अहद से लेकर कोह कलवरी के दामन तक तमाम राह खून के निशानों की पैरवी ना करेंगे तो ज़रूर गुमराह हो जाएंगे।

प्रिंसिपल फोरसिथ कहता है कि "रसूलों ने ख़ुदा से दुबारा मेल और सुलह का इन्हिसार हमेशा सलीब और येसु मसीह के खून पर रखा है। अगर कभी हम ऐसा नहीं करते (जैसा कि मौजूदा ज़माना में बहुत से लोग कर रहे हैं) तो अहद-ए-जदीद की ख़ौफ़नाक तौहीन का इर्तिकाब करते हैं। ज़माना हाज़रा के बहुत से कबीह और मज़मूम ख़यालात और उनके हज़रत रसां असर की वजह ये है कि वो असल रुहानी मज़हब होने का दावा करते हुए फ़क़त अहद-ए-जदीद ही को सिरे से नज़र-अंदाज करते हैं बल्कि उस के साथ ही तारीखी मसीहीयत को भी वो नाम निहाद

नक्काद आला कि जिनका इन्हिसार एक उसूल या अंसर पर है या अपनी ज्ञात माकूलात पर है या रुहानी तास्सुरात पर । हाँ यही वो हैं जो अहद-ए-जदीद को उस की मुकम्मल सूरत में तो नहीं मानते लेकिन उसके बाअज़ मुकामात की बहुत क़दरो एहतिराम करते हैं।

जब लोग मसीह की "सलीब के बगैर" इन्सानी जमात या इन्सानी ज़िंदगी की नजासत को पाकीज़गी में तब्दील करना चाहते हैं तो वो एक लाहासिल शैय के दर पे होते हैं । जब हम दुनिया के हक़ में खुदा के फ़ज़ल को पूरा होते हुए देखते हैं तो हम फ़ौरन ये कह सकते हैं कि तमाम हवादिस-ए-ज़माना बेहतरी के लिए हैं। खुसूसन जब हम नए ख्यालात और नए मवाक़े से दो-चार होते हैं । लेकिन जब यूहन्ना तौबा की मुनादी करता हुआ आया तो उस वक़्त पेशीन-गोइयों की तकमील का वक़्त था। रूमी सल्तनत और यहूदी कलीसिया में बगावत के आसार नुमायां थे। बहुत तैयारीयां हो चुकी थीं। निहायत इंतज़ार की साअत थी। साबिक़ नज़म व नसक़ के मुताल्लिक़ निहायत ना-उम्मीदी थी तो भी यूहन्ना ने उस नए ज़माना को एक जदीद तरीक़ नजात की मुनादी से शुरू किया। यानी "देखो खुदा का बर्रा जो जहान के गुनाह उठाले जाता है।"

हम साबिक़ा निज़ाम की नजात के आर्ज़ूमंद हैं। लेकिन निहायत लाज़िम है कि ये नजात मसीह के खून के ज़रीये से हो।

मसीह की सलीब ही दुनिया की उम्मीद है लेकिन मुतवातिर खतरा जो हमें दरपेश है ये है कि हम अपनी तजावीज़ पर बेशतर एतिमाद करते हैं और निहायत तकुब्बुराना अंदाज़ में उनका ज़िक़्र किया करते हैं लोगों से हम ये कहना तो भूल जाते हैं । "देखो खुदा का बर्रा !" पर दिखाते क्या हैं? अपनी बर्दारी ! नई तदबीरें ! नया मौक़ा !

एक अजीबो-गरीब तस्वीर जिसमें मसीह सलीब पर लटक रहा है और जो ये ज़ाहिर करती है कि उम्मीद फ़क़त इसी में है ऐसे हैरत-अंगेज़ तरीक़ पर और खूबसूरत रंगों में कफ़फ़ारा की आलमगीरी और उस की कुदरत का इज़हार करती है कि मुम्किन नहीं कि उसका नक्श ज़हन से मिट जाये । उस तस्वीर का क्रिस्सा यूं है कि बलटीर हिरोनी (Blater Herone) जो मुल्क अबीसीनिया के शहर अदीस अबाबा में दरबार-ए-खास व आम का सदर था उस ने सवीटज़रलैंड के एक मिशन स्कूल में तालीम पाई थी और अहदे जदीद का तर्जुमा भी अमहरी ज़बान में किया था दौरान जंग उसने बड़ी इज़ज़त व मर्तबा हासिल किया था। अक्वाम-ए-आलम के बाहमी अमन व सुलह के मुताल्लिक़ गौर करते हुए उसे ख्याल गुज़रा कि ये महिज़ मसीह की कुर्बानी के ज़रीये से मुम्किन है।

फिर उसने चाहा कि अपनी अकल के मुताबिक अपने तसव्वुर को खत व खाल की सूरत में ज़ाहिर करे चुनांचे उसने अपने ख्यालात शहर पैरिस के एक मशहूर मुसव्विर के सपुर्द कर दिए जिसका नतीजा वो मशहूर-ओ-मारूफ़ सलीब की तस्वीर है जो ख्यालात के एतबार से तो निहायत मुहीब है। लेकिन उस के मआनी बिल्कुल साफ़ व रोशन हैं।

तस्वीर मज़कूर निहायत दिलफ़रेब है और उसका पैग़ाम भी एक काइल करने वाला पैग़ाम है हमारा नजात-दिहंदा दुनिया के मशरिकी व मगरबी नसफ़ कुर्राह-ए-अर्ज़ के दरमियान सलीब पर लटक रहा है। उस की पाईन में बादलों से घिरा हुआ धुँदला आस्मान है। मुसीबतज़दा मस्लूब के सर पर ताज खारदार के चौगिर्द आने वाली फ़तह का हाला है। और वो दुनिया के दोनों हिस्सों पर नज़र कर रहा है जिनकी खातिर उसने अपनी जान दी। उस के ज़ख्मी हाथों से खून बह रहा है जिससे दुनिया के तमाम बर्-ए-आज़म और जज़ीरे सुर्ख हो रहे हैं ये मसीह के खून के वसीले से तमाम दुनिया की नजात की तस्वीर है जिसके नीचे तीन ज़बानों में ये आयत मर्कूम है :-

**"खुदा ने जहान को ऐसा प्यार किया कि उसने अपना इकलौता बेटा बख़श दिया ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक ना हो बल्कि हमेशा की ज़िंदगी पाए।"**

"सबसे आला और उम्दा खिदमत ये है कि हम मसीह मस्लूब की मुनादी करें। ख़वाह वो मुनादी खामोश मजमा में की जाये या मुनाज़राना रंग में। मगर वो इस यक़ीन के साथ कि फ़क़त यही ज़ख्मी व फ़गारदिलों को शिफ़ा और ईमानदार को उसके रहे-सहे गुनाहों से मख़लिसी देने की एक राह है और फ़तह उसी कलीसिया की है चाहे वो दुनिया के किसी गोशा पर हो या उन घरों में हो जो जहां मसीहीयत अपने उरूज व कमाल पर है। हत्ता कि हमारी मिशनों के दूर-दराज़ और पुरतार यक खतों में ही क्यों ना हो जो निहायत संजीदगी और अक़ीदत के साथ उस कदीम एतिक़ाद की तजदीद करे कि **"खुदा ने हम सबकी बदकारीयाँ उस पर लाद दीं"** और वो खुद उन अल्फ़ाज़ को खुशी और ख़ुरमी के उस नग़मा में कि जिसकी सदाए बाज़ग़शत से ज़मीन वा आस्मान गूँज उठेंगे । तब्दील कर देगा ।

"जिसने हमसे मुहब्बत रखी। जिसने अपने खून के वसीले से हमको हमारे गुनाहों से मखलिसी बख्शी और हम को एक बादशाहत भी और अपने खुदा और बाप के लिए काहिन भी बनाया। उसका जलाल और सल्तनत अबदलआबाद रहे" आमीन।

प्रिंसिपल जान कईरन्ज़। (John Cairns)

# बाब हशतुम

## "उन्होंने.....जलाल के खुदावंद को सलीब दी"

हालाँकि मुकद्दस पौलुस ने ये बात महसूस कर ली थी कि मसीह मस्लूब का पैगाम हलाक होने वालों के नज़दीक बेवकूफी है (1 कुरन्थियो 1:17) यहूदीयों के नज़दीक ठोकर और गैर क्रौमों के नज़दीक बेवकूफी है। (1 कुरन्थियो 1:23) लेकिन तो भी उसने ये मुसम्मम इरादा कर लिया कि मसीह मस्लूब के सिवा और कोई पैगाम ना दे। गो इसके बाईस उसे बहुत कमज़वी खौफ और तज़बज़ब की हालत में से गुज़रना पड़ा। (1 कुरन्थियो 2:3) सलीब का पैगाम एक राज़े अज़ीम है। हालाँकि पौलुस ने खुदा की हिक्मत और उस की कुदरत को ज़ाहिर किया लेकिन ये फ़क़त रूह के ज़रीये से हुआ जो खुदा की तह की बातें भी दर्याफ़्त कर लेता है (1 कुरन्थियो 4: 10) इसी ख़याल के ज़िमन में पौलुस ने इस जहान के सरदारों की निस्बत जिन्होंने खुदा की हिक्मत के भेद को ना समझा। निहायत बेबाकी से अपनी राय का इज़हार किया है। यानी

**"अगर समझते तो जलाल के खुदावंद को सलीब ना देते" (1 कुरन्थियो 2:8)**

एफ़सस की कलीसिया के बुजुर्गों को खिताब करते हुए मुकद्दस पौलुस उनसे भी बढ़कर दिलेराना और दिलकश अल्फ़ाज़ इस्तिमाल करता है **"पस अपनी और उस सारे गिला की खबरदारी करो। जिसका रूहुल-कुददुस ने तुम्हें निगहबान ठहराया ताकि खुदा की कलीसिया की गल्लाबानी करो जिसे उसने अपने ख़ास ख़ून से मौल लिया"** (आमाल 20:28) हम ऐसे दिलेराना इशारात यानी **जलाल के खुदावंद का सलीब दिया जाना और खुदा का ख़ून वगैरा** को सुनकर ज़रा झिझकते हैं। लेकिन जब हम इन अल्फ़ाज़ की सख़्ती को किसी क़दर दूर करने की कोशिश करते हैं तो हम देखते हैं कि यूनानी ज़बान की इस इबारत का बजुज़ उसके और कोई मतलब नहीं।

इस में कुछ शक नहीं कि अमरीका के नए तर्जुमा में (आमाल 20:28) बजाय खुदा के लफ़ज़ **खुदावंद** आया है। जो बिल्कुल गैर-ज़रूरी है । एक्सपोज़ीटरज़ बाइबल (Expositor's Bible) में



स्टोक्स कहता है "बाअज़ लोगों ने खुदा के इच्छा उसको खुदावंद बाअज़ ने उसके मसीह का लफ़्ज़ पढ़ा है। लेकिन नज़र-ए-सानी शूदा तर्जुमा में वीसटकट हार्ट (औरनील) के तराजिम को सही तस्लीम करते हुए महिज़ नक्कादाना वजूह के पेश-ए-नज़र उस की ज़ोरदार सूरत को कायम रखा गया है।

अगनेशीएस (Ignatius) ने मुक़द्दस पौलुस के ख़त लिखे जाने के पच्चास साल बाद अहले इफ़सुस को यूँ लिखा "ईमानदार खुदा के ख़ून के बाईस एक ज़िंदा आग की मानिंद भड़क उठते हैं।" इसके सौ साल बाद तरतोलियान भी यही अल्फ़ाज़ यानी "खुदा का ख़ून" इस्तिमाल करता है। दूसरे मुक़ाम में भी यूनानी मतन यकीनन सही है और यह अल्फ़ाज़ मुक़द्दस पौलुस ने इस वाक़ये के सत्ताईस साल बाद लिखे यानी अनाजील के राइज होने से भी पेशतर "अगर वो जानते तो जलाल के खुदावंद को सलीब ना देते।"

**"ये जलाल का बादशाह कौन है ? लश्क़ों का खुदावंद ही जलाल का बादशाह है"** (ज़बूर 24:10)

अहद-ए-अतीक और अहद-ए-जदीद दोनो में जलाल के खुदावंद से मुराद वही है जिसकी सिफ़ात में जलाल बादशाह है (ज़बूर 29:1+आमाल 7:2+इफ़िसियों 1:17 और याक़ूब 2:1) यानी वो खुदावंद जो अपने ज़ाती व तबई हक़ के मुताबिक़ जलाल का मालिक है ये ख़्याल इलाहियत की रु से बड़ी एहमीयत रखता है क्योंकि ये हमारे खुदावंद की उलूहियत पर इशारा करता है। इसी क्रिस्म के दीगर मुक़ामात मसलन (1 कुरन्थियो 11:20 व 1 कुरन्थियो 11:27) जहां **"खुदावंद की मौत"** और **"खुदा का ख़ून और उसका बदन"** मज़कूर हैं एहमीयत तो वैसी ही रखते हैं । लेकिन उनके अल्फ़ाज़ इस कदर मुहीब नहीं। अपनी ज़मीनी ज़िंदगी के अय्याम में भी हमारा नजातदिहंदा पौलुस रसूल के नज़दीक वही खुदावंद था जो अपने ज़ाती और तिब्बी हक़ के मुताबिक़ कामिल जलाल का मालिक है जैसे यूहन्ना के नज़दीक वैसे ही पौलुस के नज़दीक भी कलाम जो मुजस्सम हुआ "इब्तिदा में खुदा के साथ और कलाम खुदा था।"

बिला-रैब एक ईलाही हस्ती एक कादिर-ए-मुतलक़ मुनज्जी का सलीब पर कीलों से जकड़ा जाना एक राज़ है जिससे बढ़कर ज़मीन व आस्मान पर और कोई राज़ नहीं। लेकिन इबारत माफ़ौक़ से यही मआनी निकलते हैं। सलीब पर ही हम मसीह में खुदा की मुहब्बत व शफ़क़त को मुजस्सम सूरत में देखते हैं । उस मुक़ाम पर पहुंच कर और आखिरी तदबीर को पूरा होते देखकर हम सूबादार की मानिंद उस की उलूहियत के काइल हो जाते हैं । ये वो कार-ए-अज़ीम है जो फ़क़त

खुदा ही की शान के शायं हैं लेकिन मसीह ने उसे सलीब पर अंजाम दिया। और हर एक रूह जो उस के ज़रीये से जीत ली जाती है वो मसीह में हो कर खुदा के लिए जीती जाती है।

मसीह अपनी मौत और ज़िंदा होने के ज़रीये से पौलुस पर आलम-ए-मौजूदात का ऐन मर्कज़ साबित होता है वो तमाम मख्लूक़ात का मब्दा उनके बाहमी यगानगत व रफ़ाक़त का असल उसूल है। उनका अंजाम और उनके तमाम इसरार काहिल हैं (कुलुस्सियों 1:13 ता 18) इस मुक़ाम को पढ़ कर कोई शख्स इस अम्र से इन्कार नहीं कर सकता कि मसीह खुदा के जलाल में बराबर का हिस्सादार है।

इसी मुक़ाम के मुताल्लिक़ जहां खुदा के बेटे की उलूहियत पर इशारा है कि जिसकी मुहब्बत में हमारी नजात है। जान कारडीलईर रोमन कैथोलिक सूफ़ी यूं गोया है "अगर सलीब की कुछ हकीक़त है तो ये कि वो दुनिया के वजूद की बुनियाद है वो आलम-ए-मौजूदात में एक हयूला से लेकर दूसरे हयूला तक जाती है और दुनिया की हदूद को बाहम मिलाती है और उन्हें अपनी ज़ख्मी हाथ दिखाती है ज़िंदगी के शोबा जात में तमाम तरक्की मुहब्बत और रंज-वालम की उस बाहमी टक्कर से पैदा होती है जो उस की असलीयत का राज़ है।

मसीह की पुर-इसरार सऊबत हमारी मुसरत व खुशी की बीना है। ये बात निहायत हैरत-अंगेज़ मालूम होती है कि किस तरह कोई माहिर इल्म-उल-हयात मसीही मज़हब के बजाय किसी दूसरे मज़हब का पैरौ हो। जिस हाल कि आलम-ए-मौजूदात के हर एक तबक़ा में मसीहीयत का ज़बरदस्त और गहिरा निशान यानी सलीब मौजूद पाता है और वो हर जगह देखता है कि दुख जदूद-ओ-जहद और कुर्बानी का उसूल नई पैदाइश के यौमिया अमल में भी वैसे ही कारफ़रमा है जैसे कि जिन्स के बतदरीज कमाल को पहुंचने के लिए उनका होना शर्त है।

बुलंदीयों और पस्तियों में, अंदर, बाहर जिधर नज़र दौड़ाओ हर जगह सलीब मौजूद है। हम मसीह की मौत में फ़क़त खुदा की बेहद मुहब्बत ही को नहीं देखते बल्कि उसके बेहद रंज-वालम और उस की रहमत का भी मुलाहिज़ा करते हैं। एक सौ तीसरे ज़बूर में ये अल्फ़ाज़ मर्कूम हैं :-

**"जिस तरह बाप बेटों पर तरस करता है ।" और ऐसी मुक़ाम में जेल के अल्फ़ाज़ भी दर्ज हैं "पूरब पच्छम से जितना दूर है। उतनी दूर तक उसने हमारी ख़ताओं को हमसे दूर किया।"**

सलीब पर गम से और मुहब्बत बाहम मिलकर बहते हैं यानी खुदा का रंज-वालम और उसकी की मुहब्बत।

मसीह की उलूहियत की तालीम की जड़ में कफ़ारा की तमाम मसीही तालीम मौजूद है। अल्ल-उल-ज़िक्र के मुताल्लिक हमारे एतिकाद ही से आखिर-उल-ज़िक्र के मुताल्लिक हमारे ईमान का अंदाज़ा लगाया जाता है। महिज़ इन्सान दूसरे इन्सान के गुनाह की सज़ा नहीं उठा सकता। मसीह की शख़्सियत की बुजुर्गी व शान की अज़ीम हकीकत के मुक़ाबले में उसके फ़िदया कफ़ारा होने के मुताल्लिक तमाम एतराज़ात यक कलम व माददुम हो जाते हैं।

डाक्टर ग्रेशिम मीचन रकम तराज़ हैं कि "ये बात बिल्कुल सही है कि मौजूदा उलमाए तिब्बयात के तसव्वुर का मसीह हरगिज़ दूसरों के गुनाहों की सज़ा उठाने के काबिल नहीं हो सकता। लेकिन इसमें और जलाल के खुदावंद में आस्मान व ज़मीन का फ़र्क ही अगर मौजूदा मुखालिफ़त के मुताबिक़ काइम मक़ाम कुर्बानी का ख़याल बिल्कुल फ़िज़ूल है तो मसीही तजुर्बा के क्या मअनी जो उस पर मबनी है ? मौजूदा आज़ाद ख़याल कलीसिया के नज़दीक तजुर्बा की बहुत क़दर-ओ-मंज़िलत है।

फिर वो हकीक़ी मसीही तजुर्बा जो फ़क़त उस ईमान का नतीजा है। जो कलवरी के पास मिलता है कहाँ से मयस्सर होगा? वो इल्मीनान फ़क़त उस वक़्त हासिल होता है जब इन्सान ये महसूस कर लेता है कि खुदा से मेल पैदा करने में उसकी तमाम कश्मकश और नजात हासिल करने से पेशतर शरीयत के अहक़ाम की तामील करने में उस की वसई व कोशिश बिल्कुल बेकार व बेसूद ठहरती है और यह जान लेता है कि खुदावंद मसीह ने सलीब पर उस के इवज़ जान देकर उस दस्तावेज़ के नक़श को जो उस के बरख़िलाफ़ सब्त हो चुकी थी मिटा दिया। कौन उस तसल्ली और खुशी के उमुक़ का अंदाज़ा लगा सकता है जो उस मुबारक इल्म से हासिल होती है ! क्या कफ़ारा फ़क़त एक नज़रिया ही नज़रिया है या इन्सान के तसव्वुरात की फ़रेबखुर्दगी ? या क्या ये वाकई एक ईलाही सदाक़त है?"

जब पौलुस रसूल मसीह के सलीबी दुख का बयान इस तौर पर करता है जिसका हम ऊपर ज़िक्र कर चुके हैं तो वो ऐसे बात करता है कि गोया वो आस्मानी हकीक़तों का बयान कर रहा है। और "खुदा की तह की बातें" कहता है। (1 कुरन्थियो 2:10) ये इसरार इस क़दर अमीक़ हैं कि इन्सानी

फलसफ़ा और हिक्मत की उस तक रसाई नहीं। ये इस क़दर बुलंद हैं कि इन्सान का इदराक और उसकी अक़ल उस तक परवाअज़ नहीं कर सकती।

बहर-ए-काहड़ल के बाअज़ हिस्से इस क़दर गहरे हैं कि आला से आला आलात भी उसकी तह तक पहुंचने में कासिर रह गए। अजराम-ए-फल्की के दरमियान बाअज़ ऐसे सितारे और सय्यारे हैं जहां ज़बरदस्त तरीन दूरबीन के ज़रीये भी चशम इन्सानी की रसाई मुम्किन नहीं। यानी "ऐसी चीज़ें जो ना आँखों ने देखीं ना कानों ने सुनीं ना आदमी के दिल में आईं।"

लेकिन ख़ुदा उन्हें अपने रूह के वसीले से बच्चों पर ज़ाहिर करता है और हालाँकि हम उन्हें समझ नहीं सकते तो भी हम शुक्रगुज़ारी और ख़ाकसारी की रूह से मामूर हो कर ख़ुदा के हुज़ूर सज्दे में गिर पड़ते हैं। सलीब पर हमारे ख़ुदावंद की ज़ात की दोनो फ़ितरतें एक दूसरे से जुदा ना हुईं। उस की हकीक़ी इन्सानियत और उसकी ज़ाती उलूहियत बाहम मखलूतना थीं बल्कि दोनो जुदा जुदा और सरीह तौर पर मौजूद थीं। "ख़ुदा ने मसीह में हो कर अपने साथ दुनिया का मेल मिलाप कर लिया।" उस कुर्बानी के ज़रीये से मसीह फ़क़त ख़ुदा की मर्ज़ी को ही नहीं बजा ला रहा था बल्कि ख़ुदा मसीह में हो कर इन्सान का अपने साथ मेल मिलाप कर रहा था ये बह अल्फ़ाज़ दीगर अपना मेल मिलाप इन्सान से कर रहा था।

मसीह की मौत ख़ुदा के हुक्म की तामील के मुताबिक़ किसी बहादुर की मौत ना थी बल्कि वो दुनिया के गुनाहों के लिए ख़ुदा के बेटे की मौत थी। इन्जीली बयान के बमूजब मसीह ने अपनी ज़िंदगी के उस मौके पर अपना जलाल साफ़ और बैयन तौर से ज़ाहिर किया। ऐसा जलाल जो बाप के इकलौते का जलाल था और जो फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर था। कफ़़ारा कामिल उलूहियत का फ़ेअल है। क्योंकि बाप ने दुनिया से इस क़द्र मोहब्बत की कि अपने बेटे को बख़्श दिया। ख़ुदा बेटे ने दूसरों की ख़ातिर अपनी जान फ़िदया में दी। और ख़ुदा रूहुल-कुददुस ने मसीह को अपनी हुज़ूरी और अपनी कुदरत से मामूर कर दिया ताकि वो मौत की बर्दाश्त कर सके और अपनी मुबारक क्रियामत के ज़रीये से उस पर ग़ालिब आए (रोमीयों 1:4)

ना सिर्फ़ बैत-लहम में बल्कि कलवरी पर भी हम फ़रिशतों के हम-नवा हो कर ये गा सकते हैं।  
**"ख़ुदा को आस्मान पर तारीफ़ । ज़मीन पर सलामती और आदमीयों में रजामंदी हो।"**

फोरसिथ कहता है पस इसलिए हम जेल की इबारत के अमीक मआनी को समझने की कोशिश करें।" खुदा मसीह में हो कर मेल मिलाप कर रहा था।" मसीह के जरीये से नहीं बल्कि खुद मसीह की सूरत में मौजूद हो कर वो अपने मेल मिलाप के काम को अंजाम दे रहा था। ये काम तीनों अकानीम बाहम मिलकर कर रहे थे ना फ़कत उकनूम सानी यानी बेटा, कदीम उलमाए इल्म ईलाही का ख़्याल बिल्कुल दुर्लुस्त था कि नजात का फ़ैअल तीनों अकानीम का फ़ैअल है यानी बाप, बेटे और रूहुल-कुददुस का जब हम तीनों अकानीम के नाम में बपतिस्मा के ज़रीया से किसी को खुदा के साथ मेल मिलाप की अज़ सर-ए-नौ ज़िंदगी में दाखिल करते हैं तो हम उस का इकरार करते हैं।

अगर हम उस राज़ की तह तक पहुंचना चाहते हैं तो चाहिए कि उस पर और ज़्यादा गौर-ओ-ख़ौज़ करें। चाहिए कि ये महिज़ हमारा अक्रीदा ही अक्रीदा ना रहे। बल्कि एक तजुर्बा बन जाये। हमने जलाल के खुदावंद को सलीब दी। हम ही उसके खून से खरीदे गए।

मुकद्दस एनसलम को रात के वक़्त सलीब के पास दुआ व मनाजात करते हुए सुनिये "ऐ मेरे महबूब ! ऐ मेरे मुशफ़िक़ मसीह ! तूने क्या किया है कि इस क़दर तेरी मिन्नत व सिमाजत की जाये?.....में ही वो ज़र्ब हूँ जो तुझको लगी और जिस ने तुझे दुख पहुंचाया। तेरी मौत का सबब मैं हूँ। मैंने ही तुझे सख़्त ईज़ा पहुंचाने की कोशिश की।" फिर वो हमारी जानिब रुख़ करके वो अल्फ़ाज़ कहता है जिनकी सदा अब तक हमारे कानों में गूँज रही है" उसकी मौत पर कामिल भरोसा कर किसी और चीज़ पर तवक्कुल ना कर। उस की मौत पर कामिल एतिमाद व तकीया कर उस को अपना मजाद मादा बना और उसी में सुकूनत कर"

मुकद्दस बरनर्ड जैसे आलिम शख़्स को भी सुनिए **"आला तरीन फ़लसफ़ा और मेरी इंतिहाई हिक्मत ये है कि मैं मसीह मस्लूब को जानूँ क्योंकि कलवरी आशिक़ों के विसाल का मुक़ाम है।"**

ज़रा उस दुआ की तरफ़ भी मुतवज्जा हो जाए जो मुक़द्दस फ़्रांसीस से मंसूब है "ऐ मेरे खुदावंद येसु मसीह मैं तुझसे बमिन्नत अर्ज़ करता हूँ कि मुझे मेरे मरने से पेशतर दो बरकतें इनायत फ़र्मा। अक्वल ये कि मैं अपने अय्याम ज़िंदगी में अपने जिस्म और अपनी रूह में तेरे तल्ख़ तरीं रंज वालम का एहसास कर सकूँ । दोम ये कि मैं अपने दिल में उस बेहद मुहब्बत को पाऊं जिसने तुझे इब्ने खुदा को तरगीब दी कि इस क़दर तल्ख़ मुसीबत व अज़ाब को हम गुनाहगारों की खातिर बर्दाश्त करे।"

हम जानते हैं कि मसीह कि मौत और अम्बिया महबूबान-ए-वतन और शहीदों की मौत में बहुत फ़र्क है। मसीह की मौत के मुताल्लिक पेशीनगोईआं की गई वो गुनाह से खलासी बख़शने के लिए थी जो उस वक़्त ज़हूर में आई उसके ज़रीये से मौत और क्रियामत पर फ़ौक उल-फ़ितरत फ़तह हुई । लेकिन असल फ़र्क उस शख़्स की ज़ात में पाया जाता है । जिसने अपनी जान दी क्योंकि **"वो खुदा का बेटा था ।"** उस में कामिल उलूहियत मौजूद थी कलाम मुजस्सम हुआ और हमारी खातिर मस्लूब हुआ।

कलवरी की सलीब पर दुनिया की सबसे अज़ीमुशान चीज़ यानी मुहब्बत ज़ाहिर होती है और दुनिया का सबसे तारीक तरीन राज़ यानी गुनाह और खुदा की ज़ात व सिफ़ात का सबसे आला इज़हार यानी उस की कुददुसियत।" इसी को उसने हमारे वास्ते गुनाह ठहराया ताकि हम उसमें हो कर खुदा की रास्तबाज़ी हो जाएं" यही इज़हार कफ़ारा है।

डाक्टर काली चरण चैटर्जी जो अड़तालीस साल तक पंजाब में मशहूर-ओ-मारूफ़ मुबशिशर की हैसियत में ख़िदमत करते रहे और जो कलीसिया ए हिंद में बक़दर शहज़ादा गुजरे हैं। उनकी सवानिह उमरी में जो कुछ अरसा हुआ शायी हुई हम उनकी जेल की गवाही पढ़ते हैं :-

"अक्सर औकात मुझसे ये सवाल पूछा गया है कि मैं क्यों हिंदू धर्म को तर्क करके मसीह का शागिर्द हो गया। इसका जवाब ये है कि मसीह की पाक और बे ऐब ज़िंदगी की कशिश ने उसके खुदा की मर्ज़ी के ताबे होने और उस के पुर-मुहब्बत और शफ़क़त आमैज़ आमाल ने मुझे खुद बखुद अपनी जानिब खींच लिया। पहाड़ी वाअज़ में उसकी अजीब व गरीब नसीहतों ने और गुनाहगारों के लिए उसकी मुहब्बत ने मुझे उस का गरवीदा बना लिया। मैं उसका बड़ा मददाह था और उस से मुहब्बत करता था। राम, कृष्ण, और काली के अवतार जिनकी इज़ज़त करना मुझे बचपन से सिखाया गया था। महिज़ ज़ोर और ताक़त के अवतार थे। वो बहादुर थे जो हमारी मानिंद गुनहगार थे और हमारे से जज़्बात रखते थे। फ़क़त मसीह ही मुझे पाक और खुदा की मानिंद इज़ज़त व तारीफ़ के लायक मालूम हुआ। वो तालीम जिसकी वजह से मैंने मसीही मज़हब इख़्तियार करने का फ़ैसला किया मसीह की काइम मक़ाम कुर्बानी की तालीम और उसकी अज़ीयत और मौत थी मैंने अपने गुनाहों का एहसास किया और मसीह में एक ऐसे शख़्स को पाया जिसने मेरे गुनाहों की खातिर अपनी जान दी और वो सज़ा जो मेरा हक़ थी उसने खुद उठाई ।"

क्योंकि तुमको ईमान ही के वसीले से फ़ज़ल और नजात मिली है और यह तुम्हारी तरफ़ से नहीं। खुदा की बख़्शिश ना आमाल के सबब से है ताकि कोई फ़ख़्र ना करे।" मेरे दिल में ये ख़याल समा गया कि मसीह ने अपनी जान दी और ऐसा करने से वो क़र्ज़ अदा किया जो और कोई शख्स अदा ना कर सकता था। ये यकीन मेरी मसीही ज़िंदगी और तजुर्बा के साथ तरक्की करता और कुव्वत पकड़ता गया और अब मेरी ज़िंदगी का जुजु बन गया है । यही मसीहीयत और दीगर मज़ाहिब के दरमियान माबाह-अल-इम्तयाज़ है। जिस वक़्त मैं मसीही हुआ मैंने इस हकीकत को महसूस किया और अब ये मेरे दिल में और भी ज़्यादा पुख़्ता और मुहकम हो गई है।"

गुनाह की खातिर फ़क़त एक नजातदिहंदा का काइम मक़ाम हो कर कुर्बान होना ही मसीहीयत और दीगर मज़ाहिब के दरमियान ख़त इम्तीयाज़ नहीं बल्कि एक ऐसे नजातदिहंदा की मौत, सब कुछ उस शख्स की ज़ात व सिफ़ात पर मुनहसिर है जिसने काइम मक़ाम ठहर कर उस सज़ा को कामिल तौर पर उठा लिया।

एनसलम ग्यारहवीं सदी की उस आलिमाना और मनतक़याना रिसाला कर डेविस होमो (Cur Deus Homo) में कहता है :-

"उस ईलाही शख्स मसीह की ज़िंदगी ऐसी आला अफ़ज़ल और बीशबहा है कि वो इन गुनाहों से कहीं ज़्यादा वज़नदार है जो उस को सलीब देने के जुर्म से इस क़दर बढ़ गए हैं कि इन्सानी अक़ल व अंदाज़ा के दायरा से बड़द हो गए हैं। मैं तो दुनिया के तमाम गुज़शता, हाल मुस्तक़बिल के मकरूह से मकरूह गुनाहों बल्कि और गुनाहों का भी जो इन्सान की अक़ल व ख़याल में आ सकते हैं मुर्तकिब होना कहीं ज़्यादा पसंद करूँ बनिस्बत उस के जलाल के खुदा को सलीब देकर उस एक खौफ़नाक गुनाह-ए-अज़ीम के लिए मुजरिम ठहराया जाऊँ" उस की तालीम के मुताबिक़ सिर्फ़ उलूहियत ही इस काबिल है कि उलूहियत के तकाज़ा को कामिल तौर से पूरा कर सके। लेकिन चूँकि इन्सान ने गुनाह किया है इसलिए इन्सान ही को इन्सान के गुनाह की सज़ा उठानी है। लिहाज़ा ये वाजिब बजा और पूरी सज़ा सिर्फ़ वही उठा सकता है जिसमें उलूहियत और इन्सानियत दोनो पाई जाएं। शायद कोई कहे कि ये तर्ज़-ए-इस्तिदलाल तो अज़िमना वुसता के उल्मा का है लेकिन आजकल भी हम नमाज़ की किताब में जो आम तौर पर राइज है इन्ही

हक्रायक का अक्राइद की सूत में मुलाहिजा करते हैं बल्कि गलतियों से भी उस अक्रीदे का इज़हार होता है।

औसत दर्जा की अक़ल का शख्स। इस किस्म के बयानात को सुनकर बड़ा ब्रहम होता है लेकिन फ़कत उन हक़ीक़तों पर गौर करने ही से हमारी उबूदीयत की रूह को तक़वियत पहुँचती है और हम नमाज़-ओ-याज़त के वक़्त ज़ाहिरदारी के गुनाह से बाज़ रह सकते हैं। अक़्रीदों और मतबदीयों के सवाल जवाब की किताबों के मआरिफ़ जब हम पर ख़ूब वाज़िह हो जाते हैं तो ना सिर्फ़ निहायत पुरलतीफ़ मालूम देते बल्कि हमारे दिलो-दिमाग को फ़र्हत बख़्शते हैं और हमारी अक़ल व क़यास में भी आ जाते हैं।

कुतुब मुक़द्दसा की "**ख़ुदा कि तह की बातों**" पर गौर करना अज़-हद मुश्किल है बल्कि शुरू में बाज़-औक़ात उनका मुताला बे-लुत्फ़ सा मालूम होता है। लेकिन ये मौसीक़ी के सुरों के सीखने के मुतरादिफ़ है। कुछ अरसा के बाद अक्राइद के सुरबाहम मिलकर एक निहायत शीरीं रुहानी राग बन जाते हैं और वो जो इस्तिक़लाल के साथ बराबर उस में मुनहमिक रहता है। आख़िर-कार ख़ुदा की उस दौलत व हिकमत और मुताल्लिक़ मज़ीद तजस्सुस और तफ़तीश में कामयाब होता है जो अज़बस अमीक़ है।

पस हम फिर मुक़द्दस पौलुस के अल्फ़ाज़ की जानिब मुतवज्जा होते हैं। बल्कि उन अल्फ़ाज़ की तरफ़.....जो ख़ुदा की रूह की हिदायत से लिखे गए यानी उन्होंने जलाल के ख़ुदावंद को सलीब दी" ख़ुदा की कलीसिया.....जिसे उस ने ख़ास अपने ख़ून से मोल लिया।"

मसीह की शख़िसयत में दो फ़ितरतें मौजूद हैं असली व हक़ीक़ी उलूहियत व इंसानियत उसकी ज़ात में मौजूद हैं लेकिन ये दोनों फ़ितरतें बाहम दीगर मख़लूत नहीं। ख़ुदा ने सलीब पर दुख उठाया। लेकिन अपनी ईलाही फ़ित्रत व ज़ात के एतबार से नहीं बल्कि इन्सान होने की हैसियत में। हुकर (Hooker) कहता है कि जब रसूल फ़रमाता है कि "**यहूदीयों ने जलाल के ख़ुदावंद को सलीब दी**" (1 कुरन्थियो 2:8) तो हमें जलाल के ख़ुदावंद से मसीह की कामिल ज़ात मुराद लेनी चाहिए। जो जलाल का ख़ुदावंद होते हुए हक़ीक़त में सलीब पर मारा गया। लेकिन इस लिहाज़ से नहीं जिसके एतबार से वो जलाल का ख़ुदावंद कहलाता है। बईना जब इब्ने आदम ज़मीन पर होते हुए ये दावा करता है कि इब्ने आदम उसी वक़्त आस्मान पर भी मौजूद था (यूहन्ना 3:13) तो इब्ने आदम से मसीह की कामिल शख़िसयत मुराद है जो मुजस्सम हो कर ज़मीन पर मौजूद होते हुए



आस्मान पर भी जल्वा-अफ़रोज़ था। लेकिन उस एतबार से नहीं जिसकी रु से उसे इन्सान कहा गया है ।

मौत का फ़तवा लगाए जाने से पेशतर मसीह ने खुद सरदार काहिन के सामने अपनी अटल इन्सानियत और उलूहियत का जिस क़दर ज़बरदस्त इकरार मुम्किन था किया। ये बयान तमाम इजमाली अनाजील में दर्ज है (मत्ती 26:64, मरकुस 14:62+लूका 22:7) "मगर येसु चुप ही रहा। सरदार काहिन ने खड़े हो कर उस से कहा तू जवाब नहीं देता?.....मैं तुझे ज़िंदा खुदा की क़सम देता हूँ कि अगर तू खुदा का बेटा मसीह है तो हम से कह दे येसु ने उससे कहा तूने खुद कह दिया (मरकुस के बयान के मुताबिक "मैं हूँ") बल्कि मैं तुमसे सच्च कहता हूँ कि इसके बाद तुम इब्ने आदम को कादिर-ए-मुतलक की दाहिनी तरफ़ बैठे और आस्मान के बादलों पर आते देखोगे। इस पर सरदार काहिन ने अपने कपड़े फाड़े कि उस ने कुफ़्र बका है। अब हमें गवाहों की क्या हाजत रही? देखो तुमने अभी ये कुफ़्र सुना है। वो क़त्ल के लायक है। इस पर उन्होंने उसके मुँह पर थूका।"

मुक़द्दस पौलुस फ़रमाता है कि इनमें से किसी ने ना जाना "क्योंकि अगर जानते तो जलाल के खुदावंद को सलीब ना देते।" लियोअ आज़म जो एक ज़बरदस्त आलिम इलाहियात गुज़रा है कहता है कि "हमारे नजातदिहंदा की ज़ात में दो फ़ितरतें मौजूद थीं। हालाँकि दोनों की खुसूसीयतें जुदागाना बराबर करार रहें तो भी दोनो के जवाहर में ऐसी अज़ीम यगानगी थी कि जिस वक़्त से कलाम मुजस्सम हो कर कुँवारी के बतन में आया हम उस की उलूहियत का बग़ैर उसकी इन्सानियत के और उस की इन्सानियत का बग़ैर उस की उलूहियत के ज़िक्र नहीं कर सकते। दोनो फ़ितरतें अपनी असलीयत के अपने मख़सूस आमाल के ज़रीया से जुदागाना ज़ाहिर करती हैं। लेकिन ऐसा करने से अपना बाहमी रिश्ता व ताल्लुक तोड़ती नहीं। दोनो एक दूसरे के तक़ाज़ों को कामिल तौर से पूरा करती हैं। अज़मत व बुज़ुर्गी के साथ कामिल अदनापन मौजूद है और अदनापन के साथ ही कामिल अज़मत व बुज़ुर्गी मौजूद है। यगानगी बे-तरतीबी पर मुंतिज नहीं। ना मौज़ूनियत निफ़ाक पैदा करती है एक चीज़ काबिल-ए-गुज़र है।

दूसरी नाक़ाबिल-ए-गुज़र और जलाल का हक़दार है इसी के हिस्से में हकारत व रुसवाई भी है जो तवानाई व ताक़त का मालिक है उस के हिस्सा में कमज़ोरी भी है यही शख़्स लायक व काबिल और मौत पर ग़ालिब आने वाला है। खुदा ने कामिल इन्सान की सूरत इख़्तियार की और खुद

इन्सान की जात में ऐसा मिल गया और उस को अपनी शफ़क़त व ज़ोर में ऐसा मिला लिया कि दोनो जातें एक दूसरे में आ गईं। लेकिन दोनो ने बाहम मिल जाने के बावजूद भी अपनी खासतयों को बरकरार रखा।

पस मसीह की सलीबी मौत में इन्सानी अज़ीयत व बेहुरमती उलूहियत के बाईस हकीकी ईलाही मुसीबत में तब्दील हो गई । क्योंकि उलूहियत इन्सानी रूह और जिस्म के साथ जाती एहसास की यगानगी के सबब एक हो गई। चूँकि मुसीबत उठाने वाला शख्स लामहदूद है । इसलिए मुसीबत भी लामहदूद है। खुदा के बेटे ने मुझसे मुहब्बत रखी और अपने आप को मेरे इवज़ फ़िदया में दे दिया। खुदा ने कलीसिया को अपने खून से खरीद लिया।

खुदावंदा थकामाँदा हूँ मैं जब  
मुझे तकलीफ़-दह हूँ तेरे अहकाम  
ज़बां बार-ए-गराँ से जब होशा की  
दिखा हाथ अपने तब अनेक फ़रखाम  
दिखादे हाथ खून-आलूदा अपने  
जड़े थे काठ पर जूए नकोनाम

-----

कभी जो पांव मेरे लड़खड़ाएं  
करूँ आगे को जाने से मैं इन्कार  
अगर हो आबला पाए से दहशत  
हो मेरी राह सुनसान और पुरखार  
तू अपने पांव वो मुझको दिखादे  
कि जिनमें कीलों के अब तक हैं आसार

-----

खुदावंदा नहीं ये मुझमें जुरात  
दिखाऊँ अपने दस्त वपा की हालत  
(बिशप बीडली साहिब की नज़म का तर्जुमा)

# बाब नहम

## "उसने अपने हाथ उन्हें दिखाए"

(यूहन्ना 20:19-29)

फिलिप्पियों के खत में मुकद्दस पौलुस मसीह के साथ अपनी रिफ़ाक़त और दोस्ती पैदा करने में तीन मनाज़िल का ज़िक्र करता है। अक्वल मसीह का इल्म जो दोस्त व दुश्मन से निहायत तकलीफ़-दह ज़राए से उसे हासिल हुआ। दोम उसने दमिशक़ को जाते हुए राह में खुद मसीह को देखा और "उसके ज़िंदा होने की कुदरत" तजुर्बा किया। क्योंकि ज़िंदगी उसके लिए मसीह थी।

आखिरकार वो मसीह की मुसीबत में शरीक होने का ज़िक्र करता है और उसको अपनी दोस्ती की आखिरी मंज़िल कहता है। यानी मसीह के साथ कुर्बान होने की ज़िंदगी में शरीक होना और मसीह के सलीबी दुख के पियाले को औरों की खातिर पीना बल्कि उनकी खातिर मौत तक गवारा करना।

मसीह के आशिक़ के नज़दीक सलीब का अक्स एक हमागीर अक्स है जो ज़मानों और दुनिया के ममालिक पर हावी है हता कि रोज़ महशर तक पहुंचता है। "तुम्हारी सलामती हो और ये कह कर उस ने अपने हाथ और पसली उन्हें दिखाई।" मसीह ने अपने शागिर्दों को जीत लेने के लिए ज़ख्मों के दागों को मुतल्लिकन ना छुपाया। उसके जलाली बदन पर उसके ईज़ा उठाने के निशान मौजूद हैं। वो उसकी शनाख्त के सबूत हैं। उस के ग़ालिब आने का ऐलान करते हैं और उस के शाहाना इख्तियार और उसकी नजात बख़्श कुदरत की अलामत हैं "पस शागिर्द खुदावंद को देख कर खुश हुए येसु ने फिर उनसे कहा कि तुम्हारी सलामती हो। जिस तरह बाप ने मुझे भेजा है इसी तरह मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।"

थौरवालडसन (Thorwaldsen) ने जो मुल्क हॉलैंड का एक मशहूर संग तराश गुजरा है इस नज़ारा को संग मरमर में तराशा है। कोपनहेगीन के एक गिर्जाघर में उस का तराशा हुआ ज़िंदा मसीह का बुत खड़ा है। वो अपने हाथ फैलाए अपने शागिर्दों को सुलह व सलामती के पैग़ाम की इशाअत के लिए रवाना कर रहा है। गिरजा के दोनो जानिब बारह शागिर्दों के छः बुत खड़े

हैं। यहूदा इस्क्रियुती की जगह पौलुस लिए हुए है ये नज़ारा दिलो-दिमाग पर एक अजीब कैफ़ीयत पैदा करता है । मसीह सलीब पर नहीं बल्कि तख़्त-नशीन होने को तैयार है लेकिन ज़ख़्मों के दाग़ लिए हुए है। मुसव्वर की कारीगरी मसीह के लबों से उस दो गोना पैग़ाम की भी मज़हर है कि जिसका ज़िक्र इंजील यूहन्ना में आया है यानी तुम्हारी हो और जिस तरह बाप ने मुझे भेजा है इसी तरह मैं भी तुम्हें भेजता हूँ ।"

सलीब ना फ़क़त कफ़ारे की मज़हर है बल्कि वो एक निहायत आला नमूना भी पेश करती है वो हमारी "रूह के लिए इत्मीनान और सलामती का पैग़ाम है और हमें इज्तिहाद की दावत देती है। वो गुनहगार के लिए एक ख़ास मक़सद के इलावा एक पैग़ाम भी रखती है। वो जिन्होंने एक मर्तबा मसीह के दाग़ों में सलीब का नज़ारा देख लिया है उनमें ज़रूर तब्दीली वाक़े होती है।"

मसीह सब के वास्ते मुआ कि जो जीते हैं वो आगे को अपने लिए ना जिएँ बल्कि उसके लिए जो उन के वास्ते मुआ और फिर जी उठा।" हमको उसी के ख़ून के वसीले से सलामती हासिल होती है और उसके नमूने से रिसालत ।

ये निहायत अजीब बात है कि मसीह ने अपने जी उठने के बाद अपने दाग़ अपने शागिर्दों को दिखाए। उन्होंने अमाउस में से रोटी तोड़ते वक़्त पहचान लिया। हालाँकि वो उसकी शक़ल व शबहात और उस की तर्ज़-ए-गुफ़्तगु से उसे ना पहचान सके। उसने अपने दाग़ दिखाकर अपने दस शागिर्दों को अपनी शनाख़्त कराई और अपने दुबारा ज़िंदा होने का काइल किया उसके दाग़ों की वजह ही से एक हफ़ता के बाद तोमा अपनी कम एतिक़ादी का काइल हो कर बोल उठा। "ऐ मेरे ख़ुदावंद ऐ मेरा ख़ुदा" उसके हाथ और उस की पसली के दाग़ ही ख़ुदा के साथ हमारे मेल मिलाप की मुहर और निशान हैं और हमें ख़िदमत करने और कुर्बान होने की दावत देते हैं।

हेईन (Heine) नामी एक जर्मन शायर क़दीम दुनिया के देवताओं को अपने ज़ियाफ़त के कमरे में दुनिया को तस्ख़ीर और फ़तह किए हुए तख़्त नशीन तसव्वुर करता है । इन के सामने एक मुफ़लिस व गरीब दहक़ान सलीब के बोझ से दबा हुआ दाख़िल होता है और सलीब को मेज़ पर दे मारता है। शहवत और जफ़ा के देवता मायूस हो कर फ़ौरन मर जाते हैं। क़दीम दुनिया के देवता मौजूदा दुनिया की बातिल और फ़ानी खूबियां हैं। जब मसीह की सलीब का अक्स किसी शख़्स की ज़िंदगी पर पड़ता है तो उसी वक़्त वो पुरानी बातिल और फ़ानी खूबियां मादूम हो जाती

हैं और उनके इच्छा एक अजीब नई जिंदगी मारज़-ए-वजूद में आती है जो गैर-फ़ानी ख़ूबीयों पर मबनी होती है।

इन्जीली बयानात से मालूम होता है कि हमारे खुदावंद ने अपनी ज़बान-ए-मुबारक से दुनिया के मुताल्लिक चार फ़रमान दीए। मुक़द्दस मती दुनिया की तमाम अक्वाम को शागिर्द बनाने का सबब बताता है। "आस्मान और ज़मीन का कुल इच्छतयार मुझे दिया गया है। पस तुम जाकर" .....मुक़द्दस मरकुस की जगह के मुताल्लिक हमारे खुदावंद के ये अल्फ़ाज़ लिखता है "तुम दुनिया में जाकर सारी ख़ल्क के सामने इंजील की मुनादी करो।" मुक़द्दस लूका उस खिदमत की तर्तीब पर ज़ोर देते हुए मसीह के अल्फ़ाज़ दोहराता है। "और यरूशलेम से शुरू करके सारी क्रौमों में तौबा और गुनाहों की माफ़ी उसके नाम से की जाएगी।" मुक़द्दस यूहन्ना सबसे अहम-तरीन बात पर ज़ोर देता है और उस रूह को ज़ाहिर करता है जो उस खिदमत में हमारी हिदायत करती और हम पर हुकूमत और इच्छितयार रखती है "जिस तरह बाप ने मुझे भेजा है। उसी तरह मैं तुम्हें भेजता हूँ।" नौकर अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। हमें उसका हम खिदमत होना और उसी इच्छितयार के मातहत रहना है।

हमारा पैग़ाम भी वही है और इसी किस्म की तकलीफ़ व मुसीबत हमें भी बर्दाश्त करनी है। यूहन्ना निहायत सादा अल्फ़ाज़ में बाद ताम्मुल ये कहता है। "उसने हमारे वास्ते अपनी जान दी और हम पर भी भाईयों के वास्ते जान देनी फ़र्ज़ है।"

सलीब खिदमत के लिए एक ज़बरदस्त मुहरिक है। येसु मसीह को अपने मिशन की खातिर शहीदा पैदा करने के लिए फ़क़त अपने दाग़ दिखाने की ज़रूरत है "जब वो जिन्होंने उसे छेदा है उस पर नज़र करेंगे।" तो खुदा हर एक पर कुर्बानी की रूह नाज़िल करेगा। और हर एक उससे पूछेगा कि तेरे हाथों पर क्या ज़ख़्म हैं तो वो जवाब देगा ये वो ज़ख़्म हैं जो मुझे अपने दोस्तों के घर से लगे (ज़करीया 12:10 व 13:16) जब येसु मसीह दमिशक़ की राह में साऊल पर ज़ाहिर हुआ तो ज़रूर उसने भी आस्मानी नूर की रोशनी में मेखों के निशान उस के हाथों में और भाले के निशान उसकी पसली में देखे होंगे। तू मुझे क्यों सताता है? "मसीह हूँ जिसे तू सताता है" .....मैं उसे जता दूंगा कि उसे मेरे नाम की खातिर किस क़दर दुख उठाना पड़ेगा।"

ये कोई ताज्जुब की बात नहीं कि मुक़द्दस पौलुस अपनी रसुली खिदमत और मसीह के दुख उठाने का बयान करते हुए एक अजीब लफ़ज़ का इस्तिमाल करता है। ये लफ़ज़ उस मुक़ाम के

इलावा एक मर्तबा और इस्तिमाल हुआ है। ये एक यूनानी लफ़्ज़ है जिसके मअनी लूका की इंजील में "नादारी किया गया है और कुलुस्सियों के खत में "कमी" मुकद्दस लूका की इंजील में हम उस बेवा का हाल पढ़ते हैं जिसने अपनी नादारी की हालत में जितनी पूँजी उस के पास थी खज़ाने में डाल दी। पौलुस रसूल भी इसी यूनानी लफ़्ज़ का इस्तिमाल करता है जिसके मअनी उस खत में "कमी किए गए हैं।" अब मैं इन दुखों के सबब से खुश हूँ "जो तुम्हारी खातिर उठाता हूँ और मसीह की मुसीबतों की कमी उसके बदन यानी कलीसिया की खातिर अपने जिस्म में पूरी किए देता हूँ" कलवरी की नादारी या कमी !

अहले यहूद के नज़दीक दुख उठाना एक ऐसा मसला था जिसका हल करना मुश्किल था। लेकिन मसीही के लिए ये एक खास मन्सब बन गया जिसमें वो अपने मौला का हिस्सादार हो सकता है। शाऊल यहूदी ने दुख उठाने के मसले को अय्यूब और उस के तीन दोस्तों की रूह से हल करना चाहा और वो लाएखल साबित हुआ। लेकिन पौलुस मसीही ने मसीह के दाग़ देखे और उस ने महसूस कर लिया कि यहोवाह का सादिक़ बंदा हमारे गुनाहों के लिए घायल किया गया और हमारी ही बदकारियों के बाईस कुचला गया। लिहाज़ा वो फ़रमाता है "इसलिए मसीह की खातिर कमज़ोरीयों में बे अज़िय्यतों में, इहितयाजों में, सताए जाने में और तंगियों में खुश हूँ।"

ज़िंदा मसीह का जलाल ये है कि हम उस के दाग़ों को पहचान लें और तोमा के साथ मिलकर मेखों के निशानों में अपनी उंगलियां डालें और कहें "बस काफ़ी है अब तू अपने गुलाम को अपने कलाम के मुवाफ़िक़ सलामती से रुख़स्त देता है क्योंकि मेरी आँखों ने तेरी नजात देख ली है"

"ऐ मेरे खुदावंद ऐ मेरे खुदा ! पुर जलाल मुकद्दसिन के लिए इससे बढ़कर और क्या खुशी व मसरत हो सकती है और इस तजुर्बे से बेहतर तजुर्बा और कौनसा हो सकता है कि मसीह के दाग़ों को देखें और उस के हुज़ूर सरबसजूद हों। मर्यम मगदलेनी को भी मसीह के सर पर तेल मलते वक़्त ये नसीब ना हुआ कि उस के दाग़ों को चूमे, फ़लक पर मलाइक आर्ज़ूमंद हैं कि उनको देखें लेकिन जब वो उस नजात बख़्श मुहब्बत का मुलाहिज़ा करते हैं तो अपने चेहरों को छुपा लेते हैं।

"उस ने अपने हाथ.....उन्हें दिखाए" क्या उसने अपने हाथ कभी आपको भी दिखाए! एसीसी के मुकद्दस फ़्रांसीस ने मसीह के दाग़ों पर गौर करते वक़्त इस क़दर वक़्त सर्फ़ किया कि आख़िरकार उसके बदन पर नजातदिहंदा के निशान ज़ाहिर हो गए। लेकिन मसीह के दाग़ों से कहीं ज़्यादा मसीह की सलीब बर्दारी के सबूत उस की रोज़ाना ज़िंदगी में नुमायां थे।

जब एसीसी के बरनरड ने मुक़द्दस फ़्रांसीस की पैरवी करने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो ये फ़ैसला हुआ कि वो बिशप साहिब के मकान पर जाएं। और वहां मास<sup>1</sup> में शामिल हों। फिर मुक़द्दस फ़्रांसीस ने कहा "बाद अज़ नमाज़ हम दुआ में मशगूल रहेंगे और ख़ुदा की मिन्नत करेंगे कि तीन मर्तबा नमाज़ की किताब खोलने के ज़रीया से वो अपनी मर्ज़ी हम पर ज़ाहिर करे और हमें बताए कि हम कौनसा राह इख़्तियार करें "पहली मर्तबा किताब खोलने पर वो अल्फ़ाज़ निकले जो हमारे ख़ुदावंद ने उस नौजवान को जो उस से कामलीयत का दर्स लेने आया था फ़रमाए यानी "अगर तू कामिल होना चाहता है तो जा अपना माल व असबाब बेच कर ग़रीबों को दे..... और आकर मेरे पीछे हो ले" (मती 19:21) दूसरी मर्तबा किताब खोलने पर वो अल्फ़ाज़ निकले जो मसीह ने अपने शागिर्दों को मुनादी के लिए रवाना करते वक़्त फ़रमाए यानी "राह के लिए कुछ ना लेना ना लाठी ना झोली ना रुपया ना दो-दो कुर्ते रखना" (लूका 9:3) तीसरी मर्तबा मरकुस 8:34 आयत निकली "अगर कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपनी ख़ुदी से इन्कार करे और अपनी सलीब उठाए और मेरे पीछे हो ले" फिर मुक़द्दस फ़्रांसीस बरनर्ड से मुखातब हो कर कहने लगा "मसीह की सलाह को सुनो और उस पर अमल करो। हमारे ख़ुदावंद येसु मसीह का नाम मुबारक हो। जिसने अपनी मर्ज़ी हम पर ज़ाहिर की कि हम उस की मुक़द्दस इंजील के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर करें।"

बादअज़ां उस ने और साथ के बाकी दरवेशों ने इतिहाई दरवेशाना ज़िंदगी बसर करनी शुरू की और एक वीरान जज़ाम ख़ाना में सुकूनत इख़्तियार की बीमारों, मुफ़लिसों और बेकसों की इमदाद करते और वसीअ पैमाना पर इंजील जलील की बशारत का काम करते थे और हलका रोज़ बरोज़ बढ़ता गया हता कि उसमें मुल्हिद और अहले इस्लाम भी शामिल होने लगे। मिस्र में सुल्तान कामिल के रूबरू फ़्रांसीस ने अपने ईमान की ख़ातिर मुसीबत बर्दाश्त करने के लिए मुस्तइद और रज़ामंद होने का सबूत दिया। दुनयावी फ़िक्रों से बेनयाज़, खिदमत में खुश, उस का हुलुम, इसकी फ़िरोतनी और उसका बच्चों का सा ईमान मुनाज़िर कुदरत के लिए उसका शौक, आम्मतुन्नास के लिए उस की बेहद मुहब्बत, यही उसके दाग़ थे यानी उसके जिस्म पर मसीह के ज़ख़्मों के निशान।

एक मर्तबा एक मुस्लिम सूफ़ी से मेरी मुलाकात हुई। वो अहले-तसव्वुफ़ में से था और निहायत मुफ़लिसाना ज़िंदगी बसर करता था। जब मैं दाखिल हुआ तो वो तस्बीह पढ़ रहा था जिसके

---

<sup>1</sup> रोमन कैथोलिक फ़िर्के की सुबह कि नमाज़

निनानवे दानों से अल्लाह के निनानवे खूबसूरत नाम मुराद हैं जब हम इन निनानवे नामों के खवास और एक तालिब-ए-खुदा के नज़दीक इन नामों के मुतालिब पर गुफ़्तगु कर रहे थे और कह रहे थे कि अल-गज़ाली और दीगर सुफ़याए किराम ने तालीम दी है कि हमें हक़ तआला की सिफ़ात पर खूब ग़ौर करना चाहिए ताकि हम उसकी रहमत व शफ़क़त व महरबानी की नक़ल कर सकें । तो उस ने मेरी तरफ़ मुतवज्जा हो कर कहा "ये ज़रूर नहीं कि हम खुदा के नामों को याद करने के लिए तस्बीह करें क्योंकि वो तो हमारे हाथों पर कुंदा हैं" फिर उसने अपने हाथ फैला कर अपनी हथेलियाँ मुझे दिखाई जिनमें अरबी आदाद 81 और 18 बाएं और दाएं हाथों में खूब गहरे खुदे हुए हैं और जिन का मजमूआ निनानवे है। उस ने कहा "यही वजह है कि हम दुआ व इल्तिज़ा करते वक़्त अपने हाथ फैला कर खुदा को उस की पुर-शफ़क़त सिफ़ात याद दिलाते हैं और उस से उस के फ़ज़ल की इलतिमास करते हैं।"

मैंने मसीह के दागों के मुताल्लिक उससे गुफ़्तगु की और उसे बताया कि उसने हमारे गुनाहों को सलीब पर उठा लिया **"मैं तुझे ना भूँगा.....देख मैंने तेरी तस्वीर अपनी हथेलियों पर खोदी हुई है।"**

उन्होंने उसके हाथ और पांव को छेदा वो दाग़ उस के जलाली बदन पर अब तक मौजूद हैं और उन्हें जो उस के नाम से कहलाते हैं उस की शागिर्दी इख़्तियार करने की दावत देते।

उनकी रिसालत के लिए कसौटी का काम देते हैं। मसीह का पैरों होना कोई आसान काम नहीं। उसके मुतालिबात निहायत सख़्त हैं जब तक कोई सब कुछ तर्क ना कर दे वो उसका शागिर्द नहीं हो सकता। ताज बग़ैर सलीब के हासिल करना ग़ैर-मुमकिन है।

मसीह ने अपने आपको हकीकी दीवार ज़ैतून या बलूत का दरख़्त नहीं कहा बल्कि हकीकी अंगूर की बेल कहा है। फ़क़त यही एक बेल है जो खन्बे से बाँधी जाती और **दूसरों की खातिर बाग़बान की मिक़राज़ का तख़ता मशक़ बना रहता है।** हर एक शाख़ तराशी जाती है और जहां शिगाफ़ ज़्यादा गहरे आते हैं वहीं फल ज़्यादा लगने की उम्मीद भी ज़्यादा होती है।

हम मसीह की शराक़त में शरीक होने के लिए बुलाए गए हैं। लेकिन ये शराक़त तक्लीफ़ व मुसीबत की शराक़त है। रोज़ अक्वल ही से लेकर ये ज़मीन जुल्मत और नूर की ताक़तों की आखिरी ज़ोर-आज़माई के लिए एक मैदान मुक़रर हो चुकी है।



मसीह की शराकत ही असल रसूली तसलसुल है। शहीदों का खून हर एक मुल्क और ज़माने में कलीसिया की बीच रहा है। पौलुस रसूल फ़रमाता है "आगे को कोई मुझे तकलीफ़ ना दे क्योंकि मैं अपने जिस्म पर मसीह के दाग़ लिए फिरता हूँ।"

डेविड लोन्गसटन, हैनरी मार्टिन, मेरी सलीसर, जेम्स गिलमोर और कैथ फ़ाकज़ की सवानिह उम्रियाँ मेखों के दाग़ लिए हुए हैं। हमारी तजावीज़ का मलिया-मेट होना। हमारी उम्मीदों का नाउम्मीदी में तब्दील हो जाना हमारे तसव्वुरात का माज़ोम हो जाना हमारे फ़ैसलों का तकलीफ़-दह साबित होना। हमारी खुशियों का रंज-वालम बन जाना और बाग़ गतसमनी में हमारा जांकनी की हालत में रहना ये सब अगर मसीह की सलीब उठाना नहीं तो और क्या हैं? दुआ का जवाब ना पाने पर सब्र करना। पोशीदगी में खुद इंकारी करना। पेशवाई में तन्हा रहना ये सब तंबीहीं हैं और उनका हिस्सा हैं। जो हकीकी फ़र्ज़द हैं और हरामज़ादे नहीं। "हम हर वक़्त अपने बदन में मसीह की मौत लिए फिरते हैं। खुदा के खादिमों की तरह हर बात से अपनी खूबी ज़ाहिर करते हैं। बड़े सब्र से मुसीबतों से, इहितयाजों से, तंगियों से कोड़े खाने से क़ैद से, हंगामों से मेहनतों से बेदारियों से और फ़ाक़ों से।"

आस्मान के बारह दर हैं और वो जिनके नाम शहर मुक़द्दस की बुनियाद पर कनुंदा हैं सब के सब अपने मालिक के दाग़ लिए हुए हैं। हर एक दर एक गौहर है। यानी गौहर कुर्बानी।

कश्मीर के एक मिशनरी ने उस बदन के लिए जो सरापा खुदा के आगे नज़र किया जा चुका है एक दुआ लिखी है। क्या ये हमारी दुआ नहीं हो सकती? "ऐ मालिक! हम अपना गोशत, अपनी हड्डियां, अपने आज़ो अपना बंद तेरी ख़िदमत के लिए पेश करते हैं। हमें उसे अपने जलाल के लिए इस्तिमाल करना सिखा। हमारी हिदायत कर कि हम उसे एक कल की तरह दरुस्त रख सकें जो बतौर एक अमानत किसी ख़ास मक़सद के लिए हमारे सपुर्द की गई है। हमें सिखा कि हम उसे बलापस व पीश, सख़्ती और इस्तिमाल के साथ इस्तिमाल करें लेकिन बजा तौर पर नहीं और जब ये रफ़ता-रफ़ता फ़र्सूदा हो जाएगी तो ये बख़्श कि हम उस यकीन से खुश हों कि ये तेरे लिए सर्फ़ हो रहा है - आमीन।"

"मसीह हमारा पशीर व मौत पर ग़ालिब आकर अज़लियत के दरवाज़े खोलता है जो हमारे लिए बंद थे और हमारी रूह को उन के अंदर दाखिल होने देता है। उस हकीम अज़ली ने सलीब और गुर की राह से गुज़र कर और सच्चाई और हक़ की फ़िज़ा में दाखिल हो कर हमें ये रास्ता दिखाया।

ये राज़ बताया और कुदरत और इख्तियार का वो लफ़्ज़ हमें सिखाया कि जिस के मुँह से निकलते ही आलम-ए-रूहानियत के दरवाज़े हम पर यक-दम खुल जाते हैं।

अगर जहान के नूर ने गुर की जुल्मत को नूर में तब्दील ना कर दिया होता और उस घिनौने पन को जो जिस्म की नज़ाकत और क़ब्र की सख्ती के बाहमी मेल से पैदा होता है। पाकीज़गी में ना बदल दिया होता तो वाकई उसने हमारे लिए कुछ भी ना किया होता आओ वो जगह देखो जहां कामिल मुहब्बत रखी गई थी ! (इक़तिबास अज़ पाथ औफ़ इटर्नल विज़डम" (अज़ली हिक्मत की राह) मन तस्नीफ़ जान कौरडीलियर)

---

## बाब दहम

### "उसके जी उठने की कुदरत"

यूजीन बरननड की एक नादिर किताब है जो "होली स्टार डे" के नाम से कहलाती है। उसमें मसीह के ग्यारह शागिर्द दिखाए हैं जो अहले-यहूद के खौफ से दरवाज़े बंद किए बैठे हैं। ना उन के बूशरों से बशाशत का नूर चमक रहा है और ना खुशी का तबस्सुम उन के चेहरों पर नज़र आ रहा है। ये उन की ज़िंदगी की तारीक तरीं शाम है। येसु क्रब्र में मदफून है और उन की उम्मीदें भी उसके साथ ही मदफून हैं वो कह रहे हैं "हमको उम्मीद थी कि इस्राइल को मखलिसी यही देगा। लेकिन अब हमारा यक्रीन जाता रहा । हमने गलील में झील के करीब उस के जलाल, और उस की कुदरत को देखा। गलगता में हमने उस का दर्दनाक चिल्लाना सुना और अपनी आँखों से उस की जांकनी भी देखी। फिर अरमतीह का यूसुफ उसकी लाश ले गया और हम ने उसे दफन किया बिलाशक येसु मर गया !"

पतरस अपने सर को अपने हाथों पर झुकाए बैठा है और यूहन्ना जिसके चेहरे से मुख्तलिफ़ तबस्सुम के जज़्बात का इज़हार हो रहा है उसे तसल्ली देने की बेसूद कोशिश कर रहा है। लेकिन जानता नहीं कि किस तरह तसल्ली व तशफ़ी करे उन में से हर एक मुस्तक़बिल के ख़याल से नाउम्मीद है। मायूस पस्त-हिम्मत, परेशान हाल, सरासीमा व हैरान हो रहा है। हर एक के चेहरे से उन की मुशतर्का तकलीफ़ और उन के रंज का असर अयाँ है। येसु मर गया है। "हमको उम्मीद थी कि इस्राइल को मखलिसी यही देगा ।"

खुदा का शुक्र हो कि इन्जीली बयान मसीह की मौत पर खत्म नहीं हो जाता वो उस की फ़तह की आवाज़ "पूरा हुआ" फिर भी खत्म नहीं होता और ना ही रसूली पैग़ाम का यहां खात्मा होता है। मसीह की मौत के बाद उसकी क्रियामत हुई "मसीह जिस्म के एतबार से दाऊद की नसल से पैदा हुआ। लेकिन मुर्दों में से जी उठने की कुदरत के साथ खुदा का बेटा ठहरा।"

मसीह हमारे गुनाहों के लिए मरा और तीसरे दिन किताब मुक़द्दस के बमूजब ज़िंदा किया गया।" मज़कूरा बाला अल्फ़ाज़ मुक़द्दस पौलुस के बयान का खुलासा है। मसीह के ज़िंदा होने

के मुताल्लिक पौलुस के ईमान की बुनियाद अक्वल पेशीनगोईआं और वाअदे थे जो ये ज़ाहिर करते हैं कि मसीह जी उठेगा। दोम ज़िंदा नजातदिहंदा का बार-बार अपने आपको मुख्तलिफ़ तरीक़ से ज़ाहिर करना। क्योंकि वाक़ई वो ज़िंदा हो गया था। पौलुस अपने बयानात में मसीह के ज़हूरों को तरतीबवार लेता है। और दमिशक़ की राह में मसीह के अपने ऊपर ज़ाहिर होने को अपना गवाह करार देता है और नतीजा निकालता है। **"अगर मसीह नहीं जी उठा तो तुम्हारा ईमान बेफ़ाइदा है तुम अब तक अपने गुनाहों में गिरफ़्तार हो। बल्कि जो मसीह में सो गए हैं वो भी हलाक हुए अगर हम सिर्फ़ इसी ज़िंदगी में उम्मीद रखते हैं तो सारे आदमीयों से ज़्यादा बदनसीब हैं।"**

हुडिनी डोबल तमाम सबूतों और बिलखसूस उस सबूत की एहमीयत को चश्म-ए-बसीरत से देखकर यूं लिखता है "पौलुस रसूल का मसीह के ज़िंदा होने की हकीकत को अपनी बशारत का बुनियादी उसूल करार देने की इंतिहाई फ़िक्र ही एक अज़ीमुश्शान सबूत है। जिसके बाईस पौलुस रसूल का अपना दिमाग़ भी एक सबूत बन जाता है। उसकी गवाही सौ गवाहियों की एक गवाही है और यही हाल दूसरे रसूलों का भी है। इनकी पहली बे-एतिक़ादी के मुक़ाबले में उनका मौजूदा यक़ीन व एतक़ाद और उन का क्रियामत को एक आला व अफ़ज़ल हकीकत तसव्वुर करना ही नामालूम तारीखी हकीकतों का एक ज़बरदस्त व बय्यन सबूत है।"

मसीह के ज़िंदा होने के इन्जीली बयान से मुताल्लिक़ एक निहायत अजीब बात ये है कि उन चशमदीद गवाहों के तमाम बयानात में हमारे खुदावंद के पैरौओं के शुकुक का ज़िक़र निहायत ज़ोर से किया जाता है। वो खुद एक वहमी व शक्की हालत के ज़ेर-ए-असर थे इसलिए दूसरों की गवाही को फ़ौरन क़बूल करने के लिए तैयार ना रहे थे। औरतों ने "किसी से कुछ ना कहा" "क्योंकि डरती थीं (मरकुस 16:8) जब मर्यम मगदलीनी ने उन्हें बताया कि उसने मसीह को देखा तो उन्होंने "यक़ीन ना किया" (मरकुस 16:11) जब उन्होंने उसे गलील में पहाड़ पर देखा तो बाअज़ ने उसे सज्दा किया लेकिन "बाअज़ ने शक़ किया" (मत्ती 28:17) तोमा रसूल एक हफ़ता तक शक़ करने के बाद काइल हुआ।

लिहाज़ा मसीह के ज़िंदा होने के मुताल्लिक़ रसूलों का ईमान कुछ अंधा ईमान ना था बल्कि उस की बुनियाद चशमदीद वाक्रियात और ना काबिल-ए-तर्दीद शहादत पर कायम थी। उसने अपनी मस्लुबियत के बाद "बहुत से सबूतों से अपने आपको उन पर ज़िंदा ज़ाहिर भी किया। चुनांचे वो

चालीस दिन तक उन्हें नज़र आता रहा....."और उन की तादाद जिन्होंने उसे ज़िंदा देखा पाँच सौ से ऊपर थी (आमाल 1:3 व 1 कुरन्थियो 15:6) मसीह के सऊद और पन्तीकोस्त के रोज़-ए-अज़ीम के बाद रसूली जमात के किसी शरीक के दिल में उसके मुताल्लिक ज़रा भर भी शक बाक़ी ना रहा। मसीह के ताअबद ज़िंदा होने से वो भी सब के सब तब्दील हो गए । उसका ज़िंदा होना उनकी ज़िंदा उम्मीद थी और ना फ़क़त उनके पैग़ाम बशारत में बल्कि उनके रोज़ाना तजुर्बा में भी मूजिब तहरीक । मुक़द्दस पतरस फ़रमाता है कि "उस को ख़ुदा ने तीसरे दिन जिलाया और ज़ाहिर भी कर दिया। ना कि सारी उम्मत पर बल्कि उन गवाहों पर जो आगे से ख़ुदा के चुने हुए थे। यानी हम पर जिन्होंने उसके मुर्दों में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया पिया" (आमाल 10:40) पौलुस रसूल फ़रमाता है "वो कमज़ोरी के सबब से सलीब दिया गया लेकिन ख़ुदा की कुदरत के सबब से ज़िंदा है" (2 कुरन्थियो 13:4) यूहन्ना कहता है "येसु मसीह.....जो सच्चा गवाह और मुर्दों में से जी उठने वालों में से पहलोठा" है। हाँ वो अबद तक ज़िंदा रहेगा। मौत का अब उस पर कोई इख़्तियार नहीं क्योंकि उस ने मौत को नेस्त व नाबूद कर दिया और अपने दुबारा जी उठने से ज़िंदगी और बका की तालीम दी और यही वो कुदरत है जिससे मसीह में नई ज़िंदगी मिलती है वो हर एक ईमानदार के लिए जलाल की उम्मीद और गुनाह पर फ़तह पाने का भेद है। ईमानदार मसीह के साथ सलीब दिया जाता उसके साथ मरता और दफ़न होता है लेकिन फिर उसमें हो कर और उस के बाईस ज़िंदा हो जाता है।

सुब्हे क़यामत एक नई रोशनी यानी बका का नूर सफ़ा आलम पर फैलाती है। चुनांचे हर एक चीज़ और हर एक इन्सान में इस ज़िंदा उम्मीद यानी क़ब्र पर ख़ुदा की कुदरत और फ़तहयाबी के ज़हूर के बाईस एक तब्दीली वाक़े होती है जो शख्स मसीह में क़ायम होता है वो नया मख़लूक बन जाता है। पुरानी चीज़ें जाती रहती हैं और सब कुछ सुबह-ए-क़ियामत की रोशनी में नया हो जाता है।

जब लोग ज़िंदा मसीह की हुज़ूरी को महसूस कर लेते हैं तो ज़िंदगी की क़द्रो कीमत का एक नया मेयार क़ायम हो जाता है। डेविड लोनगस्टन कहता है "अब से लेकर मैं अपनी किसी चीज़ पर अगर कोई कीमत लगाऊंगा तो उस निस्बत से जो मसीह की बादशाहत के मुक़र्रर मेयार के मुताबिक़ इसे हासिल है" मुक़द्दस यूहन्ना की इंजील में लिखा है कि "जिस जगह उसे सलीब दी गई वो एक बाग़ था और उस बाग़ में एक नई क़ब्र थी ।" वो बाग़ अब तक हमारा इंतज़ार कर रहा है। रूह के तमाम फल वहां पकते हैं। उसके ज़िंदा होने की कुदरत इन्सान को तमाम दुनियावी तकलीफ़ात और ज़रूरीयात का मुक़ाबला करने के क़ाबिल बनाती है। क्योंकि उसके बंदों को

ये यकीन होता है कि मसीह सब कुछ जानता और उन्हें प्यार करता है और उनकी इहितयाजों को रफ़ा कर सकता है। हज़रत इन्सान का दिल दो बातों का ख़्वाहिशमंद होता है। यानी गुनाह से नजात पाने का और अबदी ज़िंदगी हासिल करने का अगर मुख्तलिफ़ मज़ाहिब का बाहमी मुकाबला किया जाये तो एक निहायत अजीब बात मालूम होगी कि मौत के बाद ज़िंदा रहने की आलमगीर उम्मीदवार और अन्वा व अक्साम की कुर्बानीयों और ज़िंदों के ज़रीये से देवताओं और खुदाओं को राज़ी रखने की आलमगीरी सई व कोशीश करीब करीब हर मज़हब में पाई जाती है। मसीह में इन हर दो कि तकमील होती है । अगरचे वहशी अक्वाम के दरमियान आइन्दा ज़िंदगी के मुताल्लिक जो ख़्यालात राइज हैं वो निहायत ख़ाम हैं तो भी वो मौजूद ज़रूर हैं और उन के मोतकिदात में उन्हें ख़ास मर्तबा और फ़ौकियत हासिल है। औहाम परस्ती के नाम ही से माद्दी दुनिया पर रूह की फ़ज़ीलत ज़ाहिर होती है ना फ़क़त वहशी अक्वाम के मज़ाहिब ही बल्कि बुत परस्तों और मुशरिकों के तमाम मज़ाहिब भी बकाए दवाम की तालीम देते हैं और फ़ित्रतन उन की तबीयत में अबदीयत और ग़ैर-फ़ानीयत के अकीदे की बहुत क़द्रो कीमत पाई जाती है।

लोग महिज़ मौजूदा इन्सानी ज़िंदगी की ज़ाती खामीयों और उस के ग़ैर-मुकम्मल होने की वजह से ग़ैर-फ़ानीयत और बका पर ईमान रखते हैं क्योंकि उन्होंने देख लिया कि बसा औकात कवाय इन्सानी में ज़ोफ़ आने के बाद भी हमारे जज़्बात मुहब्बत के पुरज़ोर मुतालिबात के बाईसे अख़लाक व अतवार तरक्की करते हैं। मुहब्बत मौत से कवी तर है। हमारे अंदर कायनात की उस आवाज़ की सदाए बाज़ग़शत पैदा होती है और रूहें खुद बखुद अपने अबदी मस्कन के वाहिद रास्ता पर बे-इख़्तियार खिची चली जाती हैं। तमाम अश्या खुदा के दिल की तरफ़ रुजू करती हैं जो उनका मब्दा और मंबा और उन की इंतिहा भी है।

लोई पासेटोर कहता है "वो जो उस लामहदूद की हस्ती का ऐलान करता है और कोई नहीं जो ऐसा ना करे वो उस ऐलान में जुमला मज़ाहिब की तमाम मोज़ाना बातों से कहीं ज़्यादा एजाज़ शरीक करता है। क्योंकि लामहदूद हस्ती का तसव्वुर इस दो गुना ख़सलत का इज़हार करता यानी ये कि वो अपने आपको ज़बरदस्ती हम पर ज़ाहिर भी करती है और साथ ही हमारे फ़हम व इदराक से कहीं बालातर भी है लेकिन जब हमें उसका इदराक हासिल होता है तो हम सर-ए-तस्लीम ख़म करने के सिवा और कोई चारा नहीं पाते। मैं हर जगह दुनिया में इस लामहदूद हस्ती का नागुरेज़ इज़हार देखता हूँ इसी के बाईस हर शख्स के दिल की तह में एजाज़ का तसव्वुर मौजूद

होता है "साईस लामहदूद फ़िज़ा, लामहदूद ज़माना, लामहदूद आदाद, लामहदूद ज़िंदगी और लामहदूद हरकत का ज़िक्र करती है" उसने अबदीयत को भी उनके दिल में जागर्जी किया" (वाइज़ 3:11)

मौत ज़िंदगी की ख्वाहिश से ज़्यादा आम नहीं। इन्सानी रूह ज़िंदगी बल्कि कसरत के साथ ज़िंदगी की ख्वाहिशमंद है। ऐसी ज़िंदगी जो मसीह ने अपनी जलाली क्रियामत और अपने सऊद के ज़रीये से ज़ाहिर की।

ये हकीकत एटरोरीयह (इटली के वस्त में एक मुल्क है) के कदीम बाशिंदों के मोतकिदात, कदीम मिस्रियों की मुर्दों की किताब (जो फ़िल-हकीकत किताब-ए-हयात थी) मनु के धर्म शास्त्र की आखिरी किताब जो मसला तनासुख और आखिरी मुबारकबादी से मुताल्लिक है। अहले-इस्लाम की मशहूर-ओ-मारूफ़ किताबें जो मौत और सज़ा व जज़ा से भी मुताल्लिक हैं हता कि निरवान के मुताल्लिक बुध मज़हब के आलिमों के ख्यालात से भी आश्कार होती हैं।

अबदी ज़िंदगी के लिए अक्वाम-ए-आलम की ख्वाहिश मसीह और फ़कत मसीह ही में पूरी होती है इसलिए कि वो अपनी मौत और अपनी क्रियामत के ज़रीये से ज़िंदगी और बका को दुनिया में लाया। उस ने हमें एक नादिर पैग़ाम दिया। हाँ ऐसा पैग़ाम जो बनीनौ इन्सान के मर्ज़ खुसूसी यानी गुनाह और उस के अवाकिब यानी रंज-वालम के ऐन हसबे-हाल है।

हर मुल्क व क्रोम के हकीकी तालिबान-ए-हक़ एक नादीदनी दुनिया को देखते हैं। खामोश आवाज़ें सुनते और ग़ैर महसूस हकीकतों को अपने कब्जे में लाना चाहते हैं। इसलिए वो इस मसीही पैग़ाम की तरफ़ कभी राग़िब नहीं होंगे जो आइन्दा जहान के हालात से मुताल्लिक ना हो। मसीह ने लाज़र की कब्र के पास क्रियामत की खुशख़बरी दी **"क्रियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ जो मुझ पर ईमान लाता है गो वह मर जाये तो भी ज़िंदा रहेगा और जो कोई ज़िंदा है और मुझ पर ईमान लाता है वो अबद तक कभी नहीं मरेगा।"**

यही पौलुस की मुनादी की जान थी। वो मसीह और उसके ज़िंदा होने की मुनादी करता था। और किसी और खुशख़बरी से वाकिफ़ ना था। "अब ए भाईओ मैं तुम्हें वही खुशख़बरी जताए देता हूँ जो पहले दे चुका हूँ जिसे तुमने कबूल भी कर लिया था। और जिस पर कायम भी हो। इसी के वसीले से तुमको नजात भी मिलती है। बशर्ते के वो खुशख़बरी जो मैंने तुम्हें दी थी याद रखते

हो। वर्ना तुम्हारा ईमान लाना बेफ़ाइदा हुआ। चुनांचे मैंने सबसे पहले तुमको वही बात पहुंचा दी जो मुझे पहुंची थी कि मसीह किताब-ए-मुक़द्दस के बमूजब हमारे गुनाहों के लिए मुआ और दफ़न हुआ और तीसरे दिन किताब-ए-मुक़द्दस के बमूजब जी उठा.....और अगर मसीह नहीं जी उठा तो हमारी मुनादी भी बेफ़ाइदा और तुम्हारा ईमान भी बेफ़ाइदा। बल्कि हम खुदा के झूटे गवाह ठहरे। क्योंकि हमने खुदा की बाबत ये गवाही दी कि उसने मसीह को जिला दिया। हालाँकि नहीं जिलाया। अगर बिलफ़र्ज़ मुर्दे नहीं जी उठते" (1 कुरन्थियो 15:1-4, व 14,15)

मसीह मौत पर ग़ालिब आया। वो क़ब्र के ख़ौफ़ को दूर करता है। उसने इंजील में ज़िंदगी और बक्रा का दर्स हमें दिया। अगर फ़क़त इसी ज़िंदगी ही में मसीह हमारी उम्मीद है तो हमारा पैग़ाम और हम खुद भी निहायत बदनसीब हैं। लेकिन नहीं हम तो मौत और गुनाह पर ग़ालिब आने वाले और जलाल के अबदी बादशाह के सफ़ीर और एलची हैं। हमारी इंजील फ़क़त इसी ज़िंदगी से मुताल्लिक नहीं बल्कि इसका ताल्लुक़ अबदीयत से है और इसी लिए इसकी क़द्रो कीमत भी बे-अंदाज़ा है हमारी तमाम मसीही तालीम गा हैं। हमारा कुल नज़म व मनक़। हमारी मसीही तदाबीर और तजावीज़ सब के सब हुसूल अंजाम के ज़राए हैं ये दरहकीक़त मदरिज व मनाज़िल हैं जो हमें उस घर तक पहुंचाते हैं जो हाथों से नहीं बनाया गया बल्कि जो आस्मान पर ग़ैर-फ़ानी मुक़ाम और जाये दवाम है।

मआशरी ख़िदमत भी अपना ज़ोरावर दर्जा रखती है क्योंकि मसीह शिक़स्ता-दिलों को शिफ़ा देने और क़ैदीयों को रिहाई बख़शने आया। गोहम इंजील के अख़लाकी उसूलों और उन के ज़बरदस्त मुतालिबात को हरगिज़ नज़रअंदाज नहीं कर सकते लेकिन मुर्दों में से जी उठने की खुशख़बरी से बढ़कर और कोई पैग़ाम दिलक़श और दिलफ़रेब नहीं हो सकता।

बूलशोकों के ख़याल के मुताबिक़ इंजील मुफ़लिसों और बेक़सों के लिए कोई ख़्वाब-आवर शै नहीं जो दौलतमंद और मुतमव्विल अशख़ास उन्हें जबरन पिला देते हैं। बल्कि इंजील उस हकीक़त का ऐलान करती है जो चीज़ें हम देखते हैं वो फ़ानी हैं। और उन-देखी अश्या ग़ैर-फ़ानी हैं। अब इस इन्साफ़ से ख़ाली दुनिया में शायद हमें मसीह के दुखों की शराक़त में शरीक़ होना पड़े। लेकिन उस पर ईमान लाने के सबब हम मुर्दों में से जी उठने की नौबत तक पहुंच जाते हैं। "वो अपनी उस कुव्वत की तासीर के मुवाफ़िक़ जिससे सब चीज़ें अपने ताबे कर सकता है। हमारी पस्त



हाली के बदन की शकल बदल कर अपने जलाल के बदन की सूरत पर बनाएगा" (फिलिप्पियों 2: 21)

वो गैर-फ़ानी खूबियां जो उनमें छिपी होती हैं जो मसीह की मौत और उसकी क्रियामत पर ईमान लाते हैं रसूलों, कलीसिया के मुक़द्दसों और शहीदों की खुशी और उनकी रूह की फ़र्हत का बाईस थीं। इसलिए कि वो दुनिया को हकीर व नाचीज़ जानते थे। उन्होंने दुनिया को मसीह के लिए जीत लिया और हर एक मुल्क में एक रुहानी बादशाहत की बिना डाली क्योंकि वो आस्मानी हुकूमत का हक़-ए-रईयत रखते थे। उन्होंने हर एक शहर में कलीसिया की बुनियाद रखी क्योंकि वो खुद परदेसी और मुसाफ़िर थे और उस पायदार शहर की तलाश में थे। "जिसका मेअमार और बनाने वाला खुदा है।"

मसीही इलाहिय्यात में अगर किसी सदाक़त पर इन दिनों निस्बतन ज़्यादा ज़ोर देने की ज़रूरत है तो वो क्रियामत-ए-मसीह का अक़ीदा है। अगर हम ज़िंदा मसीह और अबदी ज़िंदगी के इस पैग़ाम को गैर मसीही दुनिया में पहुंचा दें तो हम समझेंगे कि हमने फ़िल-हकीक़त अपनी इलाहिय्यात की रूह को पा लिया है और अब सही माअनों में राह तरक्की पर गामज़न हैं।

डाक्टर डीसमन (Dr. Dessiman) फ़रमाते हैं कि करीबन गुज़शता तीस साल से येसु की मौत और उनकी क्रियामत की बशारत मुख्तलिफ़ मसीही अक्वाम की इलाहिय्यात में एक दिलचस्प मबहस बनी रही और मैं उसे मज़हबी तहकीक़ात में एक निहायत मुफ़ीद और अहम क़दम तसव्वुर करता हूँ। आज-कल हमें मौत और क्रियामत की तालीम पर अज़हद ज़ोर देना चाहिए। और इसका ऐलान करना कलीसिया का फ़र्ज़ अक्वलीन होना चाहिए। हम पर फ़र्ज़ है कि हम अपनी तवज्जाह को इस हकीक़त पर मर्कूज़ करें कि खुदा की बादशाहत करीब है और कि खुदा अदालत व नजात के ज़रीये अपनी कामिल हुकूमत के साथ आने वाला है और हमें अपने आपको रुहानी तौर से उस की आमद के लिए तैयार करना चाहिए क्योंकि "खुदावंद आ रहा है।"

दरअसल यही हमारा मिशनरी पैग़ाम है यानी एक ऐसे शख्स की ज़िंदा जावेद बशारत देना जो इस दुनिया में आया, सलीब दिया गया, मुर्दों में से जी उठा, आस्मान पर चढ़ गया और वहां से फिर आने वाला है। बैत-लहम, कलवरी ख़ाली क़ब्र बल्कि उन बादलों से भी जिन्होंने उसे छिपा लिया। गैर फ़ानीयत और बक्रा का नूर दरखशां है।

हम इस अज़ीमुशान बैज़वी शकल के रकबा को जो दुनिया के लिए हमारे पैग़ाम व ईमान पर मुहीत है। जिस क़दर चाहें वसीअ तसव्वुर कर सकते हैं । लेकिन मसीह की मौत और क्रियामत और इन्सान के अज़ली व अबदी अंजाम से इसका ताल्लुक हमेशा यही इसके दो मर्कज़ी नुक्ते रहेंगे और यही क्रियामत की खुशखबरी है।

---

## 1

उस ने ये कुछ किया हमारे लिए  
क्या उसे सज्दा भी करेंगे ना हम  
वो है तैयार करने को ये कुछ  
पस्त हिम्मत का दम् भरेंगे ना हम  
आओ उस के हुज़ूर सज्दा में  
करें हासिल सरवर सज्दा में  
अपनी तकलीफों का गिरां तरबार  
उस के क़दमों पे क्या धरेंगे ना हम

## 2

और इन आँखों से हमारी काश  
शुक्र का उस के नूर रोशन हो  
खुश हूँ ताइब हूँ और बह इत्मीनान  
तकिया उस पर दिली हमा-तन हो  
और हम अपनी ज़िंदगानी भर  
बल्कि बाद उसके जब ये हो आखिर  
हम्द के गीत गाने में हर वक़्त  
ना थकावट हो और ना उलझन हो

## 3

ज़िंदगी मौत रंज व ग़म में भी  
गुना की हालत अलम में भी  
हाँ मेरे वास्ते वो काफ़ी है  
है हमेशा हर एक दम में भी  
यही अक्वल है क्योंकि आखिर है  
यही आखिर और अक्वली तर है  
अक्वल हसत है मसीह भी  
है यही आखिर अदम में भी